श्री

भजनामृतसार।

जिसमें

परमोत्तम ज्ञान, भक्तिमार्गीय भजन, पद, विनय, प्रभाती, आरती, ध्वनि, जय, भोग, शयन, रामकृष्णहोली, रामकृष्णढाल, कीर्त्तन, वामनढारा, गौरी, दोहा, कवित्त, सवैया, छप्पय, छंद, इत्यादि, वर्णित है।

जिसको

श्रीमहाराज महंत भगवानदासजीने

सर्वसाधुवोंकेहितार्थरचा।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रगट किया

संवत् १९५९, सन् १९०२ ई०

श्रीः ।

प्रस्तावना.



श्रीमत्स्वस्त्यखिलाण्डकोटिभुवनाधीशस्यसेनापति
देवस्थानविचारचारणपटुः श्रीश्रीनिवासप्रभोः ॥
मुद्रादानविधीश्वरो हरिगुरोर्भक्तिप्रियो वेङ्कटो
वैराग्याधिपतिर्महंतभगवान्दासोऽचलेराजते ॥ १ ॥

स्वस्तिश्रीमदखिलाण्डकोटिब्रह्माण्डनायकश्रीसेनाधिपतिमुद्रा
धिकारी श्रीहरिगुरुभक्तिपरायणातिरुमलत्रयपतिवगैरह
देवस्थानविचारणकर्ताश्रीमहाराजश्रीमद्वैरागी
चक्रवर्तीश्रीवेङ्कटेशपदपद्मपरागलुब्धकपरम
यशस्वीतेजस्वीश्रीमहंतवर्यश्री १०८
भगवानदासजीप्रतिः—

दो०—महिमा श्रीमहाराजकी, कौन कहै विधिगाय ।
छायरही सारेजगत, सुयश कीर्ति बहुताय ॥

कवित्त ।

केतेराजकाजदेखेसुखनकेसाजदेखे, वीरनसमाजदेखेखरेखानपानमें ।
क्षेमराजकहैंबहुदानिनकेदानदेखे, मानिनकेमानदेखेवेदऔरपुरानमें ॥
सुदरसुचालदेखेबडेतपवान देखे, गुणवान देखे जोन पूरेपूरेज्ञानमें ।
येतेसब देखेपैअदेखेहैंविचारकर, आपकेदरशसमसुख ना जहानमें ॥

दो०—कलिविच सतयुग धर्म्म जहँ, आश्रम विरति विराग ।
वेङ्कटेशपद दर्शनित, क्षण क्षण नव अनुराग ॥

कवित्त ।

कमलउछाहजैसेभानुकेउयोतहोत,कुमुदउछाहचन्द्रचन्द्रिकापरशते।
भौंरनउछाहजैसेआगमवसंतजानि, भयेहैउछाहमोरबरपाबरपते ॥
हंसनउछाहजैसेमानसरबीचहोत, साधुनउछाहइच्छाआवतअरशते।
सबकोउछाहहोतयहिविधिक्षेमराज,हमरोउछाहकिन्तुआपकेदरशते।

दो०—कृपा रावरी पायकर, पुस्तक सुरचि बनाय ।
शीघ्रछापि प्रेषित करी, चरण शरण लवलाय ॥
आदर याको दीजिये, शुचि सेवक मोहिं जानि ।
भूल चूक जो छपत हो, सो उरने नाहिं मानि ॥
अवधान्तर्गत बदरका, पण्डित कृष्णविहारि ।
तिनते बहु शुधवायकर, जहँ तहँ गाथ सुधारि ॥
कमलनको सूरज मिल्यो, भौंरन मिल्यो वसंत ।
साधुन यह पुस्तक मिल्यो, जयजय श्रीभगवंत ॥
साधू संत महत ऋषि, मुनि द्विज बहु गृहवान ।
सर्व जगतको भई यह, भजनामृत सुखखान ॥
ज्ञानिन ज्ञान विशेष यहि, ध्यानिन ध्यान महान ।
हरि भक्तन भक्ती भरी, गायक बहुविधि गान ॥
एकवार यह नित पढे, अथवा सुने जो कोय ।
या भांति राखे एक घर, यश धन भागी होय ॥

सम्पूर्ण हरिभक्त संत महंतोंसे विनय है कि, यह परमोत्तम "भजनामृत" पुस्तक उक्त श्रीमहंत भगवानदासजीने निज पुस्तकालयसे सर्व साधु महात्माओंके कल्याणार्थ मुद्रित कराई इसमें परम मनोहर ललित भक्तिमार्गी भजन तुलसीदासादिके बनाये नित्य नैमित्तिक गान पाठनार्थ लिखे गये हैं अद्यावधि पर्यंत ऐसा सर्वोपयोगी अनुपम भजनका गुटका नहीं छपा इसमें यथाक्रम राग बिलावल, रागसारंग, राग आरती, राग कल्याण, राग गुर्जरी, पद विनय, मंगल, जिवनार, जय, गौरी, आरती, ध्वनि, शयन, रामजन्म, कृष्णजन्म, रामहोरी, कृष्णहोरी, प्रह्लादहोरी, शेषाचलहोरी, रामडोल, कृष्णडोल, कीर्त्तन, छप्पय, दोहा, सोरठा, कवित्त, सवैया, इत्यादिक सम्पूर्ण अंगते सुशोभित हैं, और अबकीवार पदभी विशेष बढाये गये हैं जो आप लोगोंके दृष्टि गोचर हैं।

आपकाकृपाकांक्षी–खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्ष–
मुंबई.



श्रीः ।

भजनामृतस्य विषयानुक्रमणिका ।

प्रभाती ।

पद विनय ।

अथ प्रभाती

अथ मंगल ।

अथ जिवनार ।

अथ ध्वनिपंगतकी ।

मंगल संध्या ।

आरतीके दोहा ।

आरतीमंगलकी ।

आरती बुधकी ।

आरतीबृहस्पतिकी ।

आरतीशुक्रवारकी ।

आरतीशनिवारकी ।

आरतीरविवारकी ।

अथ व्यारू ।

इत्यनुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीवैकुण्ठविहारिणे नमः ॥



अथ भजनामृत

तथा भक्तिप्रकाश.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

प्रभाती ।

प्रात समै रघुवीर वदन छबि चितै चतुर चित मेरे ॥ होहिं विवेक विलोचन निर्मल सफल सुशीतलतेरे ॥ भाल विशाल विकट भ्रुकुटी बिच तिलक रेख रुचि राजे ॥ मनो मदन तम तकि मरकत धनु युगल कनक शर साजे ॥ १ ॥ विलुलित ललित कपोलन पर कच मेचक कुटिल सुहाये ॥ जनु विधु मुँह वनरुह विलोकि अलि विपुल सुकौतुक आये ॥ २ ॥ चारु पलक लोचन युग तारिक श्याम अरुण शित कोये ॥ मनो अलिनलिन कोशहुँ बंधुक सुमन सेज साजि सोये ॥ ३ ॥ शोभित श्रवण कनक कल कुंडल लंबित वी भुजमूले ॥ मनो केकि तकि गहन चहत युग उरग इंदु प्रतिकूले ॥ ४ ॥

अधर अरुण तर दशन पांति वर मधुर मनोहर हासा ॥ मनो
सोन सरसिजमे कुलिशन तडित सहित कृतवासा ॥ ५ ॥
चारु चिबुक शुक तुंड विनिंदक सुभग सु उन्नत नासा ॥
तुलसिदास छवि धाम राम मुख सुखद शमन भव त्रासा ॥
॥ ६ ॥ १ ॥ इति प्रभाती ।

पद–विनय.

गाइये गणपति जगवंदन ॥ शंकरसुवन भवानीनंदन ॥
सिद्धिसदन गजवदन विनायक ॥ कृपासिंधु सुंदर सबलायक॥
मोदक प्रिय मुद मंगल दाता ॥ विद्यावारिधि बुद्धिविधाता ॥
मांगत तुलसिदास कर जोरे ॥ बसहि राम सिय मानस मोरे ॥
॥ १ ॥ दीनदयालु दिवाकर देवा ॥ करै मुनि मनुज सुरासुर
सेवा ॥ हिम तम करि केहरि करमाली ॥ दहन दोष दुख दु-
रितरु जाली ॥ कोक कोकनद लोक प्रकासी ॥ तेज प्रताप
रूप रस रासी ॥ सारथि पंगु दिव्य रथ गामी ॥ हरि शंकर
विधि मूरति स्वामी ॥ वेद पुराण विदित यशजागै ॥ तुलसी
रामभक्ति वर मांगै ॥ २ ॥ को याचिये शंभु तजि आन ॥
दीनदयालु भक्त आरत हर सब प्रकार समरथ भगवान ॥
कालकूटज्वर जरत सुरासुर निज प्रणलागि कियो विष पान॥
दारुण दनुज जगत दुख दायक जाऱ्यो त्रिपुर एकही बान ॥
जो गति अगम महामुनि दुर्लभ कहतसंत श्रुति सकल पुरान ॥
सोइ गति मरणकाल अपने पुर देत सदाशिव सबहि समान ॥

सेवत सुलभ उदार कलपतरु पारवतीपति सहज सुजान ॥
देहु रामपद नेह कामरिपु तुलसिदास कह कृपानिधान ॥ ३ ॥
दानी कहुँ शंकरसे नाहीं॥दीनदयालु दिवोई भावै याचक सदा
सोहाहीं ॥ मारिकै मारु थप्यो जगजाकी प्रथम रेखभटमाहीं ॥
ता ठाकुर को रीझि निवाजिवो कह्यो क्यो परत मोहि पाहीं ॥
योग कोटि करि जो गति हरिसो मुनि मांगत सकुचाहीं ॥
वेद विदित तेहि पद पुरारिपुर कीट पतंग समाहीं ॥ ईश
उदार उमापति परिहरि अंत जे याचन जाहीं ॥ तुलसिदास ते
मूढ मांगने कबहुँ न पेट अघाहीं ॥ ४ ॥ माँगियै गिरिजापति
कासी ॥ जासु भवन अणिमादिक दासी ॥ अववर दानि द्रवत
पुनि थेरे ॥ सकत न दीन देखि कर जोरे ॥ सुख संपति
मति सुमति सोहाई ॥ सकल लाभ शंकर सेवकाई ॥ भये जे
शरण आरतिके लीन्हे ॥ निरखि निहाल निमिष महँ कीन्हे ॥
तुलसीदास याचक यश गावै ॥ विमल भक्ति रघुवर
की पावै ॥ ५ ॥ कस न दीनपर द्रवहु उमावर ॥ दारुण
विपति हरण करुणाकर ॥ वेद पुराण कहत उदारहर ॥ हमरि
वेरका भयउ कृपणतर ॥ कौनभक्ति कीन्ही गुणनिधि द्विज॥
हैप्रसन्न दीन्हेहु शिव पद निज ॥ जो गति अगम महामुनि
गावहि ॥ तव पुर कीट पतंगो पावहि ॥ देहु कामरिपु राम
चरण रति ॥ तुलसिदास प्रभु हरहु भेद मति ॥ ६ ॥ देव
काल अतिकाल कलिकाल व्यालादि खग त्रिपुर मर्दन भीम
कर्म भारी ॥ सकल लोकांत कल्पांत शूलाग्रकृत दिग्गज

व्यक्त गुण निर्विकारी ॥ ७ ॥ देव ताप संताप घनघोर संसृति दीन भ्रमत जग योनि नहिं कोपि त्राता ॥ पाहि भैरो रूप रामरूपि रुद्र बंधु गुरु जनक जननी विधाता ॥ ८ ॥ देव यश गुण गण गणत विमल गति शारदा निगम नारद प्रमुख ब्रह्मचारी ॥ शेष सर्वेश आसीन आनंद घन प्रणत तुलसी दास त्रासहारी ॥ ९ ॥ सदा शंकरं शंप्रदं सच्चिदानंदनं शैल कन्यावरं परमरम्यं ॥ काममदमोचनं तामरस लोचनं वामदेवं भजे भावगम्यं ॥ १ ॥ देव कंबु कुंदेंदु कर्पूरगौरं शिवं सुंदरं सच्चिदानंदकंदं ॥ सिद्धसनकादियोगींद्रवृंदारकाविष्णुविधि वंदितचरणारविंदम् ॥ २ ॥ देवब्रह्मकुलवल्लभं सुलभमतिदुर्लभं विकटवेपं विभुं वेदपारं ॥ नौमि करुणाकरं गरलगंगाधरं निर्मलं निर्गुणं निर्विकारं ॥ ३ ॥ देवलोकनाथं विभुं शोकनि र्मूलनं शूलिनं मोहतम भूरिभानुं ॥ कालकालं कलातीतमज रंहरं कठिन कलिकाल काननकृशानुं ॥ ४ ॥ देव तज्ञ मज्ञानपाथोधिघटसंभवं सर्वगं सर्वसौभाग्यमूलं ॥प्रचुरभवभंजनं प्रणत जनरंजनं दासतुलसी शरणसानुकूलं ॥ ५ ॥ १० ॥

रागसारंग ।

जाके गति है हनूमानकी ॥ ताकी पैज पूजि आई यह रेखा कुलिश पषानकी ॥ अघटित घटन सुघट विघटनि असि विरदावलि नहि आनकी ॥ सुमिरत संकट शोच विमोचन मूरति मोद निधानकी ॥ तापर सानुकूल

गिरिजा हर लपण राम अरु जानकी ॥ तुलसी कपिकी कृपा विलोकनि खानि सकल कल्यानकी ॥ ११ ॥ ताकि है तमकि ताकी ओरको ॥ जाके है सब भांति भरोसो कपि केशरी किशोरको ॥ जनरंजन अरि गण गंजन मुख भंजन खलवर जोरको ॥ वेद पुराण प्रगट पुरुपारथ सकल सुभट शिरमौरको ॥ उथपे थपन थपे उथपनकरि विबुधवृंद वंदी छोरको ॥ जलधि लंघि दहि लंक प्रबल दल दलन निशाचर घोरको ॥ जाको बाल विनोद समुझि जिय डरत दिवाकर मोरको ॥ जाकी चिबुक चोट चूरण किधो रद मद कुलिश कठोरको ॥ लोकपाल अनुकूल विलोक्यो चहत विलोचन कोरको ॥ सदा अभय जय मय मंगलमय जो सेवक रणछोरको ॥ भक्ति कामतरु नाम राम परिपूरण चंद चकोरको ॥ तुलसी फल चारिउ करतल यश गावत गई वहोरको ॥ १२ ॥ श्रीरामचंद्र कृपालु भजु मन हरण भवभय दारुणं ॥ नवकंजलोचन कंज मुख कर कंजपद कंजारुणं ॥ कंदर्प अगणित अमित छवि नवनील नीरदसुंदरं ॥ पट पीत मानहु तडित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं॥शिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंग विभूपनं॥ आजान भुज शर चाप धर संग्राम जित खरदूपनं ॥ इति वदत तुलसी दास शंकर शेप मुनि मन रंजनं ॥ मम हृदय कंजनिवास करु कामादि खल दल गंजनं ॥ १३ ॥

राम जपु राम जपु राम जपु बावरे ॥ घोर भव नीर निधि नाम निज नावरे ॥ टेक ॥ एकई साधन सब निधि सिधि

साधिरे ॥ ग्रसे कलि रोग योग संयम समाधिरे ॥ १ ॥ भलो जो है पोच जो है दाहिने जो वामरे ॥ रामनामही सो अंत सवही को कामरे ॥ २ ॥ जग नभ वाटिकारही है फलि फूलरे॥ धुवाँ कैसो धौरहर देखि तू न भूलिरे ॥ ३ ॥ राम नाम छाँडि जो भरोसो करै औररे ॥ तुलसी परोसौ त्यागि माँगै कूर कौररे ॥ ४ ॥ १४ ॥

राम नाम जपु जिय सदा सानुरागरे ॥ कलिन विराग योग जप तपु त्यागरे ॥ टेक ॥ राम नाम सुमिरन सब विधि को साजुरे ॥ रामको विसारिवो निषेध शिरताजुरे ॥ १ ॥ राम नाम महामणिफणिजगजालरे ॥ मणि लियेफणिजिये व्याकुल विहालरे ॥ २ ॥ राम नाम कामतरु देत फल चारिरे ॥ कहत पुराण वेद पंडित पुरारिरे ॥ ३ ॥ राम नाम प्रेम परमारथको साररे ॥ राम नाम तुलसी को जीवन आधाररे ॥ ॥ ४ ॥ १५ ॥

जागु जागु जागु जीव जै है जग यामिनी ॥ देह गेह नेह जानि जैसे घनदामिनी ॥ टेक ॥ सूतेसपनेही सहै संसृति संतापरो ॥ बूडो मृग वारि खायो जेवरीके सांपरे ॥ १ ॥ कहै वेद बुध तूतौ बूझि मनमाहिरे ॥ दोष दुख स्वपनेके जागेही पै जाहि रे ॥ २ ॥ तुलसी जागे ते जाइ तिहूं ताप ताइरे ॥ राम नाम शुचि रुचि सहज सुभाइरे ॥ ३ ॥ १६ ॥

जानकीशकी कृपा जगावती सुजान जीव जागि त्यागि मूढ तानुराग श्रीहरे ॥ करि विचार तजि विकार भजु उदार राम-

चंद्र भद्रसिंधु दीनबंधु वेदविदितरं ॥ टेक ॥ मोहमय कुहुनिशा विशाल काल विपुल सोयो खोयो सो अनूप रूप स्वप्न जूपरे॥ अब प्रभात प्रगट ज्ञान भानुके प्रकाश मान नाशरोग मोह द्वेप निविड तम टरे ॥ १७ ॥ भागे मद मान चोर भोर जानि यातुधान काम क्रोध लोभ क्षोभ निकर अपडरे ॥ देखत रघुवर प्रताप बीते संताप पाप ताप त्रिविध प्रेम आपु दूरिही करे ॥ १ ॥ श्रवण सुनि गिरा गँभीर जागे अति धीर बीर वर विराग तोप सकल संत आदरे ॥ तुलसीदास प्रभु कृपाल निरखि जीव जन विहाल भज्यो भव जाल परम मंगलाचरे ॥ २ ॥ १८ ॥

रागबिलावल ।

जोपै कृपा रघुपति कृपालुकी वैर औरके कहासरै ॥ होइ न बाँको बार भक्तको जो कोइ कोटि उपाय करै ॥ टेक ॥ तकै नीच जो मीचसाधकी सो पाँवर तेहि मीच मरै ॥ वेद विदित प्रहलाद कथा सुनि कोन भक्ति पथ पांवधरै ॥ १ ॥ गज उधारि हरि थप्यो विभीपण ध्रुव अविचल कवहूँ नटरै ॥ अंबरीपकी शाप सुरति करि अजहुँ महामुनि ग्लानिगरै ॥ २॥ सोन कहा जो कियो सुयोधन अबुध आपने मान जरै ॥ प्रभुप्रसाद सौभाग्य विजय यश पांडवन्हिवरी आइवरै ॥ ३ ॥ जोइ जोइ कूप खनैगो परकहँ सो शठ फिरि तेहि कूप परै ॥ स्वप नेहु सुख न संत द्रोही कहँ सुरतरु सोइ विप फरनिफरै ॥४

है काके द्वै शीश ईशके जो हठि जनकी सीवचरै ॥ तुलसीदास रघुवीर बाहुबल सदा निडर काहू न डरै ॥ ५ ॥ १९ ॥

तौतू पछितै है मन मींजि हाथ ॥ भयो सुगम तोकौ अगम अमरतनु समुझि धौं कत खोवत अकाथ ॥ टेक ॥ सुखसाधन हरि विमुख वृथा जैसे श्रमफल घृत हित मथे पाथ ॥ यह विचारि तजि कुपथ कुसंगति चल सुपंथ मिलु भले साथ ॥ ॥ १ ॥देखुरामसेवक सुनु कीरति रटहि नाम करि गान गाथ॥ हृदय आन धनु वान पानिप्रभु लसै मुनि न पट कटि कसे भाथ ॥ २॥ तुलसिदास परिहरि प्रपंच सब नाउ रामपद कमल माथ ॥ जनि डरपहि तोसे अनेक खल अपनाये है जानकीनाथ ॥ ३ ॥ २० ॥

मन माधोका नेकु निहारहि ॥ सुनि शठ सदा रंकके धन ज्यो छन छन प्रभुहि सम्हारहि ॥ टेक ॥ शोभा शील ज्ञान गुण मंदिर सुंदर परम उदारहि ॥ रंजन संत अखिल अघगंजन भंजन विषय विकारहि ॥ १ ॥ जो विन योग यज्ञ व्रत संयम गयो चहै भवपारहि ॥ तौ जनि तुलसिदास निशि वासर हरिपद कमल विसारहि ॥ २ ॥ २१ ॥

यहै कह्यौ सुनु वेद चहूं श्रीरघुवीर चरणचिंतन तजि नाहीं ठोर कहूं ॥ टेक ॥ जाके चरण विरंचि सेई सिद्धि पाई शंकर हूं ॥ शुक सनकादि मुक्त विचरत तेउ भजन करत अजहूं ॥ यद्यपि परम चपल श्रीसंतत थिर न रहत कतहूं ॥

हरि पदपंकज पाइ अचलभइ कर्म वचन मनहूं ॥ करुणासिंधु भक्त चिंतामणि शोभा सेवतहूं ॥ और सकल सुर असुर ईश सब खाये उरग छहूं ॥ सुरुचि कह्यो सोइ सत्य तात अति पुरुष वचन जबहूं ॥ तुलसिदास रघुबीर विमुख नहिं मिटै विपति कबहूं ॥ २२ ॥

सुनु मन मूढ सिखावन मेरो ॥ हरि पद विमुख कहू न लह्यो सुख शठ इह समुझि सबेरो ॥ टेक ॥ बिछुरे रवि शशि मन नयननते पावत दुख बहुतेरो ॥ भ्रमत श्रमित निशि दिवस गगन महँ तहँ रिपु राहु बडेरो ॥ १ ॥ यद्यपि अति पुनीत सुर सरिता तिहुं पुर सुयशघनेरो ॥ तजे चरण अजहूं न मिटत नित बहनो ताहू केरो ॥ २ ॥ मिटै न विपति भजे विन रघुपति श्रुति संदेह निबेरो ॥ तुलसिदास सब आश छांडिकै होहि रामको चेरो ॥ ३ ॥ २३ ॥

कबहुं तौ मन विश्राम न मान्यो ॥ निशि दिन भ्रमत बिसारि सहज सुख जहँ तहँ इन्द्रिन तान्यो ॥ टेक ॥ यदपि विषय सँग सह्यो दुसह दुख विषम जाल अरुझान्यो ॥तदपि न तजत मूढ ममता वश जानतहू नहिं जान्यो १ जनम अनेक किये नानाविधि कर्म कीच चितसान्यो ॥ होइ न विमल विवेक नीर विन वेद पुरान बखान्यो ॥ २॥ निज हित नाथ पिता गुरु हरि सो हरपि हृदय नहिं आन्यो ॥ तुलसिदास कब तृपा जाइ सर खनतहि जनम सिरान्यो ॥ ३ ॥ २४ ॥

ऐसी मूढता या मनकी ॥ परिहरि राम भक्ति सुर सरिता आश करत ओस कनकी ॥ टेक ॥ धूम समूह निरखि चातक ज्यो तृषित जानि मति घनकी ॥ नहिं तहँ शीतलता न पानि पुनि हानि होति लोचनकी ॥१॥ ज्यो गज कांच विलोकि नैन शठ छांह आपने तनकी ॥ टूटत अति आतुर अहार वश क्षति विसारि आननकी ॥ २ ॥ कहँलगि कहूं कुचालि कृपानिधि जानतहो गति जनकी ॥ तुलसिदास प्रभु हरहु दुसह दुख करहु लाज निज पनकी ॥ ३ ॥ २५ ॥

नाचतही निशि द्योस मर्‍यो ॥ तबही ते न भयो हरि थिर चित जबते जिव तुम नामधर्‍यो ॥ टेक ॥ भव वासना विविध कंचुकि भूषण लोभादि भर्‍यो ॥ चर अरु अचर गगन जल थल मे को नहिं स्वांग कर्‍यो ॥ देव दनुज मुनि नाग मनुज नहि याचत कोउ उबर्‍यो ॥ मेरो दुसह दरिद्र दोष दुख काहू तो न हर्‍यो ॥ थके नैन पद पाणि सुमति बल संग सकल बिछुर्‍यो ॥ अब रघुनाथ शरण आयो जन भव भय विकल डर्‍यो ॥ जेहि गुणते वश होहु रीझिकरि मोहिसो सब विसर्‍यो ॥ तुलसिदास निज भवन द्वार पर दीजे रहन पर्‍यो ॥ २६ ॥

प्रभु तुम बहुत अनुग्रह कीन्हो ॥ साधन धाम विबुध दुर्लभ तनु मोहि कृपा करि दीन्हो ॥ टेक ॥ कोटिन मुख कहि जात न प्रभुके एक एक उपकार ॥ तदपि नाथ औरहु कछु मॉगहुँ दीजै परम उदार ॥ १ ॥ विषय वारि मन मीन भिन्न नहि

होतु कवहुँ पल एक ॥ तेहिते सहौ विपति अति दारुण जनकी योनि अनेक ॥ २ ॥ कृपा डोरि वनसीपद अंकुश परम प्रेम मृदु चारु॥ यहि विधि वेधि हरो मन मेरो कौतुक नाथतुम्हारु॥ ॥ ३ ॥ है श्रुति विदित उपाय विविधविधि केहि केहि दीन निहोरे॥ तुलसिदास यहि जीव मोह रजु जेहि बांध्यो सो छोरे ॥ ४ ॥ २७ ॥

यह विनती रघुवीर गोसांई ॥ और आश विश्वास भरोसो हरो जियकी जडताई ॥ टेक ॥ चहूं न सुगति और संपति कछु ऋधि सिधि विपुल वडाई ॥ हेतु रहित अनुराग नाथपद वढै अनुदिन अधिकाई ॥ १ ॥ कुटिल कर्मलै मोहि जाउँ जहँ तहँ अपनी वरिआई ॥ तहँ तहँ जनि क्षणछोहछांडिये कमठ अंडकी नाई ॥२ ॥ है जगमे जहँ लगि यातनुकी प्रीति प्रतीति सगाई ॥ ते सव तुलसीदास प्रभुसो मेरी होहि सिमिटि यकठाई ॥ ३ ॥ २८ ॥

जानकीजीवन की वलि जैहौ ॥ चित कहै सीय रामपद परिहरि अव न कहूं चलि जैहौ ॥ टेक ॥ उपजीउर प्रतीति स्वप्नेहु सुख प्रभु पद विमुख न पैहौं ॥ मन समेत या तनुके वासिन यहै सिखावनदैहौ ॥ १ ॥ श्रवणन और कथा नहिं सुनिहौं रसना और न गैहौ ॥ रोकिहौ नैन विलोकत औरन शीश ईश ही नैहौ ॥ २ ॥ नातौ नेह नाथ को करि सव नाते नेह वहै हौ ॥ यह छरु भारु ताहि तुलसी जग जाको दास कहैहौ ॥ ३ ॥ २९ ॥

अबलौं नशानी अब ना नशैहौं ॥ रामकृपा भव निशा सिरानी जागेउ फिरि न डसैहौं ॥ टेक ॥ पायो नाम चारु चिंतामणि उरकरते न खसैहौं ॥ श्यामरूप शुचि रुचिर कसौटी चित कंचनहि कसैहौं ॥ १ ॥ परवश जानि हँस्यो इन इंद्रिन निज वशह्वै न हँसैहौं ॥ मन मधुपहि प्रण करि तुलसी रघुपति पद कमल बसैहौं ॥ २ ॥ ३० ॥

केशव कहि न जाइ का कहिये ॥ देखत तुव रचना विचित्र हरि समुझि मनहि मन रहिये ॥ टेक ॥ सुन्न भीति पर चित्र रंग नहिं तनु विनु लिखाचितेरे ॥ धोये मिटै न मरिय भीति दुख पाइय यहि तनु हेरे ॥ १ ॥ रवि कर नीर-बसै अति दारुण मकर रूप तेहि माहि ॥ बदन हीन तेहि ग्रसै चराचर पान करन जलजाहिं ॥ २ ॥ कोउ कहै सत्य झूठ कहै कोऊ युगल प्रबल करिमाने ॥ तुलसिदास परिहरै तीनि भ्रम सो आपहि पहिचाने ॥ ३ ॥ ३१ ॥

केशव कारण कौन गोसाई ॥ जेहि अपराध असाध जानि मोहि तजेउ अज्ञकी नाई ॥ टेक ॥ परम पुनीत संत कोमल चित तिनहिं तुमहि बनिआई ॥ तौ कत विप्र व्याध गणिकहि तार्‍यो कछु रही सगाई ॥ १ ॥ काल कर्म गति अगति जीवकी सब हरि हाथ तुम्हारे ॥ सो कछु करहु हरहु ममता मम फिरउ न तुमहिं विसारे ॥ २ ॥ जो तुम तजहु भजो न आन प्रभु यह प्रमाण प्रण मोरे ॥ मन वच कर्म नरक सुरपुर जहँ तहँ रघुवीर

निहोरे ॥ ३ ॥ यद्यपि नाथ उचित न होत अस प्रभु सों करौं ढिठाई ॥ तुलसिदास सीदत निशि वासर देखत तुमरि निठुराई ॥ ४ ॥ २२ ॥

माधव अब न द्रवहु केहि लेखे ॥ प्रणतपाल प्रण तोर मोर मन जिऔ कमलपद देखे ॥ टेक ॥ जबलगि मै न दीनदयालुते मैन दास तुम स्वामी ॥ तबलगि जे दुख सहेउँ कहेउँ नाहिं यद्यपि अंतर्यामी ॥ १ ॥ तुम उदार मै कृपिण पतित मै तुम पुनीत श्रुति गावै ॥ बहुत नात रघुनाथ तोहि मोहिं अब न तजे बनि आवै ॥ २ ॥ जनक जननि गुरु बंधु सुहृद पति सब प्रकार हितकारी ॥ द्वैत रूप तमकूप परौ नहि सो कछु जतन विचारी ॥ ३ ॥ सुनु अदभ्र करुणा मय लोचन मोचन भव भय भारी ॥ तुलसिदास प्रभु तव प्रकाशविनु संशय टरै न टारी ॥ ४ ॥ २३ ॥

माधव मोहि समान जग माहीं ॥ सब विधि हीन जो दीन मलिन अति लीन विषय कोउ नाही ॥ टेक ॥ तुम सम हेतु रहित कृपालु आरत हित ईश न त्यागी ॥ मै दुख शोक विकल कृपालु केहि कारण दया न लागी ॥ १ ॥ नाहिन कछु अवगुण तुम्हार अपराध मोर मै माना ॥ ज्ञान भवन तनु दियो नाथ सोइ पाइ नमै प्रभु जाना ॥ २ ॥ वेणु करिल श्रीखंड वसंतहि दूपण मृपा लगावै ॥ सार रहितहत भाग्य सुरभि पल्लव सो कहो किमि पावै ॥ ३ ॥ सब प्रकार मै कठि

न मृदुल हरि दृढ विचार जिय मोरे ॥ तुलसिदास प्रभु मोह शृंखला छूटै तुम्हरेइ छोरे ॥ ४ ॥ ३४ ॥

माधो मोहपाश क्यों टूटै ॥ बाहिर कोटि उपाय करिय अभ्यंतर ग्रंथि न छूटै ॥ टेक ॥ घृत पूरण कराह अंतर्गत शशि प्रतिबिंब दिखावै ॥ ईंधन अनल लगाइ कल्प शत औटत नाश न पावै ॥ १ ॥ तरु कोटर महँ बस विहंग तरु काटे मरै न जैसे ॥ साधन करिय विचार हीन मन शुद्ध होइ नहिं तैसे ॥ २ ॥ अंतर मलिन विषय मन अति तन पावन करिय हमारे ॥ मरै न उरग अनेक जतन वलमीकि विविध विधि मारे ॥ ३ ॥ तुलसिदास हरि गुरु करुणा विन विमल विवेक न होई ॥ विन विवेक संसार घोर निधि पार न पावै कोई ॥ ४ ॥ ३५ ॥

माधव असि तुम्हारि यह माया ॥ करि उपाय पचि मरिय तरिय नहि जब लगि करहू दाया ॥ टेक ॥ सुनिय गुनिय समुझिय समुझाइय दशा हृदय नहिं आवै ॥ जेहि अनुभव विनु मोह जनित दारुण भव विपति सतावै ॥ १ ॥ जेहिके भवन विमल चिंतामणि सो कत कांच बटोरै ॥ स्वप्ने परवश परे जागि देखत केहि जाइ निहोरै ॥ २ ॥ ब्रह्म पियूष मधुर शीतल जो पै मन सो रस पावै ॥ तौ कत मृग जल रूप विषय कारण निशि वासर धावै ॥ ३ ॥ ज्ञान भक्ति साधन अनेक सब सत्य झूठ कछु नाहीं ॥ तुलसिदास हरि कृपा मिटै भ्रम यह भरोस जिय माहीं ॥ ४ ॥ ३६ ॥

हे हरि कौन दोप तोहिं दीजै ॥ जेहि उपाय स्वप्नेहु दुर्लभ गति सोइ निशि वासर कीजै ॥ टेक॥ जानत अर्थ अनर्थ रूप तम कूप परत जेहि लागि ॥ तदपि न तजत श्वान अज खर ज्यों फिरत विपय अनुरागि ॥ १ ॥ भूत द्रोह कृत मोह वश्य हित आपन मैं न विचारा ॥ मद मत्सर अभिमान ज्ञान रिपु इनमहँ रहनि अपारा ॥ २ ॥ वेद पुराण सुनत समुझत रघुनाथ सकल जगव्यापी ॥ वेधत नहि श्रीखंड वेणु इव सार हीन मन पापी ॥ ३ ॥ मैं अपराध सिंधु करुणाकर जानत अंतर्यामी ॥ तुलसिदास भव व्याल ग्रसित तव शरण उरग अरिगामी ॥ ४ ॥ ३७ ॥

हे हरि कौन जतन सुख मानहु ॥ ज्यों गज दशन तथा मम करणी सब प्रकार तुम जानहु ॥ टेक ॥ जो कछु कहिय करिय भव सागर तरिय वच्छपद जैसे ॥ रहनि आन विधि करिय आन हरि पद सुख पाइय कैसे ॥ १ ॥ देखत चारु मयूर वचन शुभ बोल सुधा इव सानी ॥ सविप उरग आहार निठुर अस यह करणी वह वानी ॥ २ ॥ अखिल जीव वत्सल निर्मत्सर चरणकमल अनुरागी ॥ ते तव प्रिय रघुवीर धीर मति अतिशय निज परत्यागी ॥ ३ ॥ यद्यपि मम अवगुण अपार संसार योग रघुराया ॥ तुलसिदास निज गुण विचारि करुणानिधान करु दाया ॥ ४ ॥ ३८ ॥

हे हरि कौन जतन भ्रम भागै ॥ देखत सुनत विचारत

यह तनु निज स्वभाव नहि त्यागै ॥ टेक ॥ भक्ति ज्ञान वै
राग्य सकल साधन यहि लागि उपाई ॥ कोउ कछु कहे
देउ कछु आशिप यह वासना हृदयते न जाई ॥ १ ॥ जे-
हिनिशि सकल जीव सूतहि तुव कृपापात्र जन जागै ।
निज करणीविपरीत देखि मोहि समुझि महा भय लागै ॥ २॥
यद्यपि भग्न मनोरथ विधि वश सुख इच्छत दुःख आवै ॥
चित्रकार करहीन यथा स्वारथ विनु चित्र बनावै ॥ ३ ॥
हृषीकेश सुनि नाउँ जाउँ वलि अव भरोस जिय मोरे ॥
तुलसिदास इंद्रिय संभव दुःख हेरे वनै प्रभु तोरे ॥ ४ ॥३९॥

हे हरि कस न हरहु भ्रम भारी ॥ यद्यपि मृपा सत्य भाषै जव लगि नहि कृपा तुम्हारी ॥ टेक ॥ अर्थ अविद्या मान जानिये विनसंसृति नहिं जाई ॥ विन वांधे निज हठ शठ परवश परचो कीर की नाई ॥ १ ॥ स्वपने व्याधि विविध वाधा जनु मृत्यु उपस्थित आई ॥ वैद्य अनेक उपाइ करै जागे विन पीर न जाई ॥ २ ॥ श्रुति गुरु साधु स्मृतिसम्मत यह दृश्य सदा दुखदारी ॥ तेहि विन तजे भजे विन रघुपति विपति सकै को टारी ॥ ३ ॥ वहु उपाय संसार तरन कहँ विमल गिरा श्रुति गावै ॥ तुलसिदास मैं तोर गये विन जिय सुख कवहुँ न पावै ॥ ४ ॥ ४० ॥

हे हरि यह भ्रमकी अधिकाई ॥ देखत सुनत कहत समुझत संशय संदेह न जाई ॥ टेक ॥ जो जग मृपा ताप त्रय

अनुभव होइ कहो केहि लेपै ॥ कहि न जाइ मृग वारि सत्य भ्रमते दुख होइ विशेषै ॥ १ ॥ सुभगासन सोवत स्वप्ने वारिधि बूडत भय लागै ॥ कोटिहु नाव पार नहिं पावत जव लगि आप न जागै ॥२॥ अन विचार रमणीय सदा संसार भयंकर भारी ॥ सम संतोष दया विवेकते विवहारो सुखकारी ॥ ३ ॥ तुलसीदास यद्यपि सव विधि परपंच झूठ श्रुति गावै ॥ रघुपति भक्ति संतसंगति विन को भव त्रास नशावै ॥४॥४१॥

मै हरि साधन करै न जानी ॥ जस आमय भेपज न कीन तस दोप कौन वखानी ॥ टेक ॥ स्वपने नृप कहँ घटै विप्र वध विकल फिरै अघ लागे ॥ वाजिमेध शतकोटि करै नहिं शुद्ध होइ विनजागे ॥ १ ॥ भ्रममहँ सर्प विपुल भय दायक प्रकट होइ अविचारे ॥ वहु आयुध धरि बल अनेक करि हारहि मरै न मारे ॥ २ ॥ निज भ्रम ते रवि कर संभव सागर अति भय उपजावै ॥ अवगाहत वोहित नौका चढ़ि कवहुँ पार नहि पावै ॥ ३ ॥ तुलसीदास जग आप सहित जवलगि निर्मूल न जाई ॥ तवलगि कल्प कोटि उपाइ करि मरिय तरिय नहिं भाई ॥ ४ ॥ ४२ ॥

असकछु समुझि परत रघुराया ॥ विन तव कृपा दयालु दास हित मोह न छूटै माया ॥ टेक ॥ वाक्य ज्ञान अत्यंत निपुण भव पार न पावै कोई ॥ निशि गृह मध्य दीपकी वातन तम निवृत्त नहि होई ॥ १ ॥ जैसे कोइ यक दीन

दुखित अति अशनहीन दुख पावै ॥ चित्र कल्पतरु कामधेनु गृह लिखे न विपति नशावै ॥ २ ॥ षटरस बहुप्रकार भोजन कोउ दिन अरु रैनि बखानै ॥ बिन बोले संतोष जनित सुख खाइ सोई पै जानै ॥३॥ जबलगि नहिं निज हृदय प्रकाश अरु विषय आश मनमाहीं ॥ तुलसिदास तबलगि जग योनिन भ्रमत श्रमित सुख नाही ॥ ४ ॥ ४३ ॥

जानत प्रीति रीति रघुराई ॥ नाते सब हाते करि राखत राम सनेह सगाई ॥ टेक ॥ नेह निवाह देह तजि दशरथ कीरति अचल चलाई ॥ ऐसेहु पितुते अधिक गीधपर ममता गुणगरुआई ॥ १ ॥ तिय विरही सुग्रीव सखा लखि प्राणप्रिया बिसराई ॥ रणपर्चो बंधु विभीषणहीको शोच हृदय अधिकाई ॥ २ ॥ घर गुरु गृह प्रिय सदन सासरे जब जहँ भइ पहुनाई ॥ तब तहँ सब कहि शबरी के फलनकी रुचि माधुरी न पाई ॥ ३ ॥ सहज स्वरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुचि शिरनाई ॥ केवट मीत कहे सुख मानत वानर बंधु बड़ाई ॥ ४ ॥ प्रेम कनोडो राम सो प्रभु त्रिभुवन तिहुँकाल सुभाई ॥ तेरो ऋणिहो कह्यो कपी सो ऐसीको मानि है सेवकाई ॥ ५ ॥ तुलसीराम सनेह शील सुनि जो न भक्ति उरआई ॥ तौ तोहिं जनम जाइ जननी जड तनु तरुणता गमाई ॥ ६ ॥ ४४ ॥

एकै दानि शिरोमणि सांचो ॥ जेहि याचो सो याचकता वश फिरि बहु नाच न नाचो ॥ टेक ॥ सब स्वारथी असुर

सुर नर मुनि कोउ न देत विनुपाये ॥ कौशलपाल कृपालु कल्पतरु द्रवत सुकृत शिरनाये ॥ १ ॥ हरिहु और अवतार आपने राखी वेद बडाई ॥ लै चावर निधि दई सुदामहि यद्यपि बालमिताई ॥ २ ॥ कपि शवरी सुग्रीव विभीषणको नहिं कियो अयाची ॥ अब तुलसिहि दुख देत दयानिधि दारुण आश पिशाची ॥ ३ ॥ ४५ ॥

रागसोरठ ।

ऐसो को उदार जग माहीं ॥ विनु सेये जो द्रवै दीन पर-राम सरिस कोउ नाहीं ॥ टेक ॥ जो गति योग विराग यतन करि नहि पावत मुनि ज्ञानी ॥ सो गति देत गीध शवरी कहँ प्रभु न वहुत जिय जानी ॥ १ ॥ जो लंका दशशीश अर्पिकै रावण शिव पहँ लीन्ही ॥ सोइ संपदा विभीषण जनको सकुच सहित हरि दीन्ही ॥२॥ तुलसीदास सब भांति सकल सुख जो चाहै मन मेरो ॥ तौ भजिराम काम परिपूरण करिहै कृपानिधि तेरो ॥ ३ ॥ ४६ ॥

ऐसे राम दीनहितकारी ॥ अति कोमल करुणानिधान विन कारण परउपकारी ॥ टेक ॥ साधनहीन दीन निज अघ-वश शिला भई मुनिनारी ॥ गृहते गवनि परशि पद पावन घोर शापते तारी ॥ १ ॥ हिंसारत निषाद तामस नर पशु समान वनचारी ॥ भेट्यो हृदय लगाइ प्रेमवश नहिं कुल जाति विचारी ॥ २ ॥ यद्यपि द्रोह कियो सुरपति सुत कहि न जाइ अतिभारी ॥ सकल लोक अवलोकि शोक हत शरण गये

भयटारी ॥ ३ ॥ विहंग योनि आमिप अहार वश गीध कौन व्रतधारी ॥ जनक समान क्रिया कारि ताकी निज कर आप सँवारी ॥ ४ ॥ अधमजाति शवरी जोपित शठ लोक वेद ते न्यारी ॥ जानि दीन दे दरश कृपानिधि सो रघुनाथ उधारी ॥ ५ ॥ कपि सुग्रीव बंधु भय व्याकुल आयो शरणपुकारी ॥ सहि न सके जनको दारुण दुख हत्यो वालिसहिगारी ॥ ६ ॥ रिपुको अनुज विभीषण निशिचर कौन भजन अधिकारी ॥ शरण गये आगे ह्वै लीन्हो भेट्यो भुजा पसारी ॥ ७ ॥ अशुभ होइ जिनके सुमिरणते वानर रीछ विकारी ॥ वेद विदित पावन किये ते सब महिमा नाथ तुम्हारी ॥ ८ ॥ कहां लौ कहौ दीन अगणित जिनकी तुम विपति निवारी ॥ कलिमल ग्रसित दास तुलसीपर काहेते कृपा विसारी ॥ ९ ॥ ४७ ॥

नाहिन आवत आन भरोसो ॥ यहि कलिकाल सकल साधन तप है श्रम फलनि फरोसो ॥ टेक ॥ व्रत तीरथ उपवास दान मख जो जेहि रुचै करो सो ॥ पइहै पै जानिवो कर्म फल भरि भरि वेद परोसो ॥ १ ॥ आगम विधि जप यज्ञ करत नर सरत न काल खरोसो ॥ सुख सनेह न योग विधि साधन रोग वियोग धरोसो ॥ २ ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह मिलि ज्ञान विराग हरोसो ॥ विगरत मन संन्यास लेत जल नावत आम घरोसो ॥३॥ वहु मत सुनि वहु पंथ पुराणनि जहां तहां झगरोसो ॥ गुरु कह्यो राम भजन नीको मोहि राम राज

डगरोसो ॥ ४ ॥ तुलसी बिन परतीति प्रीति फिरि पचि पचि मरै मरोसो ॥ राम नाम बोहित भवसागर चाहिय तरन तरोसो ॥ ५ ॥ ४८॥

ऐसो सियारघुवीर भरोसो ॥ वारि न बोरि सकत प्रह्ला दहि पावक नाहिं जरोसो ॥ टेक॥ हरिणाकुश बहु भांति सतायो हठि हठि वैर परोसो ॥ मारा चहत दास नरहरि को आपहि दुष्ट मरोसो ॥ १ ॥ जारो लंक अंजनीनंदन देखत पुर सगरोसो ॥ जाके मध्य विभीषण को गृह राम कृपा उबरोसो॥ २ ॥ रावण सभा कठिन प्रण अंगद धरि पग हरि सुमिरोसो ॥ मेघनाद सम कोटिन योधा टारो न पाँव टरोसो ॥ ३ ॥ द्रौपदसुताको चीर दुशासन राजसमाज धरोसो ॥ खेचत खेचत भुज बल थाके नेक न अँग उघरोसो ॥ ४ ॥ महाभारत भरुहीके अंडा क्षोहणि दल बटरोसो ॥ रामनाम जब पक्षी टेरे घंटा टूट परोसो ॥ ५ ॥ मीराके मारनके कारण दीन्हो जहर खरोसो ॥ रामकृपाते अमृत होइ गयो हँसि हँसि पान करोसो ॥ ६ ॥ तुलसीदास विश्वास रामको जो करे नारि नरोसो॥ और विभव मै कहँलगि वरणौ जहँ यम राज डरोसो ॥ ७ ॥ ४९ ॥

जाके प्रिय न राम वैदेही ॥ तजिये ताहि कोटि वैरी सम यद्यपि परम सनेही ॥ टेक ॥ तज्यो पिता प्रहलाद विभीपण बंधु भरत महतारी ॥ बलि गुरु तजे नाह व्रजवनितन भय जग मंगलकारी ॥ १ ॥ नातो नेह ताहिसों कीजै सुहृद

सुसेव्य जहांलो ॥ अंजन कहा आंखि जेहि फूटै बहुतो कहो कहालो ॥ २ ॥ तुलसी सोइ आपनो सकलविधि पूज्य प्राण ते प्यारो ॥ जासँग बढै सनेह रामसो ये तौ मतो हमारो ॥ ३ ॥ ५० ॥

जोपै रहनि रामसो नाहीं ॥ ते नर खर कूकर शूकर सम वृथा जियत जगमाहीं ॥ टेक ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह भय भूख प्यास सवहीके ॥ मनुज देह सुर साध सराहत सोतो नेह सियपीके ॥ १ ॥ शूर सुजान सुपूत सुलक्षण गनियत गुण गरुवाई ॥ विन हरिभजन इंद्राइन फल सम मिटत नहीं करुवाई ॥ २ ॥ कीरति कुल करतूति भूति भलि शील स्वरूप सलोने ॥ तुलसीप्रभु अनुरागरहित जिमि सालन साग अलोने ॥ ३ ॥ ५१ ॥

मन पछितैहै अवसर बीते ॥ दुर्लभ देह पाइ हरि पद भजु करम वचन अरुहीते ॥ टेक ॥ सहसवाहु दशवदन आदि नृप वचे न काल वलीते ॥ हम हम करि धन धाम सवारे अंत चले उठि रीते ॥ १॥ सुत वनितादि जानि स्वारथ रत नकरु नेह सवहीते ॥ अंतहु तोहि तजहिगे पाँवर तू न तजै अवहीं ते ॥ २ ॥ अव नाथहि अनुरागजाग जड त्यागि दुराशा जीते ॥ बुझै न काम अग्नि तुलसी कहँ विपय भोग वहु धीते ॥ ३ ॥ ५२ ॥

काहेको फिरत मूढ मन धायो ॥ तजि हरि चरणसरोज सुधारस रविकर जल लयलायो ॥ टेक ॥ त्रियग देव नर

असुर अपग्जग योनि सकल भ्रमिआयो ॥ गृह वनिता सुत बंधु भये वहु मात पिता जिन जायो ॥१॥ जाते निरय निकाय निरंतर सो उन तोहि सिखायो ॥ तुवहित होइ कटै भव बंधन सो मगतौ न वतायो ॥ २ ॥ अजहुँ विपय कहँ यतन करत यद्यपि वहु विधि डहकायो ॥ पावक काम भोग घृतते शठ कैसे परत बुझायो ॥ ३ ॥ विपय हीन दुख मिले विपति अति सुख स्वपने नहिं पायो ॥ उभय प्रकार प्रेत पावक ज्यो धन दुखप्रद श्रुति गायो ॥ ४ ॥ क्षण क्षण क्षीण होत जीवन दुर्लभ तनु वृथा गमायो ॥ तुलसीदास हरि भजहि आश तजि काल उरग जग खायो ॥ ५ ॥ ५२ ॥

ऐसेहि जन्म समूह सिराने ॥ प्राणनाथ रघुनाथ स्वामि तजि सेवत चरण विराने ॥ टेक ॥ जे जड़ जीव कुटिल कायर खल केवल कलिमल साने ॥ विलखत वदन प्रशंसत तिनकहँ हरिते अधिक करि माने ॥१॥ सुखहित कोटि उपाय निरंतर करत न पॉइ पिराने ॥ सदा मलीन पंथके जल ज्यो कवहुँ न हृदय थिराने ॥ २ ॥ यह दीनता दूरि करिवेकहँ अमित यत्न उर आने ॥ तुलसी चित चिंता न मिटै विनचिंतामणि पहिचाने ॥ ३ ॥

जोपै जिय जानकी नाथ न जाने ॥ तौ सव कर्म धर्म श्रम दायक ऐसेइ कहत सयाने ॥ टेक ॥ जे सुर सिद्ध मुनीश योगि बुध वेद पुराण बखाने ॥ पूजा लेत देत पलटे सुख हानि लाभ अनुमाने ॥ १ ॥ काको नाम धोखेहू सुमिरत पातक

पुंज सिराने ॥ विप्र वधिक गज गीध कोटि खल कौनके पेट समाने ॥ २ ॥ मेरुसे दोष दूरि करि जनके रेणुसे गुण उर आने ॥ तुलसीदास तेहि सकल आश तजि अजहुँ न भजहिं अयाने ॥ ३ ॥ ५५ ॥

सुनहु राम रघुवीर गोसांई मन अनीति रत मेरो ॥ चरण सरोज विसारि तुम्हारे निशिदिन फिरत अनेरो ॥ टेक ॥ मानत नहीं निगम अनुशासन त्रास न काहू केरो ॥ भूली शूल कर्म कोल्हुन्ह तिल ज्यों बहु वारन पेरो ॥ १ ॥ जहँ सत संग कथा माधवकी स्वपनेहु करत न फेरो ॥ लोभ मोह मद काम क्रोध रति तिनसों प्रेम घनेरो ॥ २ ॥ परगुण सुनत दाह उर अंतर परदोष हरष वहुतेरो ॥ आपु पापके नगर वसावत सहि न सकत परखेरो ॥ ३ ॥ साधन फल श्रुति सार नाम तव भव सरिता कह वेरो ॥ सो परिहरि काकिनी लागि शठ वेचि होत हरिचेरो ॥ ४ ॥ कबहुँकहूं संगति स्वभावतें जाउ सुमारग नेरो ॥ तव करि क्रोध कुसंग मनोरथ देत कठिन भटभेरो ॥ ५ ॥ एक हौ दीन मलीन हीन मति विपति जाल अति घेरो ॥ तापर सहि न सको करुणामय मनको दुसह दरेरो ॥ ६ ॥ हारि पर्यो करि यत्न वहुत विधि ताते कहत सवेरो ॥ तुलसिदासकी त्रास मिटै जब करहु हृदय महँ डेरो ॥ ७ ॥ ५६ ॥

अथ प्रभाती.

झाँझमंजीरा संग गानेकी–रागभैरव।

श्रीरामचरण अभिराम कामप्रद तीरथराज विराजै ॥ शंकर हृदय भक्ति भूतलपर प्रेम अछैवट भ्राजे ॥ टेक ॥ श्याम वर्ण पद पृष्ठ अरुणतल लसत विशद नख श्रेनी ॥ मनु रविसुता शारदा सुरसरि मिलि चलि ललित त्रिवेनी ॥ १ ॥ अंकुशकुलिश कमल ध्वज सुंदर भवँर तरंग विलासा ॥ मज्जहि सुर मज्जन मनरंजन मुदित मनोहर वासा ॥ २ ॥ विना विराग योग व्रत संयम विन तीरथ तनु त्यागे ॥ सब सुख सुलभ दासतुलसी प्रभु पद प्रयाग अनुरागे ॥ ३ ॥ २ ॥

रागभैरव।

भयो भोर जनकनंदनि श्रीरामचंद्र जागे ॥ टेक ॥ कमल कमल भवँर गुंजे विकसि पंथ लागे ॥ कामकेलि वंशतेज कृत्यहि सब त्यागे ॥ १ ॥ शूरश्याम शेष व्यास आनि द्वार ठाढे ॥ रंग राग नाद भेदकरैं तहँ सब बाढे ॥ २ ॥ देखि रानी जानकी रवितेज तिमिर भागे ॥ अमरदास भये विलास-काम क्रोध त्यागे ॥ ३ ॥ ३ ॥

रागभैरव।

जागिये रघुनाथ कुँवर पक्षी बनबोले ॥ टेक ॥ शशिकी ज्योतिमलिन भई चकई पिय मिलनगई पवन मंद अतिसुगंध तरुवर द्रुमडोले ॥ १ ॥ प्रथम उदित भानु मंद जीव जंत भए

अनंद भँवरनगुंजार करत कमलन दलखोले ॥ २ ॥ तुलसीदास अतिअनंद निरखिकै मुखारविंद द्विजननको देत दान भूषण बहुमोले ॥ ३ ॥ ४ ॥

रागभैरव ।

आज राम जानकी कृपालु सुंदर सोहे ॥ निरखत सुर नरवर मुनि शिव विरंचि मोहे ॥ टेक ॥ रामजीके शीश क्रीट रत्न जटित धारी ॥ सियाजीके शीश फूल कोटि चंद्रवारी ॥ १ ॥ रामजीके पीतांबर धनुष बाणराजे ॥ सियाजीके करकमल मुंदरी विराजे ॥ २ ॥ रामजीके कुंडलकीकोटि भानुशोभा ॥ सियाजीके करणफूल राम मन लोभा ॥ ३ ॥ रामजीके उर सोहे मोतियनकी माला ॥ चारु हार रुचिर पहिरे जनक कुँवर बाला ॥ ४ ॥ रामजीके कटिकिंकिणि झुनुक झुनुक बाजे ॥ सियाजीके क्षुद्रघंटिका मदन मंत्र लाजे ॥ ५ ॥ रामजी घनश्याम वर्ण छविके अभिरामा ॥ सियाजीगौर कनक वर्ण लाजत शतकामा ॥ ६ ॥ सियाजीकी नखशिख छवि कहत नहीं आवै ॥ कोटिशेष शारदा श्रुति पारहू न पावै ॥ ७ ॥ एहि ध्यान हीयते टरत नाहि टार्‍यो ॥ दास अग्र युगलचरण उपर वारि डार्‍यो ॥ ८ ॥ ५ ॥

मात कौशल्या प्यारे रामको गोद खिलावे ॥ सुंदर वदन निहारकै हँसि कंठ लगावे ॥ टेक ॥ शीशशुभग कुलही बनी मसि बिंदु विराजे ॥ नीलकंठ नख केहरी कर कंकण

छाजै ॥ १ ॥ पीत झगुलिया अतिबनी पगनूपुरबाजै ॥ चलन सिखावै रामको कोटिक छवि लाजै ॥ २ ॥ कुंडलव-नेंहे जडावके झलकै गजमोती ॥ शशिमंडलके मध्यमे ज्यौ जग मग ज्योती ॥ ३ ॥ बाललीला रघुनाथकी सुर नर मुनि गावै ॥ तुलसिदास पर एहि कृपा नित दर्शन पावै ॥ ४ ॥६॥

रागभैरव ।

मंगल आरति रामजीकी कीजै ॥ आछे चरण कमल मुख-निरखतलीजै ॥ टेक ॥ मंगलआरति सदासुख राजै ॥ नृप दशरथ गृह नौबत बाजै ॥१॥ क्रीट मुकुट कर धनुप बिराजै ॥ जनकसुता लिये आरति साजै ॥ २ ॥ भरत शत्रुहन लछिम-नभाई ॥ श्रीरामजी की शोभा वरणि नजाई ॥ ३ ॥ शंख चक्र गदा पद्म बिराजै ॥ पवनतनय सन्मुखही गाजै ॥ ४ ॥ घंटा ताल पखाउज बाजै ॥ जगमग ज्योति अवधपुरराजै ॥ ५ ॥ मातकौशल्या रामजीको देखै ॥ जीवन जनम सफल करलेखैं ॥ ६ ॥ जनरैदास द्वारे यशगावै ॥ विमलभक्ति सीताराम-जीकी पावै ॥ ७ ॥ ७ ॥

रागभैरव ।

राम मंत्र राम मंत्र आरती कीजै ॥ शकर सनकादि आदि एही रँगभीजै ॥ टेक ॥ हृदय थाल विमलमाल पंच बाति जारी॥ तनमन निज परिहरो सो एहिविधिवारी ॥ १ ॥ अखंड ज्योति विविध मोद विरह दिन राती ॥ आरति रघुनाथजीकी कीजै

बहुभांती ॥ २ ॥ कहत कबीर समुझधीर ऐसे लवलाये ॥ चरण टेक रघुवीरजीके निर्भय पद पाये ॥ ३ ॥ ८ ॥

रागभैरव ।

मंगलआरति सिया रघुवरकी ॥ शंकट मोचन सारंगधरकी ॥ टेक ॥ कनकथार गज माणिक मोती ॥ कोटि भानु शशिसम द्युति ज्योती ॥ १ ॥ आलस भरे उनींदे नैना ॥ परम सुधारस बोलत बैना ॥२॥ परमउदार दीन दुखमोचन ॥ करुणासिंधु डहडहे लोचन ॥ ३ ॥ वामभाग मिथिलेश किशोरी ॥ यह छविवरणिसकै कवि कोरी ॥ ४ ॥ छत्र गहे कर लछिमन सोहै ॥ अंजनिसुत सन्मुख होयजो है ॥ ५ ॥ बालकृष्ण भज़ु सुखके सागर ॥ जनकलली रघुवंश उजागर ६९॥

रामा ॥ दातोन कीजे लाडिले रघुनाथ दुलारे ॥ सरयूजूको जल भरलाई जनक दुलारी ॥ टेक ॥ रत्न जटित चौकी वनी प्रभु आप सिधारे ॥ सुर नर मुनि जन मोहिरहे सब कौतुक हारे॥१॥कर दर्पण लछिमन लिये विधि पाग समारे॥ तुलसिदास पर यही कृपा नित दरशन तिहारे ॥ २ ॥ १० ॥

राम ॥ करत कलेऊ प्रातही मिलि चारो भाई॥अनुपम सुत दशरथके त्रिभुवन सुखदाई ॥ टेक ॥ दधि घृत खाजा फल वने खुरमादि मिठाई ॥ कनकथार भरिप्रीतिसों मैया लैआई ॥ १ ॥ अनुज सहित हरि पावही उररुचि अधिकाई ॥ बाललीला रघुनाथकी वर्णी नहिंजाई ॥ २ ॥ ठुमकि ठुमकि खेलत भजे मुख दधि लपटाई ॥ भरतादिक सँग लागही

जननी गहिधाई ॥ ३ ॥ जाको शिव सनकादिक ध्यावै ध्यान लगाई ॥ रामसेवक वशभक्तिके सोइ खेल खेलाई ॥४॥११॥

रागभैरव ।

वालभोग कीजै रामजी लला ॥ तुम मेरे प्राण जीवन धन वारे नेक न न्यारे होय लला ॥ टेक ॥ बहु मेवा पकवान मिठाई खाझा खुर्मा और फला ॥ वहुत सुगंध मिलायक मिश्री आरोगो सरयू गंगजला ॥ १ ॥ लोने लछिमन कुँवर लाडिले भरत शत्रुहन छपन कला ॥ जनअनूप संतन हित-कारी लीला नटवर अनंतकला ॥२॥ क्रीट मुकुट मकरा कृत कुंडल अरु मोतियनकी माल गला ॥ मात कौशल्या करत आरती तुलसिदास वलिजाय लला ॥ ३ ॥ १२ ॥

वालभोग कीजै सिय रघुवीर ॥ अवधपुरी मे रत्नसिहासन वैकुंठ धाम जहँ सरयूनीर ॥ टेक ॥ दाख वदाम खोपरा केला दूध दही मेवा रस खीर ॥ वैठे राम वाम दिशि सीता दाहिन विराजत लछिमन वीर ॥ १ ॥ रघुवर लछिमन भरत शत्रुहन दो साँवर दोउ गौर शरीर ॥ कौशल्या वलिजात रामको खवावत ओट करे पटचीर ॥ २ ॥ मात कौशल्या करत आरती निरखत श्याम शरीर ॥ सन्मुख पवनपुत्र करजोरे अग्रदास झारी भरि नीर ॥ ३ ॥ १३ ॥

जागिये व्रजराज कुँवर नंदके दुलारे ॥ मथुरामे जन्मलियो गोकुला सिधारे ॥ जोइ जोइ हम पतित सुने सोइ सोइ तुम

तारे ॥ १ ॥ यमुनामें गेंदपरे ग्वाल चाल हारे ॥ कालिनाग नाथ लाये कृष्ण भये कारे ॥ २ ॥ ग्राहते गज राखि लिये देवता उबारे ॥ धन्य धन्य तुलसीके स्वामि ध्रुव प्रह्लाद तारे ॥ ३ ॥ १४ ॥

प्रात समय उठि दर्शन दीजै मुनियो नंददुलारे ॥ टेक ॥ भक्त तुम्हारे द्वारे ठाढे जागो मोहनप्यारे ॥ सुर नर मुनि ब्रह्मादि देवता सुयश बखान तुम्हारे ॥ १ ॥ मोर मुकुट मकराकृत कुंडल चंदन खोर विराजे ॥ घूँघुरवारे केश तुम्हारे और पीतांबर राजे ॥ २ ॥ कौस्तुभमणि जो कंठ विराजत उर वनमाल सुहाये ॥ कर लकुटी मुरली धरि मुखपै मधुर मधुर ध्वनि गाये ॥ ३ ॥ उज्वल कंकण बाहु विशाला कटिमें किंकिणि लाला ॥ चरण शरण दीजे यदुनंदन गावै दास गोपाला ॥ ४ ॥ १५ ॥

रागभैरव ।

मंगल आरती कीजैभोर ॥ टेक॥ मंगल नंद यशोदा मंगल मंगलहै माखनके चोर ॥ १ ॥ मंगल नंद गॉव वरसानो मंगल है मुरली घनघोर ॥ २ ॥ हित हरिवंश जगतके मंगल मंगल राधे नवलकिशोर ॥ ३ ॥ १६ ॥

रागभैरव ।

आरती धनुप धरन गिरिधरकी ॥ श्रीजानकी वल्लभ राधा वरिक ॥ टेक ॥ दशरथ नंदन आनँदकंदा ॥ ब्रजमें जाय भये

नँदनंदा ॥ १ ॥ पुरी अयोध्या मथुरा गाई ॥ कौशल्या यशुमति दोउ माई ॥ २ ॥ लछिमन संग सरयूके तीर ॥ जहाँ यमुनातट खेले बलवीर ॥ ३ ॥ रघुवर हरि श्रीकृष्ण मुरारी॥ जनकसुता वृषभानुदुलारी ॥ ४ ॥ सारँगधर मुरलीधर होइ ॥ इनमे दोउ जान मत कोइ ॥५ ॥ कीरतिनाम गोपालहिभावे ॥ जन जयदेव परमपद पावे ॥ ६ ॥ १७ ॥

अथ मंगल.

रूप निहारो आली रूप निहारो सिया रघुवरजीको रूप निहारो ॥ टेक ॥ छोटे भैया लछिमन बडे रघुनंदन सूर्यवंश उजियारो ॥ १ ॥ रघुवर लछिमन भरत शत्रुहन दशरथराजदुलारो ॥ २ ॥ क्रीट मुकुट कर धनुप विराजै असुरन गंजनहारो ॥ ३ ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सफल कियो कौशल्या जीको प्यारो ॥ ४ ॥ रत्नसिंहासन रघुवर बैठे तीनलोक उजियारो ॥५॥ लटपटि पाग केशरियो जामा पीतांबर पटवारो ॥ ॥ ६ ॥ शारद शेप नारदमुनि गावे शंकर ध्यान लगावे ॥७॥ तुलसिदास प्रभु रूप निहारे जीवन प्राण हमारो ॥८॥ १ ॥

अवधपुरी आनंदको रूप ॥ ठाढे मुनि जन विरद बखानें दशरथ राज बडे कुलभूप ॥ टेक॥ जाको निगम नेति यश गावै योगेश्वर सेवे निजरूप ॥ सोई खेले दशरथजीके अँगना अँग अँग भरे सुधारस कूप ॥१॥ घर घर कामधेनु चिंतामणि कल्पवृक्ष सोहे नगर अनूप ॥ तुलसीदास सेवे रघुनंदन कनक कलश लिये दीपावली धूप ॥ २ ॥ २ ॥

भजि पूरण ब्रह्म अखंडा गलिका नंदन श्याम सुंदर ॥टेक॥ मुकतनाथमे जनम लियो है अवधपुरी विचरंता ॥ १ ॥ शेष सहस्र मुख रटत निरंतर सो वाको पार न पाता ॥ २ ॥ ब्रह्मादिक जाको पार न पावे दीनबंधु भगवंता ॥ ३ ॥ चरणोदक जा पाप हरत है जरा मरन मोहंता ॥ ४ ॥ माधोदास आश रघुवरकी भवसागर उतरंता ॥ ५ ॥ ३ ॥

आये हो राम रघुनंदन आये अवधपुरी सुखदीन राम रघुनंदन आये ॥ टेक ॥ सीता सहित सुमित्रानंदन और सुग्रीव सुहाये॥जाम्बवंत हनुमान नील नल अरु अंगद मनभाये॥१॥ हनुमत आय भरतजी सो भेटे समाचार सुनाये ॥ रावण मारि असुर सब मारे राज्य विभीषण पाये ॥ २ ॥ श्रवणन सुनत भरत उठि धाये रामजिके दर्शन पाये ॥ पॉयन परत अनुज दोउ भेटे हरि हँसि कंठ लगाये ॥ ३ ॥ पुष्पविमान दूरिते देखे यकटक ध्यान लगाये ॥ नौतम नारि अयोध्यापुरि की कंचन कलश भराये ॥ ४ ॥ वर्षत पुष्प देव मुनि हरषे गुरुजिके आश्रम आये ॥ सुरनर मुनि ब्रह्मादि देवता देवनदुंदुभि बजाये ॥ ५ ॥ पुनि गृह आय मिले मातनको मोतिन चौक पुराये ॥ घर घर की वनिता वनि सुंदर मंगल गावत आये ॥ ६ ॥ मंदिर भीर भई वहुतेरी आनंद उर न समाये ॥ फूले फिरत अयोध्यावासी घर घर बजत बधाये ॥ ७ ॥ बहु मेवा पकवान मिठाई रामजिको भोग लगाये ॥ मात

कौशल्या करत आरती मनवांछित फल पाये ॥ ८ ॥ सीता जी सहित सिहासन बैठे भरतजी चमर ढुराये ॥ तुलसिदास तिहुं लोक अनंदभये चारि वेद यशगाये ॥ ९ ॥ ४ ॥

जिवनार.

रागसारंग ।

आरोगो रघुवीर महाप्रभु आरोगो रघुवीर ॥ प्रफुलित होय परोसे जननी ढोरत शितल समीर ॥ टेक ॥ कनक थार रत्नजटित कटोरा मेवा मिटाई अरु खीर ॥ छप्पन भोग छतीसो व्यंजन नानाविधिको सीर ॥ १ ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन राजत चारो वीर ॥ जनकसुता झारी भरलाई सरयूजूको नीर ॥ २ ॥ चोवा चंदन मिलि केशर घोरी चरच्यो श्याम शरीर ॥ अचवन करके बीरी लीजे गावत दासकबीर ॥ ३ ॥ १ ॥

रागसारंग ।

आरोगो नरसिंह महाप्रभु ॥ लक्ष्मी भोजन आप सुधारे मनमे होत अनंद ॥ टेक ॥ छप्पन भोग छतीसो व्यंजन नाना विधिको रंग ॥ पनवारो नारद मुनि लाये जल भर लाये गंग ॥ ॥ १ ॥ भाव प्रीति करि भोजन कीजे जेमो मेरे प्राणअधार ॥ अंतर्गतिके अंतर्यामी सब विधि जानन हार ॥ २ ॥ आरति साजि इंद्र ले आये दूर किये पट चीर ॥ सनक सनंदन चमर ढुरावे गावत दास कबीर ॥ ३ ॥ २ ॥

रागसारंग ।

भोजन कीजे सीताराम सारग्राही भावग्राही प्रीतग्राही राम ॥ टेक ॥ दक्षिण अनुज लक्ष्मण शोभित जनकसुता लियेवाम॥ पवनसुत सन्मुख विराजे रटत निशि दिन नाम ॥ १ ॥ चारि विधि भोजन लीजे रुचिरुचि अभिराम ॥ मेल मिश्री पूप चावल खोवा दाख बदाम ॥ २ ॥ भक्त हेतु आरोगिये प्रभु सकल पूरणकाम ॥ दास वीठल दर्श पावै परम करुणाधाम ॥ ३ ॥

रागपंचम ।

मिलि जीमत जानकी रामजी सखी हरषे निरखे मिथिला पुरकी ॥ टेक ॥ पंच शब्द वरयंत्र बजावै गारी गावत पंचमके सुरकी ॥ १ ॥ कुंवरी कुंवर कर देतपरस्पर नारिहँसी नृपके कुलकी ॥ लालन मंद मंद मुसकाने सिया लाडली धूँघटमे मुरकी ॥ २ ॥ हास विनोद सुधारस सीचत आनँद बेलि बढ़ी उरकी ॥ जेउरझे सुरझे न परे लघु मोहन शीशपरी भुरकी ॥ ३ ॥ जनक भवन बिच डार दुलीचा ओटकरी पीतां वरकी ॥ सब सखियन मिलि जिमावन लागी सुंदर शोभा कमल करकी ॥ ४ ॥ बैठ विमान देव मुनि आये पुष्पनकी वरषावरकी ॥ सियरघुनाथ बसो हिय मेरे शिर मोतिनकी कलँगी झरकी ॥ ५ ॥ इत रवि उदय उत शशि प्रकाशे नक्षत्र कि ज्योतिरही लरकी ॥ अग्रदास बलि जासू नैना बार बार सियावरकी ॥ ६ ॥ ४ ॥

रागपंचम ।

मिलि जिमत राम जनक मंदिरमे सब मिलि नारि जिमावेंजू ॥ चारो वीर थार मिलि एके कवरलेत सुखपावेंजू ॥ १ ॥ नवल वधू नव नेह नेहसो कुलवधू सबै जुरि आइजू ॥ कुँवरहि निरखत अति मन हरपत रसभरि गारीगावेंजू ॥ २ ॥ शेप महेश निगम नारदमुनि उनहूके ध्यान न आवेंजू ॥ जन हरियात्रिथाधन्यजनकपुर हँसि हँसि लाड लडावेंजू ॥ ३ ॥ ५ ॥

रागसारंग ।

अचवन कीजै कृपानिधान ॥ जलझारी ब्रह्मादिक लाये खरिचा इंद्रसुजान ॥ टेक ॥ जयरु विजय लाये लौंग इलाची नारद लाये पान ॥ पनवारो संतनको दीजै गावत जन भगवान ॥ १ ॥ ६ ॥

रागपंचम ।

मिलि जेमत लाडलिलाल दोऊ पटव्यंजन चार सने सरसें ॥ मनमे रसकी रुचि जो उपजै सखि माधुरि कुंज सुधा बरसे ॥ १ ॥ हटकै मनमोहन हार रहे भटु हाथ जिमावनको तरसें ॥ करकंपत बीचहि छूटि परे कबहूं गरसासुख लौ परसे ॥ २ ॥ सखि झांझ लिये चहुंओर खड़ी हरषे निरखे दरसे परशे ॥ सुख सिंधु अपार कह्यो न परै अवधेश सखी हरि वंशलसे ॥ ३ ॥ ७ ॥

रागसारंग ।

बैठे लाला कुंजनमे जो पावो ॥ श्यामा श्याम भावती जोरी अपने हाथ जिमावो ॥ टेक ॥ दधि पकवान मिठाई मेवा रुचि रुचि भोग लगावो ॥ सखा सहित हरि जेमन बैठे वेद विमल

यश गावो ॥ १ ॥ चंदन चरचि पुष्पकी माला हरखि निरखि पहिरावो ॥ श्रीभट देत पानकी वीरी युगल चरण चित लावो ॥ २ ॥ ८ ॥

रागआरती ।

नँदनंदनजीको भोगलागे महाशंख ध्वनि घंटाबाजे॥अम्मृत भोक्ता श्रीयदुराई छप्पनभोग श्रीलक्ष्मी जी लाई ॥१॥ सत्य-भामाजी नेवता कीन्हों ॥ हरि हलधरजीको नेवता दीन्हो॥२॥ चंदन मँगायकै भवन सिंचाये ॥ सखा सहित हरि जेमन आये ॥ ३ ॥ दधि पकवान मेवा मिठाई ॥ छप्पन भोग जीमै दोउ भाई ॥ ४ ॥ छप्पन भोग छतीसो व्यंजन ॥ रुचि रुचिसो जेमे यदुनंदन ॥ ५ ॥ साग पात जो जनके होई ॥ अम्मृतकर जेमे हरि सोई ॥६॥ हरिजेमे हरिजन यशगावे ॥ ललिता विशाखा चमर ढुरावे ॥ ७ ॥ जन नामदेव द्वारे यशगावे ॥ सो हरि को पनवारो पावे ॥ ८ ॥ ९ ॥

रागसारंग ।

अँचवन कीजै कृपानिधान॥ जल झारी ललितादिक ल्याई खरिका विशाखा पान ॥ टेक ॥ कत्था सुपारी लौंग इलाची वीरी चतुर सुजान ॥ श्रीभटदेत पानकी विरी महिमा व्यास बखान ॥ १॥१० ॥

रागकाफी ।

पानकीपानकी पानकी वीरी देउँगी बनाय रसपानकी॥टे०॥ आवो कृष्ण मिलि चौपड़ खेले बाजी बनी दिलजानकी ॥

॥ १ ॥ कत्था चूनो लौंग इलाची ऐसी देउँ अनुमानकी ॥ २ ॥ तेरी वंशीने सब जग मोहे बेटी मोही वृषभानुकी॥३॥जीवन लछि रामके प्रभु प्यारे ॥ जोड़ी बनी राधेश्यामकी ॥ ४ ॥ ११ ॥

अथ ध्वनिपंगतकी.

अवध सुहावन अति मनभावन तले बहे सरयूनीर सुमिरो मना जय जय जय रघुवीर ॥ टेक ॥ रघुवर लछिमन भरत शत्रुहन संग सखनकी भीर ॥ १ ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल गले बिच मुकता हीर ॥ २ ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजे शोभित श्याम शरीर ॥ ३ ॥ सारंगधनुप बाणकर राजे पहिरे पीत पटचीर ॥ ४ ॥ संग सखा सरयू तट विहरत राम लपण दोउ वीर ॥ ५ ॥ बामे अंग जानकी विराजै दाहिन श्रीलछमन वीर ॥ ६ ॥ नाम प्रताप तेरे जड थलमे गीध व्याध कपि कीर ॥ ७ ॥ रूप निहार थकित भइ ऋतुपति शारदसे मतिधीर ॥ ८ ॥ जिन चरननको ध्यान धरत है हरत संत जनपीर ॥ ९ ॥ जनबाला नंद रघुवर शरणे गावत गुण गंभीर ॥ १० ॥

पुरी है अयोध्या सरयूतीर ॥ बाललीला खेले रघुवीर ॥ आछे रामजि लला कौशल्यानंदन सुर नर मुनि गावे जय जगवंदन ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट कुंडल वनमाल भाल तिलक सोहे नयन विशाल ॥ १ ॥ कटि किंकिणि पीतांबर राजे ॥ चारु निगम ध्वनि नूपुर बाजे ॥२॥ ब्रह्मादिक जाको पार न पावे ॥

ताहि कौशल्या रानी गोद खेलावे ॥३॥ तोतरि वाणी अधिक सुहावैं ॥ निरखि कृपालु सखि बलि बलि जावे ॥४॥२॥

राम नाम जाके मन भावे दृढ विश्वास परमपद पावे ॥ निशि वासर सुमिरै नर नारी । भवसागरते तार मुरारी ॥ भजो मन राम कृष्ण गोविद हरि पारब्रह्म श्रीपरमानंद ॥ टेक ॥ वामन वासुदेव वनवारी शंख चक्र गदा गिरिवर धारी ॥ नाम प्रताप तरे अघ भारी गौतमनारि अहल्या तारी ॥ १ ॥ परमात्मा आतमनिज धाम जल थलमे व्यापक विश्राम । शुक संमत भागवत विचारि ॥ देहधरे साधन मिलि आवे ॥ २ ॥ योगी जंगम सेव संन्यासी प्रेम भक्ति विन फिरत उदासी । तारकमंत्र हृदय नहिं आवे मूरख भ्रमि भ्रमि जन्म गमावे॥३॥ बिना विवेक वेप सोइ रोगी सुख मन नारि पिवै रसभोगी ॥ जब या रसकी लगीहै खुमारी ॥ त्रिकुटी संगम लागी तारी ॥ ॥ ४ ॥ निराकारको सकल पसारा है सबहिनमे सब सो न्यारा- ॥ वनखंडी गुरुज्ञान विचारा ॥ पूरणब्रह्म सिताराम जी हमारा ॥ ५ ॥

हंसवंश रघुवंश विभूषण सत्यासिधु व्रतधारी ॥ दया निधि जय जय अवधविहारी ॥ टेक ॥ अगुण अमान अभेद अनामय जनहित नरवपुधारी ॥ १ ॥ धनि धनि भाग्य राजा दशरथके प्रगट भये सुत चारी ॥ २ ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन कोशल अजिरविहारी ॥ ३ ॥ विविध भाँति भूणपभूपित तनु बाणशरासन धारी ॥ ४॥ गाधिसुवन

सँग मुनिमख राखे प्रबल ताडका मारी ॥ ५॥ चरणकमल रज पंकज परसत गौतमनारि सिधारी ॥ ६ ॥ जनकपुरी मुनि सँग पगुधारे लखि हुलसे नरनारी ॥ ७ ॥ भंजिपिनाक नृपन मद गंज्यो वरिहै विदेह कुमारी ॥ ८ ॥ चारो बंधु व्याहि घर आये आरति मातु उतारी ॥ ९ ॥ कीन्ह अयाच सकल याचक जन दीन्ह दान नृप भारी ॥ १० ॥ सुर नर मुनि अज ईश अशीशे बरपि सुमन शुभकारी ॥ ११ ॥ बाजहिं विपुल दुंदुभी नभ सुर अवधि अनंदनिहारी ॥ १२ ॥ बाजहिं विपुल दुंदुभी नभ सुर अवधि अनंदनिहारी ॥ १३ ॥ जैजैजै अवधेशजगत पति जैजैजैअसुरारी ॥ १४ ॥ जन हाथीरामजी राम रघुनंदन सबै विधि शरणतुम्हारी ॥ १५ ॥ ४ ॥ नगर अवध कंचन पुर राजै विहरत कमलाधीश॥सुमिरो मना जैजैजै अव धीश ॥ टेक ॥ भाल तिलक गल हीरा सोहै घूंघरवारे केश ॥ १ ॥ कटिपर पीत पितांबर बांधे रूप धरे नृप भेश ॥ २ ॥ सुर नर मुनि जय शब्द उचारे वर्षत पुष्पन मेघ ॥ ३॥ शुक सनकादि नारदमुनि गावे सेवत शंभु गणेश ॥ ४ ॥ राम चरण जल दास सुदरशन मीन मनो परवेस ॥ ५ ॥ ५ ॥ आछे रामजी लला रघुनाथ कला जा सुमरे तेरो होत भला ॥ टेक ॥ दैत्यन मारन असुर सँहारन भक्त वत्सल तेरो बिरदभला ॥ १ ॥ कंठ मेरे तुलसी मुख मेरे हृदयविराजे स्वामि सालगरमा ॥ २ ॥ सब देवनमे यक देव बडा सब साधनमे यक साध बड़ा ॥ ३ ॥ रामानंद प्रभु अनंत कला तुम जिन विसरो मुहि एक पला ॥ ४ ॥ ६ ॥

जा सुमिरे त्रय ताप नशतहै परत न यमके फंद॥सुमिरोमना राम सच्चिदानंद ॥ टेक ॥ ऋपि मख राखि निशाचर मारे अभय किये मुनिवृंद ॥ १ ॥ पद रज परशि शिला भई सुंदरि धाय उवारे गजेंद्र॥ २ ॥ जनक स्वयंवर पावन कीन्हो तोरचोहै धनुप प्रचंड ॥ ३ ॥ सियाजी विवाहि अवधपुर आये घर घर भये है अनंद ॥ ४ ॥ मात कौशल्या करत आरती निर खत पूरण चंद ॥ ५ ॥ जैजैकार भये सुरपुरमे गावे श्रीबालानंद ॥ ६ ॥ ७ ॥

ऊंचे पर्वत कोयल विराजे झाडीहै गहिरगंभीरा सुमिरो मना जय वेकटवाला वीरा ॥ टेक ॥ त्रिपतीमे सीतारामजी विराजे चौकी है लछमन वीरा ॥ १ ॥ शेपाचल पर आप विराजे चौकी है हनुमत धीरा ॥ २ ॥ जय विजय दोउ पौरिया विराजे ढिग पुष्करिणी नीरा ॥ ३ ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजे सोहत श्याम शरीरा ॥ ४ ॥ शेप वाहन असवारीहै निकसी सँग साधुनकी भीरा ॥५॥ जन हाथीरामजी वेकटजी के शरण गावत गुण गंभीरा ॥६ ॥ ८ ॥

जाकी माया जगत भुलाया ताताथेइ तंदना ॥ ब्रह्मा जाको पार न पावे गावे सनक सनंदना ॥ भजो हो मन सीताराम मेटो दु ख दंदना ॥ टेक ॥ देवकीके गृह आये ऐसे पूरण चंद्रमा ॥ सुर नर मुनि जाको ध्यान धरे साधु करे वंदना॥१॥हरिणकशिपु नख उद्र विदारे प्रहलादकोराखना ॥ द्रुपदसुता को चीर बढ़ायो कालिनाग नाथना ॥ २ ॥

मथुरामे हरि कंस पछाड़े लंकापति रावना ॥ याही रूप छल्यो वलि राजा वेप धारचो वामना ॥ ३ ॥ औरनको हरि येढे टेढे नंदना ॥ साधुन को हरि ऐसे लागें जैसे शीतल चंदना ॥ ४ ॥ भनत नामदेव सुनो हो तिलोचना जो साधुनसे द्रोह करें ताहिकूं निकंदना ॥ ५ ॥ ९ ॥

मथुरामे हरि जन्म लियो है भक्तवत्सल महाराज ॥ सुमिरो मना जैजैजै व्रजराज ॥ टेक ॥ मथुरासो हरि गोकुल आये कंसको भई है अवाज ॥ १ ॥ दावानलको पान कियोहै नाथहै कालीनाग ॥ २ ॥ डूबतसो व्रजराखि लियोहै नख पर गिरिवर धार ॥ ३ ॥ गोकुल सो हरि मथुरा आये संग सखा लिये ग्वाल ॥४॥ केशीमारे कंस पछाड़े उग्रसेन दियेराज ॥ ॥ ५ ॥ डूबतसो गजराज उबारे चक्रसुदर्शनधार ॥६ ॥ पांडू प्राणनाम नंदनंदन राखी है द्रोपदीकी लाज ॥७॥जन व्रज्यानंदन गोपालजीके शरण जन्म सफल भयो आज ॥ ८ ॥ १०॥

श्रीराम कृष्ण गोविंद माधव वासुदेव श्रीवामनं ॥ जैजै मच्छ कच्छ वाराह नरसिंहता हे माधवजी पावनं ॥ टेक ॥ धन्य मथुरा धन्य गोकुल धन्य यदुकुल अवतरे ॥ १ ॥ धन्यधन्य यमुना नीर शीतल ग्वाल वाल सखावने॥२॥मथुरामे केशोराय विराजे गोकुल बालमुकुंदजी ॥ श्रीवृंदावन में मदनमोहन गोपीनाथ गोविंदजी ॥ ३ ॥ कृष्ण कलिमल हरहिं जिनके सोइ भजे हरिचरणको ॥ तुम भक्ति आपनि देहो माधो करो कृपा भवतरनको ॥ ४ ॥ कुंज केलि विलास मोहन संगराधे जु

भामिनी ॥ वंशीवटके निकट यमुना मुरली की टेर सोहावनी ॥५॥नवल युगल किशोर मोहन दुल्हा दुल्हन घनश्यामजी ॥ श्रीवृंदावन सुखधाम जिनके रसिक जिवन हरिनामजी ॥ ६ ॥ ११ ॥

नीलवर्ण निर्मल चंदा नित्य महेछापाल दयानिधि गोपाला रामा ॥ टेक ॥ देवकिनंदन कंसनिकंदन रुक्मिणि प्राणअधार ॥ १ ॥ गिरिवरधारी बाल ब्रह्मचारी केशवजी कृष्णमुरार ॥ २ ॥ अगणित गुण गंभीर चतुर्भुज खगपति वाहनपाल ॥ ३ ॥ पूजत गौरि मनावत शंकर लंक विभीषणपाल ॥ ४ ॥ रामानंद रमापति स्वामी विष्णु श्याम त्रिपुरारी ॥ ५ ॥ नीमानंद सनकादिक राजे माधवजी गुरुमुखचारी ॥ ६ ॥ दशरथ सुत कौशल्यानंदन जानकीप्राण अधार ॥ ७ ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजे यह मेरे रछपाल ॥ ८ ॥ श्रीपुरुषोत्तम श्रीनिवासा भक्तवत्सल प्रतिपाल ॥ ९ ॥ गुरु परताप साधुकी संगति नामदेवजी भये है निहाल ॥ १० ॥ १२ ॥

सांवलिया सुघरसेती प्रीतरी लागि वाको दुःख दारिद्र कान्ह तुरत हरी ॥ टेक ॥ आछे भजो हो गोपाल लाल प्राण जीवना ॥ यशोदानंदन कान्ह मोहोरे मना ॥ ॥ १ ॥ वृंदावनमे खेलत देखे गोपी औरसखा ॥ वाको चित चोरो कान्ह मोहोरे मना ॥ २ ॥ वैकुंठारो नायक स्वामी गहर गंभीर॥रानि रुक्मिणीवरपायो पियारो स्वामी॥३॥१३॥

मीठोरे मीठो हरि नाम साधु पीवै ताकी बलिजाऊं ॥
मीठो नाम पियो नरहरी सुवा पढावत गणिका तरी ॥ १ ॥
मीठो नाम पियो शिव शेष ध्रुव पीयो नारद उपदेश ॥ २ ॥
जय विजै सनकादिक पियो प्रह्लाद अग्निसे राखिलियो ॥ ३ ॥
रामानंद कबीर रैदास पियो प्रेम पीयो एक सास ॥ ४ ॥ अ-
ग्रकीलजंगी तुलसी पियो दासमुरार संगत करलियो॥५॥१४॥

अथ जय.

बोलियो साधो मधुरीसी वाणी श्रीराम कृष्णदेवकी जय ॥
शेपाचलवासीकी जय ॥ सब घट निवासीकी ॥ वैकुंठ विला-
सीकी ॥ आदि वाराह स्वामीकी ॥ गंगा पुष्करिणीकी ॥ श्रीवे
ङ्कटेशकी ॥ उग्र वेङ्कटेशकी ॥ प्रसन्न वेङ्कटेशकी ॥ त्रिप्ति-
नाथकी ॥ धनुपधारीमहाराजकी॥गोविंदराय स्वामीकी ॥ अ-
लवेल गंगाकी ॥ पद्मसरोवरकी ॥ वीर राघव स्वामीकी ॥
श्रीप्रेमचुलकी ॥ पक्षितीर्थकी ॥ कांचिवरदराजकी ॥ आदिरं-
गस्वामीकी ॥ श्रीमुष्टिस्वामीकी ॥ सारंगधरस्वामीकी ॥ श्रीरं
गस्वामीकी ॥ दक्षिणद्वारकाकी ॥ नौपाषाणकी ॥ रामनाथ
धामकी ॥ धनुपकोटितीर्थकी ॥ राममोहोलाकी ॥ द्रवसैन
स्वामीकी ॥ अलगरजमहाराजकी ॥ वैकुंठकोथलकी ॥ ताम्र-
वरणीगंगाकी ॥ तोताद्रिनाथकी ॥ लंबेनारायणकी ॥ आदिके-
शवस्वामीकी ॥ पद्मनाभस्वामीकी ॥ जनार्दनस्वामीकी ॥ दे-
वनारायणकी ॥ जंगजीतगोपालकी ॥ हेमगोपालकी ॥ महल-
कोटापाटकी ॥ चलपलरायस्वामीकी ॥ कल्याणगंगाकी ॥

नृसिंहदेवकी ॥ किष्किंधा नाथकी ॥ गंगागोदावरीकी ॥ पुंड-
रीनाथस्वामीकी ॥ चंद्रभागागंगाकी ॥ रामकुंडकीकी ॥
रामसेजकी ॥ गिरिनारिपुरुपकी ॥ तुलसीश्यामदेवकी ॥
गंगागोमतीकी ॥ द्वारकानाथधामकी ॥ रणछोडटीकमकी ॥
कुंवरकल्याणकी ॥ माधवपुरुपोत्तमकी ॥ नारायणस-
रकी ॥ धरणीधरस्वामीकी ॥ रूपचतुर्भुजजीकी ॥ लोहा-
गरपुष्करकी ॥ नृसिहफूहारकी ॥ नृसिहकटाक्षकी ॥
मणिकर्ण त्रिलोकनाथकी ॥ मानसरोवरकी ॥ बद्रीविशा-
ललालकी ॥ तपकुंडकी ॥ हरिद्वारराजकी ॥ कुरुक्षे-
त्रकी ॥ गंगाभागीरथकी ॥ यमुनापाटराणीकी ॥ वृंदावनचंद्र-
की ॥ बांकेविहारीकी ॥ कुंजविहारीकी ॥ मुरलीमनोहरकी ॥
राधारुक्मिणीकी ॥ चित्रकूटनाथकी ॥ गंगापयशरणीकी ॥
कान्तानाथकी ॥ प्रयागराजकी ॥ त्रिवेणीगंगाकी ॥ नैमिशा
रनमिश्रीकी ॥ अवधसरयूकी ॥ सरयूगंगाकी ॥ वृज्यागंगा
की ॥ रामघाटकी ॥ स्वर्गद्वारीकी ॥ राममहोलाकी ॥ राम-
कोटकी ॥ जन्मस्थानकी ॥ दशरथनंदनकी ॥ कौशल्यानंदन-
की ॥ कैकेयीनंदनकी ॥ सुमित्रानंदनकी भरतकेभाईकी ॥
जनककेजेवांईकी ॥ चारोभाइनकी ॥ जनकनंदनीकी ॥ जनक
नंदनीमहाराणीकी ॥ जनककिशोरीकी ॥ जनकलाडलीकी ।
जनकदुलारीकी ॥ जनककुमारीकी ॥ अंगदटीलाकी ॥ विद्या-
कुंडकी ॥ शूर्पकुंडकी ॥ भरतकुंडकी ॥ चक्रतीर्थकी ॥ राजा
दशरथकी ॥ जनकपुरक्षेत्रकी ॥ राजाजनककी ॥ कालिया

कंतकी ॥ मुक्तनाथक्षेत्रकी ॥ शालग्रामदेवकी ॥ चाटगाँव वालवाकुंडकी ॥ अन्नपूर्णा माईकी ॥ गयागदाधरकी ॥ सीता कुंडकी ॥ बुधगयाकी ॥ फल्गूगंगाकी ॥ गंगासागरकी ॥ कपिलदेवमुनिकी ॥ साखीगोपालकी ॥ पुरुषोत्तमक्षेत्रकी ॥ जगन्नाथदेवकी ॥ बलभद्रदेवकी ॥ माईसहोद्राकी ॥ सुदर्शन-चक्रकी ॥ नीलचक्रकी ॥ लक्ष्मीमहाराणीकी ॥ बटेकृष्णा की॥ विमलादेवीकी ॥ पतितपावनकी ॥ श्रीमहाप्रसादकी ॥ मानसीगंगाकी ॥ स्वर्गद्वारीकी ॥ चक्रतीर्थकी ॥ सिद्धहनुमानकी ॥ सिरडीहनुमानकी ॥ वाराभाईहनुमान्की ॥ नृसिंहदे-वकी ॥ इंद्रदवनकी ॥ मारकंडेश्वेतगंगाकी ॥ आदिकूर्मस्वामीकी ॥ माधव पुरुषोत्तमकी ॥ सहोद्रिनृसिंहकी ॥ अहोबलि नृसिंहकी॥पनानृसिंहकी॥हनुमानदेवकी॥गरुडदेवकी ॥इंद्रदे-वकी ॥चंद्रदेवकी ॥सूर्यदेवकी ॥अन्नदेवकी॥चारधामकी॥चार संप्रदायकी॥अनंतकोटिवैष्णवकी॥ अपनेअपनेगुरुगोविंदकी॥ स्वामीगुरुरामानंदजीकी ॥ स्वामीअन्नाभिनंदजीकी ॥ स्वामी हाथीरामजीकी ॥ स्वामीगिरिधरदासजीकी ॥ स्वामीभक्तराम जीकी ॥ स्वामीलछिरामजीकी ॥ स्वामीहरिदासजीकी ॥ स्वामीगोवर्द्धनदासजीकी ॥ स्वामीतुलसीदासजीकी ॥ स्वामी आत्मारामजीकी ॥ स्वामीहरिरामजीकी ॥ स्वामीजानकीदास जीकी ॥ स्वामीगोवर्द्धनदासजीकी ॥ स्वामीसेवादासजीकी ॥ श्रीमहंत स्वामीभगवानदासजीकी ॥ श्रीमहंत स्वामीमहावी रदासजीकी ॥ विलासीमहाराजकी ॥ लक्ष्मीमहाराणीकी ॥

स्थानपुरुपकी ॥ गजराजमहाराजकी ॥ दाताभोक्ताकी ॥ अन्नादपुरुपकी ॥ रसोयाभंडारीकी ॥

दोहा–रामकहेसुखऊपजे, कृष्णकहेदुखजाय ॥
महिमामहाप्रसादकी, पावोप्रीतिलगाय ॥ १ ॥

अथ रागगौरी.

भाल तिलक तुलसीकी माला अवधपुरीके वासी ॥ आये मेरे सीता राम उपासी ॥ टेक ॥ तीरथ बरत सभी करि आये कोटि गया अरु कासी ॥ चरण धोय चरणामृत लीन्हो शीतल होगइछाती ॥ १ ॥ रघुवर छांडि औरको भजिहैं सो नर यमपुर जासी ॥ तुलसीदास रघुवरके शरणा मिटिगइ-लख चौरासी ॥ २ ॥ १ ॥

रघुवर लछमन भरत शत्रुहन शोभा वरणि न जाई ॥ श्रीअँगनामें खेलत चारोभाई ॥ टेक ॥ चार रतनको खेल रच्यो है फूलन गेंद बनाई ॥ तीन लोक की सकल संपदा अवधपुरी चलिआई ॥ १ ॥ ठौर ठौर मुनिजनके आसन बैठे ध्यानलगाई ॥ राजा दशरथ घर नौबत बाजे घर घर बजत बधाई ॥ २ ॥ शिव सनकादिक औ ब्रह्मादिक शेष सहसमुख गाई ॥ क्रीट मुकुट कर धनुप विराजे दशरथ सुत रघुराई ॥ ३ ॥ कल्पवृक्षतर रत्नसिंहासनं जहँ बैठे रघु-राई ॥ मात कौशल्या करत आरती आनँद उर न समाई ॥ ४ ॥ सरयूके तीर अयोध्या नगरी अपने हाथ बनाई ॥ तुलसिदास धनि धन्य कौशल्या भाग्य बड़े जिनपाई॥५॥२॥

खेलत खेलत राम आये नृपदशरथके दुलारे ॥ संध्या समय मरालमंडली अवधपुरी पांव धारे ॥ टेक ॥ श्रम जल बूंद वदनपर राजें सघन विमल जस तारे ॥ पीतांबर दामिनि द्युतिराजै गिरा गरज अनुहारे ॥ १ ॥ भरत शत्रुहन लछुमन भाई श्रीरामजी वने अतिभारे ॥ रघुकुलके चारो वीर विराजे शोभित न्यारे न्यारे ॥ २ ॥ रघुवर मुख निरखत कौशल्या आतुर विरह निवारे ॥ अग्रस्वामी पर करत आरती राई लोन उतारे ॥ ३ ॥ ३ ॥

आज वनी छवि भारी श्रीराघोजीकी आज वनी छविभारी ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडलतिलकपटल द्युतिकारी ॥ वदन मयंक तापत्रयमोचन मंद हँसनि अति प्यारी ॥ १ ॥ चंदन चरचित अंगमनोहर उर वनमाल सुहाई ॥ बाहु विशाल विभूपण सुंदर करगहे सारँगधारी ॥ २ ॥ कटि पर पीत जरकसी वागो मोहत मदन निहारी ॥ सुर नर मुनि जन चरणसरोरुह ध्यान धरत त्रिपुरारी ॥ ३ ॥ चतुर सखी मिलि करत आरती सजिकर कंचन थारी ॥ रामसेवक जीके प्रभु सुखसागर गावत पुर नर नारी ॥ ४ ॥ ४ ॥

नृपदशरथ गृह आये मुनि वर नृप दशरथ गृह आये ॥ शूरवीर वालक दोउ तेरे आगम निगम वताये ॥ टेक ॥ हौ धर्मधीर अति प्रतिज्ञापूरण कह्यो हमारो कीजै ॥ गौर श्याम जोड़ी जगमोहन संग हमारे दीजै ॥ १ ॥ इतनी वात सुनी नृप श्रवणन प्राण रहत नहिं ठौरे ॥ सजल नयन कछु उतरन

आवे देह दशाभइ औरे ॥ २ ॥ जब ऋषि तेज प्रभाव जनायो प्रभु जीकी प्रभुता बढायो ॥ तुलसिदास रघुनाथ गमनकियो कटि तरकश बंधायो ॥ ३ ॥ ५ ॥

चले हैं रायजूके ढोटा ॥ ऋषिसँग चलेहै रायजूके ढोटा ॥ अरस परस अनियारे लोचन गौर श्याम दोउ जोटा ॥ टेक ॥ एकहि बाण सु हती ताडका गुणगँभीर वपुछोटा ॥ यज्ञ सारि हित निशिचर जीतन काम समारन मोटा ॥ १ ॥ मुनितिय तारि स्वयंवर पेखन तोरन धनुप चपेटा ॥ तुलसिदासके हृदय बसहु राय दशरथके कुँवरोटा ॥ २ ॥ ६

ये बालक दोउ काके ॥ ऋषिजू येबालक दोउ काके ॥ जा देखतहि हिये सुख उपजे नयन सराहे शोभाके ॥ ॥ टेक ॥ सुंदर वदन सुशील सुलक्षण चरण न वंदतु याके॥ मेरे ज्ञान निगम वर येही ठाकुर ये दशरथके ॥ १ ॥ जब ऋषि उत्तर दीनो नृपति सों कहा वरणों गुण याके ॥ तुलसिदास प्रभु जगके जीवन वहुत करेंगे सहाके ॥ २ ॥ ७ ॥

ये बालक दोउ ताके ॥ नृपजू ये बालक दोउ ताके ॥ दशरथसुत रघुवंशी कहिये अवधपुरी घर याके ॥ टेक ॥ मारगमाहिनिशाचरि मारे कोटिन काम अघाके ॥ मम गृह आय कियों यज्ञ पूरण असुर हते अति बांके ॥ १ ॥ जब ऋषि वचन कह्यो सुनि निश्चय यह पतिहै सीताके ॥ तुलसी प्रभु अब काहा बूझो जीवन प्राण रमाके ॥ २ ॥ ८ ॥

राजत राम जानकी जोरी ॥ श्यामसरोज जलद सुंदर वर दुलहिनि अरुण ललित तनु गोरी ॥ टेक ॥ व्याह समय शोभित वितान तर उपमा कहि न लहति मति मोरी ॥ मानहुँ मदन मंजु मंडप महँ छवि शृंगार शोभा सो थोरी ॥१॥ मंगल मय दोउ अंग मनोहर लसति चूंदरी पीत पिछोरी ॥ कनक कलश कहँ देत भावरी निरखिरूप शारद भइ भोरी ॥ २ ॥ विश्वामित्र वसिष्ठ शतानंद गोत्र उचारत दोऊ ओरी ॥ इत मिथिलेश उतहिंहै अवधपति देत परस्पर सिंधु झकोरी ॥३॥ मुदित जनक रनिवास रहसवश चतुर नारि वारति तृणतोरी ॥ गान निशान वेद ध्वनि सुनि सुर वर्षत सुमन हर्ष कह कोरी ॥ ४ ॥ नयननि को फल पाय प्रेमवश सकल अशीशत ईश निहोरी ॥ तुलसी तेहि आनंद मगनमय को रसना वर्णत सुखसो री ॥ ५ ॥ ९ ॥

कटि तूणीर वाण कर राजे यह भुव भार हरेंगे ॥ भुजन पर आवत धनुप धरेंगे ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सुहावें ॥ इनके दरश परश पायेते पापपहार टरेंगे ॥ १ मिश्वामित्र को यज्ञ सफल कियो गौतम नारि तरेंगे ॥ सुंदर श्याम सलोने से ढोटा केशर तिलक करेंगे ॥ २ ॥ जनक स्वयंवर पावन कीन्हो सीता रामजी वरेंगे ॥ तुलसीदास दरबार दीन होइ मोसे पतित तरेंगे ॥ ३ ॥ १०॥

नमो नमो सिया जनकलली ॥ जनमत भुवन विदेह नृपतिके कीरति त्रिभुवन उमँगि चली ॥ टेक ॥ मिथिला आल

बाल निमि कुलकी सुकृत बेलिवर सफल फली ॥ षट गुण दल संपति परिपूरण चितवत घन तन रूपझली ॥ १ ॥ बीनत मुनि माली ब्रह्मादिक बाल चरित मृदु कुसुम कली ॥ कृपा विवश सौरभप्रेमाभर शोभित अति बड़भाग अली ॥२॥ सूरकिशोर निगम जल सींचत माएकेगुण कौन रली ॥ आलंबन रघुवीर कल्पतरु भै त्रिभुवन उपमा अतुली॥३॥११॥

नमो नमो रघुपति रामो ॥ चरणसरोज भृंग सनकादिक नारद गावत गुणग्रामो ॥ टेक ॥ आदि मध्य अवसान एक रस कारणकरन अखिल धामो ॥ सब सुखसदन कदन कलिमलहर भवसागर नौका नामो ॥ १ ॥ अधरम नाश धरम मरयादा भक्तबछल पूरणकामो ॥ दीनदयालु दिवाकरके प्रभु साधुसंगति मिलि विसरामो ॥ २ ॥ १२ ॥

नमो नमो रचना रघुवरकी ॥ शिव विरंचि सनकादिक मोहे धीरज धरें सो कहा मति नरकी ॥ टेक ॥ लघु दीरघ दीरघकर लघु लागन वार पलक नहिं फरकी ॥ संपतिविपति विपति कर संपति अकथ कथा दशरथसुत घरकी ॥ १ ॥ विद्यावान पंडित मति विसरत मूरख पावत बुधि मुनिवरकी ॥ रामदास भगवंत कृपा उर अशरणशरण आश धनुधरकी ॥ २ ॥ १३ ॥

आवत चारों भैया वनहुंते आवत चारों भैया ॥ दो सांवर दो गौर मनोहर राजा दशरथजीके छैया ॥ टेक ॥ वनहुंते

आवत तुरंग नचावत कर गहे वाण धनुहियां ॥ अवधपुरी नर नारि निहारे दोउ कर लेत वलैयां ॥ १ ॥ विविध भांति आभूपण पहिरे मंद मंद मुसकैया ॥ वाल अली प्रभुकी छवि निरखें करत आरती मैया ॥ २ ॥ १४ ॥

कठिन धनुप कैसे तोरयो श्रीराघवजी कठिन धनुप कैसे तोरयो ॥ वड़े वड़े भूप सप्त द्वीपनके उनहुंन नेक न मोरयो ॥ टेक ॥ पितु अशीश पय पियोहै तिहारो गुरु विश्वामित्र सहाई ॥ एतो जोर भयो जव मोपे ताते लियोहै उठाई ॥१ ॥ हाथ चुमत मुख चुमत कौशल्या बांटत वहुत मिठाई ॥ तुलसीदास रघुवीर वदनपर वार वार वलिजाई ॥ २ ॥ १५ ॥

चित्रकूट वस भाई मनरे तू चित्रकूट वस भाई ॥ जहां राम सुखधाम जानकी रहत लपणसुखदाई ॥ टेक ॥ जा रजको ब्रह्मा शिव नारद मुनि खोजत मनलाई ॥ जो पद रेणु देत सुख साधन लेते शीश चढ़ाई ॥ १ ॥ पयसुरनी हरनी पापनको जामे कू न हनाई ॥ जो गंगा देवनको दुर्लभ सो अनुसूया ल्याई ॥ २ ॥ हरपि निरखि द्रुमवेलि कानरा जहँ विहरत रघुराई ॥ राम कृपा भजि जानकिवल्लभ नाहिंन आन उपाई ॥ ३ ॥ १६ ॥

करुणा करि टेरत वैदेही चरण शरण गोहराई ॥ है कोई ऐ-सो जगमे योधा जो मोहिं लेत छुडाई ॥ १ ॥ रथपर निरखत जात जटाई ॥ टेक ॥ इतनी सुनत उठे खगपति तव हांक दियो गोहराई ॥ काकी नारि नाम कह तेरो कौन हरे तोहि

जाई ॥ २ ॥ सरयूतीर अयोध्यानगरी दशरथ सुत रघुराई ॥ ताकी नारि नाम मेरो सीता हरे निशाचरजाई ॥ ३ ॥ क्रोधवंत धायो खगपति तब हांक दियो नियराई ॥ अब नहिं जियत जाइ तू निश्चर जो शिव होत सहाई ॥ ४ ॥ चरण चोचसूं कियेहि महारण रथसों दियो है गिराई ॥ अग्निवाणसो मारि निशाचर पंख दोहु जरिजाई ॥ ५ ॥ मनमे अशीश देत तब सीता प्राण रहे घटमाहीं ॥ तुलसिदास रघुपति जब अइहैं अरथ कह्यो समुझाई ॥ ६ ॥ १७ ॥

कौन दिशाते आयो पवनसुत कौन दिशाते आयो ॥ उत्राखंड अयोध्या नगरी चित्रकूटसे आयो ॥ टेक ॥ कौनके पुत्र कोनके पायक कौने कुँवर पठायो ॥ अंजनिको पुत्र रामजीको पायक लक्ष्मण कुंवर पठायो ॥ १ ॥ कहँ तेरे राम कहां हैं लक्ष्मण कहांते मुद्रालायो ॥ वनहिंमे रामजी वनहिंमे लक्ष्मण वनहिते मुद्रालायो ॥ २ ॥ कोनके सतसूं सागर उतरे कौन सँदेशो लायो ॥ सीताके सतसो सागर उतरे राम सँदेशो लायो ॥ ३ ॥ अब जिन शोच करो मेरी जननी राम सहित दल आयो ॥ रावण मारि अबहिं लै जाऊं रामाज्ञा नहिं पायो ॥ ४ ॥ आज्ञा माँगि बागमे पैठे पान फूल फल खायो ॥ तुलसिदास रघुवरजीके शरणा सोवत सिंह जगायो ॥ ५ ॥ १८ ॥

राघवजी बाण धरेंगे जब कर राघवजी बाण धरे गे ॥ अब रघुवीर धीर वनचरको कपिदल कोटि चढेंगे ॥ टेक ॥ जा सागरको गर्व करतहे तापर शिला तिरेंगे ॥ कंचन कोट महल

अरु मंदिर थरहर धरणि परेंगे ॥ १ ॥ मेघनाद से पुत्र तुम्हारे वे नाहिं धीरधरेंगे ॥ वीसभुजा दशमस्तक तुम्हरे एकहि वाण हरेंगे ॥ २ ॥ कहत मंदोदरि सुन पिया रावण रघुवर नाहिं फिरेंगे ॥ सन्मुख हो मिलो अग्रके स्वामी कोटिक विघ्न हरेंगे ॥ ३ ॥ १९ ॥

शरण तुम्हारी आयो कुटुम तजि शरण तुम्हारी आयो ॥ त्राजि गढ़लंक महल अरु मंदिर नाम सुनत उठिधायो ॥ टेक ॥ भरी सभामें रावण बैठो हरिहरि लात चलायो ॥ मूरुख बंधु कह्यो नहि माने वार वार समुझायो ॥ १ ॥ आवतही लंकापति कीन्हो हरि हँसि कंठलगायो ॥ जन्म जन्मकी मिटीहै पीरा राम दरश जब पायो ॥ २ ॥ श्रीरघुनाथ अनाथ के बंधू दीन जानि अपनायो ॥ तुलसिदास रघुवरजीके शरण भक्ति अभय पद पायो ॥ ३ ॥ २० ॥

रामकी ध्वजा फहरानी अव देखो रामकी ध्वजा फहरानी ॥ टेक ॥ ढलकत ढाल फरकत नेजा गरद उडी अशमानी ॥ लछमन वीर वालिसुत अंगद हनूमान अगवानी ॥ १ ॥ कहत मंदोदरि सुन पिया रावण त्रिभुवनपतिसो ठानी ॥ जा सागरको गर्व करतहै तापर शिला तिरानी ॥ २ ॥ तिरिया जाति बुद्धिकी ओछी उनहुँकी करत वडाई ॥ ध्रुवमंडलसो पकरि मँगाऊँ वे तपसी दोउ भाई ॥ ३ ॥ हनूमानसे पायक उनके लछमन से वलभाई ॥ जरति अग्निमें कूदि परतहै कोट गिनै नाहिं खाई ॥ ४ ॥ मेघनाद से पुत्र हमारे कुंभकर्ण

बलभाई ॥ एक वेर सन्मुख होय लड़हूं युग युग होत बड़ाई ॥ ५ ॥ कहत मंदोदरि सुन पिया रावण तू मेरी एक न मानी ॥ रैनिको स्वप्ना ऐसो भयोहे सोने कि लंक जरानी ॥ ॥ ६ ॥ यक लख पुत्र सवा लख नाती मौत आपनी ठानी ॥ अग्रके स्वामी गढलंका घेरी अजहुं न चेत्यो अभिमानी ॥ ७ ॥ २१ ॥

कहत मंदोदरि सुन पिया रावण यह बुधि किन सिखलाई ॥ कर्महीन मति भई तुम्हारी त्रिया हरीहै पराई ॥१॥ अब गढ फिरि हो राम दोहाई ॥ टेक ॥ त्रिया जाति बुद्धिकी ओछी उनहुं कि करत वडाई ॥ कटक सहित हम बांधि ले आऊं वे तपसी दोउ भाई ॥ २ ॥ कंचन कोट देखि मति भूलो सात समुद्र सीखाई ॥ अंजनिपुत्र महाबल वीरा सोने कि लंक जराई ॥ ३ ॥ बीस भुजा दश मस्तक हमरे सौ योजन चकलाई ॥ सवालाख रखवार हमारे कुंभकर्ण बलभाई ॥४॥ कटक जोडके पार उतरहैं दल बल सिंहा भाई ॥ तुलसिदास रघुवरजीके शरणा लंकविभीषण पाई ॥५॥२२॥

रघुनन्दन प्रभु आवै देखो माई रघुनंदन प्रभुआवै ॥ उपवन बाघ शिकार खेलिके चढे तुरंग नचावै ॥ टेक ॥ क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल उर वनमाल सुहावै ॥ कटि तरकस पटपीत लपेटे कर कुहि बाज उडावै ॥ १ ॥ चतुरंगी सेना सँग सोहै पंचरंगी ध्वजा फहरावै ॥ बजत निशान भेरि सहनाई गगन गरद उडिआवै ॥ २ ॥ गंधर्व गावत और विद्याधर गाय

प्रभुहि रिझावै ॥ जयजयकार करत ब्रह्मादिक पुष्प वरषि झर लावै ॥ ३ ॥ अवधपुरीकी वधू निहारे हरखि निरखि सुख पावैं ॥ मात कौशल्या करत आरती अग्रदास गुणगावैं ॥ ४ ॥ २३ ॥

राजत भूमि कनककी अयोध्या राजत भूमि कनककी ॥टेक॥ रंगभुवन राजत रघुनंदन सँग लिये सुता जनककी ॥ रवि शशि कोटि उदित हम देखे जोड़ी बनी है बनत की ॥ १ ॥ ठुमक ठुमक अंगनामे डोले रुनुक झुनुक नूपुर बाजें ॥ मात कौशल्या करत आरती जैजैजैरघुवरकी ॥ २ ॥ सीता राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन सन्मुखहै हनुमान जती ॥ कृपासिंधु कहां लगि वर्णौं महिमा अवध नगरकी ॥ ३॥ २४॥

पवनकुँवर सुखदानी भजो मन पवनकुँवर सुखदानी ॥ सब सुखसागर नागर प्यारे रहिस भक्ति उरखानी ॥ टेक ॥ सदा सहायक सब गुण लायक बोलत अमृत बानी ॥ कृपा निवासि परमगुरु मेरे धरे शीशकर पानी ॥ १ ॥ २५ ॥

राम कृष्ण अवतार मनोहर जनम जनम यश गाऊं ॥ भक्ति न छाँड़ूं मुक्ति न मांगूं हरि यश सुनहुं सुनाऊं ॥ टेक ॥ गंगाजल अस्नान कराऊं पीतांबर पहिराऊं ॥ तुलसी आनि गोपालहि पूजूं चंदन चरचि चढ़ाऊं ॥ १ ॥ चुनि चुनि कलियन हार बनाऊं रघुवर उर पहिराऊं॥धूप दीप नैवेद्य आरती याविधि लाड लडाऊं ॥२॥ हरषि निरखि हरिके गुण गाऊं हाथमे ताल बजाऊं ॥ भनत नामदेव सुनोहो तिलोचन या विधि दास कहाऊं ॥ ३ ॥ २६ ॥

मथुरामें हरि जन्म लियोहै तीनलोक उजियारो ॥ केश पकरि हरि कंस पछारे जीत्योहै मल्ल अखारो ॥ १ ॥ यशुदा मैया देखतको कान्हवारो ॥ टेक ॥ निर्मल जल यमुनाजीको कीन्हो गहिलायो अहिकारो ॥ फनपर निरत करत मनमोहन सुंदर श्याम दुलारो ॥ २ ॥ अति सुकुमार कमलहुते कोमल गिरिगोवर्द्धन धार्‍यो ॥ डूबतसो ब्रज राखि लियोहै मेट्यो है इंद्रको गारो ॥ ३ ॥ हैकोइ बड़ो देव देवनमे यशुमति पुत्र तुम्हारो ॥ ब्रह्मदास संतनको सरवस जीवन प्राण हमारो ॥ ४ ॥ २७ ॥

काहे न मंगल गावै यशोदा मैया काहे न मंगल गावै॥पूरण-ब्रह्म अखिल अविनाशी सो तेरि धेनु चरावै ॥ टेक ॥ कोटि कोटि ब्रह्मांड को करता जप तप ध्यान न आवै ॥ नाजानों ये कौन पुण्यसो यशुमति गोद खिलावै ॥ १ ॥ शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक निगम नेति यशगावै ॥ शेष सहस्रमुख रटत निरंतर सो वाको पार न पावै ॥ २ ॥ सुंदर वदन कमल-दललोचन गोधनके सँग आवै ॥ मात यशोदा करत आरती कबीरा दरशन पावै ॥ ३ ॥ २८ ॥

ब्रजललना दुखमोचन माई ब्रजललना दुख मोचन ॥ गो-धन संग पुनीत मुरलि कर तिलक दीप गोरोचन ॥ टेक ॥ आगे आगे धेनु पिछे नँदनंदन कर गहे कमल फिरावे ॥ वाल गोपाल नंदजीको ढोटा मधुरिसि वेणु वजावे ॥ १ ॥ कटिपर लाल काछनी काछे ओढे है पीत पिछोरी ॥ आपन हँसत हँ-

सावत ग्वालन राग अलापत गौरी ॥२॥ तुलसीको पत्र हुप की माला गुँथि ग्वालन पहिरावे ॥ मोर मुकुट पीतांवर सोहे कुंडल झलकत आवे ॥ ३ ॥ वरपत पुष्प देव मुनि हरपे मोही हैं व्रजकी नारी ॥ कृष्णदास स्वामी रसिक मुकुटमणि लाल गोवर्द्धनधारी ॥ ४ ॥ २९ ॥

आवत गावत गौरी वनहुंते आवत गावत गौरी ॥ग्वालवाल सव संग सखा लिये ढोटा यशुमति गौरी ॥ टेक ॥ व्रजकी वधू अटा चढि निरखे रूप देखि भई भोरी ॥ आवत देखे श्याम मनोहर पुष्पमाल ले दोरी ॥१॥मोर मुकुट पीतांवर सोहे शिर चंदन की खोरी ॥ नंददास प्रभु तुम्हरे दरशको आनँद उमँड रहोरी ॥ २ ॥ ३० ॥

सुनि मुरली की टेर झुकरही सुनमुरली की टेर ॥ पनियाके मिसनिकसी अवरी गौआवनकी वेर॥टेक॥गज गति चाल चलत मृग नयनी चपल नयन चितहेर॥आज कि शोभा मोपै वरणि न जाई श्यामघटा घनघेर॥१॥ सासु पुछतहै सुनुरि वहुरिया कहाँ लगाई वेर ॥ परमानंद स्वामि मिले है खरिकमे ताते भई अवेर॥२॥३१॥वंशी कौन वजावे द्वारे मेरे वंशी कौन ववजावै॥ नइनई तान कहत मुरली मे ठाढो गौरी गावै ॥ टेक ॥ चलोरी सखी वाको मुख निरखे नंदजी कि धेनु चरावै ॥ मोर मुकुट पीताम्बर सोहै मोहनलाल कहावै ॥१॥ कहा कहूं कछु कहत वनिय ना अवहुंक मन ललचावै ॥ सांवारे सखि सोई वडिभागिन हरि हँसि कंठ लगावे ॥ २ ॥ ३२ ॥

क्यो ठाढी नँदपोरीरि ग्वालिनि क्यो ठाढी नंदपोरी॥टेक॥ वेर वेर इत उत फिरि आवे विजया खाइ भइ भोरी ॥ नंदनँदन जीसूं कौन कामहे हमसों क्यो न कहोरी ॥१॥ सुंदर श्यामसलोने से ढोटा उन दधि लेन कहोरी ॥ हमसो कह्यो तुम नेक खड़ी रहो आपन वेठ रहोरी ॥ २ ॥ नौ लख धेनु नदबाबाके तेरोहि लेन कहोरी ॥ जोवनमाती फिरति ग्वालनी तू मेरो लाल ठगोरी ॥ ३ ॥ इतनी सुनत निकसि आये मोहन दधिको मोल कहोरी ॥ परमानँद स्वामि रूप लुभाने यो दधि भलो विकोरी ॥ ४ ॥ ३३ ॥

वेर वेर क्यो आव एरी भटू वेर वेर क्यो आवै ॥ मनमोहन से हेतु कहाहै मोहिन क्यो न बतावै ॥ टेक ॥ दीपक बारि द्वार मंदोकारि फेर बारन को धावे ॥ हृदय ऑधियारो उजियारो चाहे सो दीपक मनलावे ॥१॥ मणिमाला ले अपने करसो तोर मोर दिखरावे ॥ बीनन मिस मोहन मुख निरखत ऐसहि पहर वितावे ॥ २ ॥ कहत गोपिका सुनहु महारिजू वरज्यो मोहिं न भावै ॥ परमानंद प्रभू बिन देखे पलक पलक युग जावै ॥ ३ ॥ ३४ ॥

तू मेरी गेद चुराइरी ग्वालनि तू मेरी गेद चुराई ॥ अबहीं आन परी तेरे अँगना ऑगिया बीच छिपाई री ॥ टेक ॥ रहो लालजी झूठ मति बोलो ऑगिया तकत पराई ॥ जो ऑगिया बीच गेद ना निकसे मुरली लेहुं छिनाई री ॥१॥ ठाढे बात करत राधेसो इतमे यशोदा मैया आई ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे दरशको एक गई दो पाईरी ॥ २ ॥ ३५ ॥

मोहन मैया मैया कहन लागे मोहन मैया मैया ॥ नंदरायजी सो बाबा बाबा हलधरजीसो भैया ॥ टेक ॥ दूरखेल न जनि जाहु लालजी मारेगी काहुकि गैया ॥ सिंह पौरिपर ठाढि यशोदा टेरत नाम कन्हैया ॥ १ ॥ खेलत फिरत सकल गोकुल मे घर घर बजत बधैया ॥ मदनमोहनजीकी या छबिपर परमानंद बलिजैया ॥ २ ॥ ३६ ॥

नमो नमो वृषभानुलली अति कमनीय मध्य विराजत आस पास बहुरास चली ॥ टेक ॥ मुकुट तमाल तांड मोहनको रूप सरोवर कुसुम कली ॥ मानो शरदरयनि उडुगणसँग उपजत गत बहु भांति भली ॥ १ ॥ मान गुमान भरी अवलोकत कुंज भवन कूं जातचली ॥ तीन लोक यह हरि वश कीनो तब वश कीनो श्यामबली ॥ २ ॥ या रसरीत जेहि पहिचानै जिन गह पाई प्रेमगली ॥ गौर श्याम छबि निरखि नयनभरि युगलछकें कोउ कोउ अमली ॥ ३ ॥ ३७ ॥

श्याम राधिका रानि हमारे श्याम राधिका रानी ॥ चारि पदारथ करत मजूरी मुक्तिभरै जहँ पानी ॥ टेक ॥ कर्म धर्म जहँ बटत जेवरी घरछावै ब्रह्मज्ञानी ॥ योगी यती तपी संन्यासी उनहू मरम न जानी ॥ १ ॥ पढ़ेहे वेद पुराण लगनिया कथि निरगुनियाबानी ॥ घर घर प्रेम भक्ति की महिमा गावत व्यास बखानी ॥ २ ॥ ३८ ॥

हरि आये आनँद भयो माई ॥ प्रभु आये आनँद भयो माई ॥ टेक ॥ चलोरी सखी मिलि देखन जैये नंद महरजीके

कुँवर कन्हाई ॥ १ ॥ गोपी ग्वाल करत कौतूहल घर घर बजत आनंदवधाई ॥ २ ॥ सांवरे वदनपर रज लिपटानी लै अंचलाझार नंदरानी ॥ ३ ॥ कंचनथार कपूर कि बाती हरि, आये शीतल भइ छाती ॥ ४ ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहे मुरलि कि शोभा वरणि नहि जाई ॥ ५ ॥ जय जयकार करत सुरपुरमे पुष्पनकी वर्षा वरषाई ॥ ६ ॥ मात यशोदा करत आरती चोवा चंदन पुष्प चढाई ॥ ७ ॥ अंग अंगकी या छवि निरखत खेमदास प्रभुकी बलिजाई ॥ ८ ॥ ३९ ॥

मैया मोहि दाऊने बहुत खिझायो॥मोहि कहत तोको मोलको लीन्हो कब यशुमति तोहि जायो ॥ टेक ॥ गोरे नंद यशोदा गोरी तुम तो श्यामललैया ॥ तारी दैदै ग्वाल खिझावे सैन देत बलभैया ॥ १ ॥ जा बलदेव छोंडदे चौवाई मिथ्या वादि झुठैया ॥ सूरदास प्रभु गोधनकी सोंह तुम मेरे पूतरु मै तोरी मैया ॥ २ ॥ ४० ॥

मेरी सुधि लीजो हो व्रजराज दीजै दरश विमल मनकीजै क्षण क्षण होत अकाज ॥ टेक ॥ कछुककृपा प्रभुकाल करोगे सो कछु कीजे आज ॥ वृंदावन प्रभु छयल छबीले बांहगहेकी लाज ॥ १ ॥ ४१ ॥

राम भजन कर भाई अब तू राम भजन कर भाई ॥ टेक ॥ घड़ी घड़ी घंटावलिबाजे पहर दुपहर संझाई ॥ रामभजन बिनु वृथा जातहै कालनिशान बजाई ॥ १ ॥ जाकी आश करतहै आगे मनुष्य देह ना पाई ॥ करना तोसो कियो कछु नाहीं अबकर भजन सवाई ॥ २ ॥ जो यह औसर चूक्यो

पाँवर तो फेर नाहिं भलाई ॥ लख चौरासी योनिके माहीं भटकतही मरिजाई ॥ ३ ॥ विनु हरिभजन भलो नहिं तेरो सत्य कहुं राम दुहाई ॥ रामहि राम कहो निशि वासर अतिशय प्रीति बढाई ॥ ४ ॥ नानकदास राम भज भाई हित चित अतिलवलाई ॥ ऐसेहि संत पुकारि कहतहै दोनो भुजा उठाई ॥ ५ ॥ ४२ ॥

रामचरित्र सुन काना मनरे तू रामचरित्र सुन काना ॥ सनकसनंदन सनतकुमारा नारदजाइ बखाना ॥ टेक ॥ यही चरित्र उमापति गायो गुप्त प्रकट करि ज्ञाना ॥ याज्ञवल्क्य कहि भरद्वाज सो तीरथराज सुठाना ॥ १ ॥ बालपने गायो ध्रुव राजा सुनि नारदको ज्ञाना ॥ रामनामकी यह प्रभुताई गणिका चढीहै विमाना ॥ २ ॥ कागभुशुंड कह्यो खगपतिसो निश्चय निर्णय ठाना ॥ काम क्रोध मद लोभ निवारण आलस उर नहि आना ॥ ३ ॥ ऋषीकृपाते सवरिने गायो अगम न प्रभुको जाना ॥ प्रीति हेत सवरी फल खाये पहुँचाई निज धामा ॥ ४ ॥ यही चरित्र विभीषण गायो वैर बंधुसो ठाना ॥ लंका तजो भजो सीतापति मिलि हो रामसो आना ॥ ५ ॥ राम नामकी महिमा मोटी मन मेरे अनुमाना ॥ तुलसीदास धन्य वह साधो गावहिं वेद पुराना ॥ ६ ॥ ४३ ॥

रामनाम निस्तारे जप तप राम नाम निस्तारे ॥ साठि घड़ीमे एक घड़ी भज सोई सकल अघ जारे ॥ ॥ टेक ॥

काशीपुरी बसत गौरीपति निशि दिन नाम उचारे ॥ कीट पतंग सुनत गति पावे रघुकुल यश विस्तारे ॥ १॥ अजामील गणिका के वासी सुतहित नाम उचारे ॥ गज अरु गीध तरे हरि सुमिरन महिमा वेद बखाने ॥ २ ॥ परम पुनीत नाम रघुवरको हरिजन हरि रस धारे ॥ नामदेव सोइ संत शिरोमणि चितसों पल न विसारे ॥ ३ ॥ ४४ ॥

गोविंद गुणा गोपाल गुणा गाय लेरे तू गोविद गुना ॥ ऐसो समय बहुरि नहिं पैहो फेर पछितैहो मेरे मना ॥ टेक ॥ अधम तरे अधिकार भजनसो जोइ जोइ हरिशरना ॥ नापतिआव तो साखि बताऊँ अजामील गणिका सदना ॥ जो तोको तन मन धन दीन्हो नयन नासिका मुख रसना ॥ जाको रचत मास दश लागे ताहि न सुमिरो एक छिना ॥ १ ॥ बालापनमे खेल गमायो तरुण भयो जब रूपभना ॥ वृद्ध भयो तब आलस उपज्यो माया मोह भयो मगना ॥ २ ॥ धन यौवन अंगलीको जल ज्यो घटत जात पल छिना छिना ॥ यो जिव जानि भजो रघुनंदन नामदेव आय हरिशरना ॥ ३ ॥ ४५ ॥

साधनके वशभाई हरि जी भक्तनके वशभाई ॥ जाति पांति कुल जानत नाहीं लोक करत चतुराई ॥ टेक ॥ सबरी जाति भीलनी होती झूठे बेर ले आई ॥ प्रीति जानि वाके फल खाये तीनलोक बडियाई ॥ १ ॥ करमा कौन अचार सु कीन्हो हरिसों प्रीति लगाई ॥ छप्पनभोग पिछे आरोगे पहिले खीच-

ड़िपाई ॥ २ ॥ नामा पीपा अरु रैदासा उनहुन प्रीतिलगाई ॥ सैन भक्त होइ मरदन कीन्हो आप भये हरि नाई ॥ ३ ॥ सहस-अठासी जंगम होते तौभी शंख नहि बाजा ॥ कहत कबीर श्वपचके जीमे शंख मगनहोइ गाजा ॥ ४ ॥ ४६ ॥

रामचरण सुखदाई भजो मन रामचरण सुखदाई ॥ टेक ॥ जिन चरननसो निकसि सुरसरी शंकर जटा समाई ॥ जटा शंकरी नाम धरचो है त्रिभुवन तारन आई ॥ १ ॥ जिन चरण-नकी चरण पादुका भरत रहे ल्वलाई ॥ जो केवट कटडिम धोइ लीन्हो तव हरि नाव चढाई ॥ २ ॥ दण्डकवन प्रभु पाव-नकीन्हो ऋषियन त्रास मिटाई ॥ जो ठाकुर त्रय लोक के स्वामी कपट कुरंगसँगधाई ॥ ३ ॥ कपि सुग्रीव बंधुभय व्याकुल जा शिर छत्र फिराई ॥ रिपुको अनुज बिभीषण भेट्यो परशत लंकापाई ॥ ४ ॥ शिव सनकादिक और ब्रह्मा दिक निगम नेति यशगाई ॥ तुलसिदास मारुतसुत महिमा हरि आपन मुखगाई ॥ ५ ॥ ४७ ॥

सरवस भगवतगीता हमारे धन सरवस भगवत गीता ॥ गाइ गाइ रघुनाथ रिझाऊं हरि जनहरि रस पीता ॥ टेक ॥ श्रीमुख वचन सुनत कुंतीसुत मन आई परतीता ॥ या गीताके पराकरमते दुर्योधनदल जीता ॥ १ ॥ जोनर गीता पठन करतहैं जगमें रहत अतीता ॥ उनको कहा मुक्तिको संशय तारे है कुटुम सहीता ॥ २ ॥ तीनलोक और भुवन चतुर्दश वेद पुराण

मथिलीता ॥ हृषीकेश प्रभु अब मोचनको सद्गुरु दियो है पलीता ॥ ३ ॥ ४८ ॥

रुनुझुनु रुनुझुनु राम कुँवर आवै हाथ धनुष करवाण चलावै रुनुझुनु रुनुझुनु रामकुँवर आवै ॥ टेक ॥ कनकचौक बिच खेलत ललना संग सखा बहु बाल सुहावै ॥ १ ॥ क्रीट मुकुट पर कलँगी राजे मधुर हास मन मोदबढावै॥२॥श्याम वदन पर पीत झँगुलिया अरुण वरण वनमाल सुहावै ॥ ३ ॥ उभय भुजाकर सारंग राजे कटिपर किंकिणि अधिक सुहावै ॥ ४ ॥ मात कौशल्या साज आरती रामललाजीको टेर बुलावै ॥५॥ भरत शत्रुहन संग लिये ललना लछिमन कुँवर सुचँवर डुरावै ॥ ॥ ६ ॥ मात कौशल्या करत आरती सुर नर मुनिजन लीला गावै ॥ ७ ॥ कृष्णदास लला माधुरी सी मूरत तीनलोक मे नाच नचावै ॥ ८ ॥ ४९ ॥

रुनुझुनु रुनुझुनु गोविंद आवै ॥ हरिके हाथ बीन मुख मुरली सुंदर सुरन बजावै ॥ रुनुझुनु रुनुझुनु गोविदआवै ॥ ॥ टेक ॥ दूर खेलन जिन जावो प्यारे ललना साँझ परी घर आवो प्यारे ललना ॥ १ ॥ देवकी के छैया बलभद्र जीके भैया नंदमहरजीके कुँवर कन्हैया ॥ २ ॥ देवकीके अँगनामे तुलसीको बिरवा यशुमति अंगना में खेलो प्यारे ललना ॥३॥ यमुनाके नीरतीरे धेनु चरावैं गौवनके संग निरत करि आवै ॥ ४ ॥ कहत कबीर मेरे रवना भवना तीन लोक रमि रहो प्यारे ललना ॥ ५ ॥ ५० ॥

कबहुँ न लागै काई राम धन कबहुँ न लागै काई ॥ खर-
चत खात घटै ना कबहूं दिन दिन बढत सवाई ॥ टेक ॥ अ-
गिनि न जरै नृपति न दंडै धरणी धरो न जाई ॥ गुरुपरताप
साध की संगत भाग्य बडे बनिआई ॥ १ ॥ शारद शेष महेश
कीर मुनि नारद कीरति गाई ॥ ताही को तू भजले प्राणी
जिन जलते जुगत बनाई ॥ २ ॥ नाम जहाज सद्गुरू
खेवइया भवसागर तर भाई ॥ रामजीको छॉडि और जो
याचो तो नामदेव जी रामदोहाई ॥ ३ ॥ ५१ ॥

रामरत्न धन पायो मनरे श्रीरामरत्न धन पायो॥निरखि निहारि
विचारि रैनि दिन भाग्यउदय ह्वै आयो ॥ टेक ॥ निर्भय नाम
वेदमे गायो शिव अरु शेष सरायो ॥ ब्रह्मा इंद्र कुबेर आदिदे
तंत नाम ठहरायो ॥ १ ॥ जब प्रहलाद गर्भमे होते नारद
ज्ञान सुनायो बाहिर निकरे बिसरे नाहीं खंभ फोरि हरि
आयो ॥ २ ॥ अंबरीष द्वादशि व्रत पाले ऋषी शरा-
पन आयो ॥ भक्त भीरको दियो सुदर्शन तीनलोक भरमायो
॥ ३ ॥ गजकी टेर सुनी जब श्रवणन पाउँ पयादे धायो ॥
सेवादास वर्णै का महिमा चेरो घरको जायो ॥ ४ ॥ ५२ ॥

वंदौ चरण सरोज तुम्हारे ॥ सुंदर श्याम कमलदललोचन
ललित त्रिभंगी प्राणहमारे ॥ टेक ॥ जे पदपद्म सदाशिवको
धन सिंधुसुता चाहत उर धारे॥तिपदपरशपरम जल पावन सुर
सरि दरश कटत अघभारे ॥ १ ॥ जे पदपद्म परशि ऋषि

पती प्राण शिलामय छिनमे उधारे ॥ ते पदपद्म तात रिपु त्रासत मन क्रम वचन प्रहलाद उवारे ॥ २ ॥ जेपद परम परशि जभामिनि तन तन मनदे सुत सदन विसारे ॥ ते पदपद्म रमणवृंदावन अहि शिरधरि अगणित रिपु मारे ॥ ३ ॥ जे पदपद्म गवन कौरव गृह दूत भये सब काज समारे ॥ तेपद पद्म सूर सुखकारी त्रिविध ताप दुखहरन हमारे ॥ ४ ॥ ८३ ॥

अथ मंगलसंध्याआरतीके.

दोहा ।

श्रीगुरुचरणसरोजरज, निजमनमुकुरसुधार ॥ वरणौरघुवर विमल यश, जो दायक फल चार ॥ १ ॥ मंगलमणि मर्याद मणि, सकल धर्ममणि धीर ॥ ऋधिवर सिधिवर मुक्तिवर, सीतावर रघुवीर ॥ २ ॥ सुमिरण ऐसो चाहिये, जाको धरिये ध्यान ॥ सत त्रेता द्वापर कली, चारो युग परमान ॥ ३ ॥ एक बूंद सरिता बहे, भिन्न भाव नहि होय ॥ संत मिले भगवानसो, मिलि गावे सब कोय ॥ ४ ॥ राम नाम मणि दीप धरु, जीभ देहरी द्वार ॥ तुलसी बाहिर भीतरो, जो चाहे उजियार ॥ ५ ॥ राम कथा मंदाकिनी, चित्रकूट चित चारु ॥ तुलसी सुभग सनेहवन, सिय रघुवीर विहारु ॥ ६ ॥ कर गहि धनुप चढाइये, थकित भये सब भूप ॥ मग्न भई श्रीजानकी, देखि रामको रूप ॥ ७ ॥ राम वाम दिशि जानकी, लपण दाहिनी ओर ॥ ध्यान सकल कल्याणमय, तुलसी सुर

तरु तोर ॥ ८ ॥ रामचंद्र मुख चंद्रछवि, लोचन चारु चकोर ॥ करतपान सादर सकल, प्रेम प्रमोदनथोर ॥ ९ ॥ बार बार वर माँगिहो, हर्षि देउ श्रीरंग ॥ पद सरोज अनपावनी, भक्ति सदा सतसंग ॥ १० ॥ बिनु सतसंगति हरिकथा, बिना भक्ति नहिं भाग, मोह गये बिनुरामपद, होय न दृढ अनुराग ॥ ११ वार वरोवर वारहै, तापर परत विहार ॥ रघुवर पार उतारि है, अपनी ओर निहार ॥ १२ ॥ चित्रकोटसे कोट नहिं, अवध धामसे धाम ॥ सुंदरवन से वन नही, श्रीराम नाम से नाम ॥ १३ ॥ अवध धाम धामापती, अवतारन पतिराम ॥ ऋधि सिधि पति सब जानकी, नामनमे हरिनाम ॥ १४ ॥ वृंदाव न वानिकवन्यो, भँवर करत गुंजार ॥ दुलहिन प्यारी राधिका, दूल्हो नंदकुमार ॥१५॥ मोर मुकुट कटि काछनी, करमुरली घनघोर ॥ वृंदावन की कुंजमे, जय जय जुगल किशोर ॥ ॥ १६ ॥ मोर मुकुट की लटकपै, अटकि रहे दृगमोर ॥ कुंजभवन श्रीराधिका, जय जय जुगल किशोर ॥१७॥ राधेजीके वदन पर, बिंदी शोभा देत ॥ मानो फूली केतकी, भँवरवास-नालेत ॥१८॥ वृंदावनके कुंजमे, मुक्ति परी बिललाइ ॥ मुक्तिक है गोपालसो, मेरी मुक्ति बताय ॥ १९ ॥ वृंदावनके वृक्षको, मर्म न जाने कोइ ॥ एक पत्र सेवा करे, रूप चतुर्भुजहोइ ॥ ॥ २० ॥ वृंदावनको चूहरो, आनदेशको भूप ॥ वाकी सरवर को करे, वेचि खातेहै शूप ॥ २१ ॥ वृंदावनसे वन नहीं, नंद-

गांवसे गाम ॥ वंशीवटसे वट नही, श्रीकृष्ण नाम से नाम ॥ ॥ २२ ॥ चलोसखी तहँ जाइये, जहाँ वसे व्रजराज ॥ गोरस वेचत हरि मिलैं, एक पंथ दोइ काज ॥ २३ ॥ कहा कहुं छवि आजकी, भले विराजे नाथ ॥ तुलसी मस्तक जव नवै, धनुष बाणलेउहाथ ॥२४॥ कित मुरली कित चंद्रिका,कित गोपिनकोसाथ ॥ अपने जनके कारणे, श्रीकृष्णभये रघुनाथ ॥२५॥ सगुन तो सूरा कथै,निर्गुण कथै कवीर॥रामरत्न तुलसी कथैं,जय जय सिय रघुवीर ॥२६ ॥ मोमे गुण कछुहै नही, तुम गुण भरे जहाज॥गुण अवगुण न विचारिहो, प्रभु बांह गहे की लाज२७ यथासो अंजन आंजि दृग, साधक सिद्धसुजान ॥ कौतुक देखहिं शैलवन, भूतल भूरि निधान ॥ २८ ॥ जा घर गीता न भागवत, साधु नही सनमान॥ ताघर यम डेरादिये, सांझहि भये मशान ॥ २९ ॥ वंदो तुलसीदास पद, युगल कमल करजोर ॥ जेहि वरण्यो रघुनाथयश, भाषा निगम निचोर ॥ ३० ॥ कहा कहूंकी संपती, कहा कहूंको मोह ॥ तुलसी सीधी चाहिये, सीतापतिकी भोह ॥ ३१ ॥ एक छत्र यक मुकुट मणि, सव वर्णन पर जोय ॥ तुलसी रघुवर नामके वरण विराजत दोय ॥ ३२॥ कोटिक तीरथ कामता, कोटिक रासविलास॥रजधानी रघुनाथकी, गावै तुलसीदास ॥ ३२ ॥

अथ आरतीमंगलकी.

आरती कीजै राजा रामचंद्र जीकी हरि हरि दशरथ कौसल्या सुवन सियपीकी ॥ टेक ॥ पहिली आरती पुहुपकि माला ॥

कालीनाग नाथ लाये कृष्णगोपाला ॥ १ ॥ दूसरि आरति देवकिनंदन ॥ असुर संहारन कंस निकंदन ॥ २ ॥ तीसरि आरती त्रिभुवन मोहे ॥ गरुड सिंहासन सीतारामजीको सोहे ॥ ३ ॥ चौथि आरती चहुँदिशि पूजा ॥ देवनिरंजन स्वामि और न दूजा ॥ ४ ॥ पांचवि आरती रामजीको भावे ॥ रामजीको हरि यश नामदेवजी गावे ॥ ५ ॥ १ ॥

आरती कीजे हनुमान जी ललाकी ॥ हरि हरि दुष्टदलन रघुनाथ कलाकी ॥ टेक ॥ जाके बलसे गिरिवर कंपे ॥ रोग दोष जाके सेवन झंपे ॥ १ ॥ अजनीपुत्र महा बलदाई ॥ साधन सेवक सदा सहाई ॥ २ ॥ दे बीडा रघुनाथ पठाये ॥ लंका जाय सिया सुधिलाये ॥ ३ ॥ लंकासे कोट समुद्रसी खाई ॥ जात पवनसुत वार न लाई ॥ ४ ॥ लंका जारि असुर सब मारे ॥ राजा रामजीके कारज सारे ॥ ५ ॥ पैठ पताल तोड़ि यमकातर ॥ महिरावणकी भुजा उखारे ॥ ६ ॥ लछमन मुरछिपड़े धरणीमे लाय सजीवन प्राण उबारे ॥ ७ ॥ बांई भुजा सब असुर संहारे दहिनी भुजा सब साध उबारे ॥ ८ ॥ कंचनथार कपूर सुहाई आरती करत अंजनी माई ॥ ९ ॥ सुर नर मुनि जन आरति उतारे॥ जय जय जय हनुमानजी उचारे ॥ १० ॥ घंटा ताल पखावज बाजे ॥ जगमग ज्योति अवधपुर राजे ॥ ११ ॥ जो हनुमान् जीकी आरति गावै ॥ बसि बैकुंठ बहुरि नहिं आवै ॥ १२ ॥ लंका विध्वंसन सिया रघुराई ॥ तुलसिदास प्रभु आरती गाई ॥ १३ ॥ २ ॥

आरती बुधकी ।

आरति जुगलकिशोर कि कीजे॥आछे तन मन धन नवछावर दीजै ॥ टेक॥ गौर श्याम मुख निरखत लीजै॥हरिको स्वरूप नयन भर पीजै ॥१॥ रवि शशि कोटि वदनकी शोभा ॥ताहि निरखि मेरो मन लोभा ॥ २ ॥ ओढे नील पीत पट सारी ॥ कुंज विहारिन लालविहारी ॥ ३ ॥ फुलन कि सेज फुलन वन माला॥रत्नसिंहासन बैठे नँदलाला॥४॥ मोरमुकुट कर मुरली सोहे ॥ नटवर कला निरखि मनमोहे ॥ ५ ॥ श्रीपुरुषोत्तम गिरिवरधारी॥आरति करत सकल व्रज नारी ॥६॥ नंदनँदन वृषभानुकिशोरी ॥ परमानँद प्रभु अविचल जोरी ॥ ७॥३ ॥

आरती बृहस्पतिकी ।

जय जय आरती रामजी तुम्हारी॥ हरि हरि रामदयालु भक्त हितकारी ॥ टेक ॥ जनहित प्रगटे हरि व्रतधारी ॥ जन प्रह-लाद प्रतिज्ञा पारी ॥ १ ॥ द्रुपदसुताको चीर बढाये ॥ गजके काज पियादेइ धाये ॥ २॥ दशशिर छेदि बीस भुज तोड़े ॥ सुर तेतीस देव वँदि छोड़े ॥ ३ ॥ छत्रग्रहण कर लछमन भ्राता ॥ आरति करत कौशल्या माता ॥ ४ ॥ शुक शारद नारदमुनि गावै ॥ भरत शत्रुहन चमर ढुरावै ॥५॥ रामजीके चरणगहे हनुवीरा ॥ ध्रुव प्रहलाद वालिसुतवीरा ॥ ६ ॥ सीता-रामजी अयोध्या आये ॥ सब संतन मिलि मंगल गाये ॥ ७ ॥ रावणजीति राम घर आये॥रामानंद स्वामि आरति गाये८॥४॥

आरती शुक्रवारकी ।

आरती लछमन बालजतीकी । हरिहरि असुर सँहारन रघु वर प्राणपतीकी ॥ टेक ॥ जगमग ज्योति जगतपर राजें ॥ शेषाचलपर लछमन आप विराजै ॥ १ ॥ घंटा ताल पखावज बाजें ॥ कोटि देव मुनि आरति साजै ॥ २ ॥ क्रीट मुकुट कर धनुप विराजै ॥ तीनलोक जाकि शोभा राजै ॥३॥ आरती कीजे जैसे तैसे ॥ ध्रुव प्रह्लाद विभीपण जैसे ॥४॥ कंचन थार कपूर सुहाई ॥ आरति करत सुमित्रा माई ॥ ५ ॥ प्रेम मगन-होइ आरति गावै ॥ बसि वैकुंट बहुरि नहि आवै ॥ ६ ॥ भक्त हेतु हरि लाड लडाये ॥ जन घनश्याम परमपद पाये ॥ ७॥५॥

आरती शनिवारकी ।

आरती कीजे नृसिंहकुंवरकी हरिहरि वेद विमल यश गावै मेरे प्रभुजीकी ॥ टेक ॥ पहिली आरती प्रह्लाद उबारे ॥ हरिणाकुश नख उद्रविदारे ॥१॥ दूसरि आरती वामन सेवा ॥ बलिके द्वार पधारे हो देवा ॥२॥ तीसरि आरती ब्रह्मापधारे ॥ सहस्राबाहुके कर संहारे ॥ ३ ॥ चौथि आरती असुर संहारे ॥ भक्त विभीपण लंका पधारे ॥ ४ ॥ पांचवि आरति कंस पछाड़े ॥ गोपी ग्वाल सखा प्रतिपाले ॥ ५ ॥ तुलसीको पत्र कंठ मणि हीरा ॥ हरपि निरखि गावै दास कबीरा ॥ ६ ॥ ६ ॥

आरती रविवारकी ।

कहांलौ आरती दास करेंगे, हरि हरि सकल भुवन जाकी

ज्योति विराजै राम ॥ टेक ॥ सात समुद्र जाके चरणनिवासा, कहारे भयो जलकुंभ भरेहो राम ॥ १ ॥ कोटि भान जाके नखकी शोभा, कहारे भयो कर दीप धरेहो राम ॥ २ ॥ अठारा भार रोमावलि जाके, कहारे भयो शिर पुष्प धरे हो राम ॥ ३ ॥ अनंतकोटि जाके वाजा वाजे, कहारे भयो झनकार करेहो राम ॥ ४ ॥ छप्पन भोग जाके नितप्रति लागे, कहारे भयो नैवेद्य धरेहो राम ॥ ५ ॥ चार वेद जाके मुखकी शोभा कहारे भयो ब्रह्मा वेद भणेहो राम ॥ ६ ॥ लख चौरासी व्यापक रामा, केवल हरियश गावोहो नामा राम ॥ ७ ॥ ७ ॥

आरती सोमवारकी ।

आरति करत जनक कर जोरे ॥ हरि हरि वडे हो भाग्य राम जी आयेहो मेरे ॥ टेक ॥ जीति स्वयंवर धनुप चढाये ॥ सब भूपनको गर्व नवाये ॥ १ ॥ तोड़ि पिनाक कीय दो टुका ॥ रघुलकुल हरपि रावणभयसूका ॥ २ ॥ आई सीता संग सहेली ॥ हरपि निरखि वर माला मेली ॥३॥ गजमोतियनको चौक पुराये ॥ कनक कलश सजि मंगल गाये ॥ ४ ॥ कंचन थार कपूरकि वाती ॥ सुर नर मुनि जन आयेहै वराती ॥ ५ ॥ धनि धनि राम लपण दोउ भाई ॥ धनि दशरथ कौशल्या माई ॥६॥ राजादशरथ और जनक विदेही ॥ भरत शत्रुहन परम सनेही ॥ ७ ॥ मिथिलापुरमे वजत वधाई ॥ दासमुरार आरतीगाई ॥ ८ ॥ ८ ॥

निरखतरूप सिया रघुवरको छवि नहिं जात वखानी ॥ श्रीआरति करत कौशल्या रानी ॥ टेक ॥ कनक थार गज माणिक मोती मारयोंहै मान सकल भूपनको महिमा वेदवखानी ॥ १ ॥ तोरन धनुप जनक यज्ञपूरण जनकराय जीकी लज्या राखी परशुराम हित कर मानी ॥ २॥ सुर पुर नारि अवधपुर वासी नाचत नवल अप्सरा मुदित मन वरपि सुमन मुसकानी ॥ ३ ॥ रत्नसिंहासन रघुवर वैठे मात कौशल्या करत आरती हरपि निरखि सुखमानी ॥ ४ ॥ दशरथ सहित अवधपुर वासी तुलसि दास अविचल या जोरी भक्ति अभयपददानी ॥५॥९॥

हरत सकल संताप जनमके मिटत तलप यम कालकी ॥ आरती कीजे श्रीमदन गोपालकी ॥ टेक ॥ गोघृत रुचिर कपूर कि वाती चंद्रकोटि शशि भान कोटि छवि मुख शोभा नंदलालकी ॥ १ ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजे मोर मुकुट पीतांवर सोहे वाजत वेणु रसालकी ॥ २ ॥ कुंडललोल कपोलनकी छवि सुर नर मुनिजन करत आरती भक्तवछल प्रतिपालकी ॥ ३ ॥ घंटा ताल मृदुंग झाँझरी मै वलि वलि रघुनाथ दास मोहन गोकुल ग्वालकी ॥ ४ ॥ १० ॥

अथ ध्वनि.

पवनतनय संतन हितकारी । हृदय विराजे स्वामी अवधविहारी॥मंगल मूरति मारुतनंदन । सकल अमंगल मूल निकंदन॥ वरणो श्रीमात पिता गुरु शारद ।उमा सहित शंभू शुक नारद ॥

चरण वंदि विनऊं सब काहू । देउ राम पद भक्ति निवाहू ॥ वर्णों श्री अवधपुरी नरनारी । जय रघुवर सिया जनकदुलारी॥ वर्णों श्रीराय कौशल्या रानी । करहु कृपा सुत सेवक जानी ॥ वालमीकि मुनि व्यास वखानी । सनकादिक ऋपि अंतरयामी॥ भरत शत्रुहन संग सुहाये । हनूमान अंगद मन भाये ॥ भीर परे कपि सुमिरौ तोहीं । होहु दयालु दरश देउ मोही ॥ वर्णों श्रीरामजी लपण वैदेही । जन तुलसीके सिताराम जी सनेही १

जय रघुवर स्वामी आरती उतारे हरि अंतर्यामी ॥ टेक ॥ भाल विशाल तिलक शिरसोहे क्रीट मुकुट धारी । श्रवणनकुंडल झलके अद्भुत छविभारी ॥ १ ॥ लोचन ललित वदन अति सोहे कंठे वनमाला । भृगु लक्षण उर राजे दशरथ सुत लाला ॥ २ ॥ रत्नसिंहासन मध्य उर विराजे हरि रघुकुलकेतू । अधम उधारन स्वमी भवसागर सेतू ॥ ३ ॥ जनकसुता सिया जनकनंदनी सोहत वामे अंगे ॥ सन्मुख पवनकुमार विराजे लक्ष्मणदाहन अंगे ॥ ४ ॥ पीतवसन कर धनुप विराजे हरि वहु विधि सोहे ॥ सुंदर रूप निहारे कोटिमदनमोहे ॥ ५ ॥ चरणकमल कोमल मनभाये छवि वर्णी नहिजाये॥सुख मकरंद मधुप मन मुनि जन रहैहै लुभाये ॥ ६ ॥ शारद शेप विमल यशगावै सनकादिक गांवे ॥ सोइ चरण उरराखे शिव निश दिनध्यावे॥७॥आगम निगम पुराण पुकारे अति दुर्लभनरदेह॥ तुलसी भजि रघुनाथ कमलपद जन्म सफल करलेह ॥८।२॥

जय श्रीरघुनाथा दोउ कर जोरे विनऊं प्रभु मेरि सुनिबाता
॥ टेक ॥ तुम रघुनाथ हमारे प्राण पिता माता ॥ तुमहो सज-
न सॅगाती भक्ति मुक्ति दाता॥ १॥चौरासी प्रभु बंदि छुडाये मेटे
यम त्रासा ॥ निशिदिन प्रभु मोहि राखो अपने सॅग साथा ॥
॥ २ ॥ रघुवर लछमन भरत शत्रुहन सॅग चारो भैया ॥ जग
मग ज्योति विराजे शोभा अतिलैया ॥ ३ ॥ हनुमत नाद
वजावे नेपुर ठुमकैया ॥ सुवरणथार आरती करत कौशल्या
मैया ॥ ४ ॥ राम कवीर कृपा करि बोले बोले उपकारी॥उन
हरि हमहि बतावो सीतारामजी धनुपधारी ॥ ५ ॥ ब्रह्मा विष्णु
महादेव सायर सुखदाता धन्य तुम्हारे दरशन करिहो प्रति
पाला ॥ ६ ॥ क्रीट मुकुट कर धनुप विराजे शोभा अति
भारी ॥ मनीराम दरशनकूं प्रभु पद बलिहारी ॥ ७ ॥ ७ ॥

जयसीया महारानी सुर रंजन अघगंजन सेवत मुनि ज्ञानी ॥
॥ टेक ॥ कुंजरमणि शशिवदनी दामिनिद्युति गाता ॥ भूपण
वसन विराजे कर लिय जलजाता ॥ १ बिंदा भाल विराजे
सुंदर मुसकानी ॥ गजगमिनी शशिरमनी रघुवर मनमानी
॥ २ ॥ मृगलोचनि अघमोचनि सखियन सॅग सोहे ॥ विहरत
सरजूतीरा लखि सुर त्रिय मोहे ॥ ३ ॥ हरि हर अज तोहिं
ध्यावें निज निज पद पावे ॥ उमा रमा ब्रह्माणी निशिदिन
यशगावे ॥ ४ ॥ संतन उर दरशावे रघुवर रुखलीये ॥ सुख-
सागर दोउ विहरो रामसेवकके हीये ॥ ५ ॥ ४ ॥

जय श्रीहनुमंता तुमको सुर मुनि गावैं जय जय बलवंता ॥ टेक ॥ शिव अवतार विदित महि जानत सब बाता ॥ जन्म लियो पवन गृह अंजनि गरभ जाता ॥१॥ मारि उछंग कपि निकटहि धाये देखि अरुणगाता ॥ कोटि अग्नि सम दिनकर जाने जैसे फूल पाता ॥ २ ॥ सिया शोध रघुनाथ पठाये तुरत गये लंका ॥ सबको भय उपजायो राक्षस कुल त्रासा ॥ ३ ॥ उलटि पलटि लंका सब जारी राक्षसकुलघाता॥ कूदि परे सागरमे सिंधु हृदयकांपा ॥४॥ पूंछबुझाय सिया पर- आये नाये चरण कमल माथा ॥ अजर अमर सुत होवो वर दियो जगमाता ॥ ५ ॥ तुरतहि आये राम पर आति आनँद- गाता॥हरि हँसि कंठ लगायो कहो कपि कुशलाता ॥६॥ शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक पावत नाहिं अंता ॥ संत राम तोहि शरणै तुम प्रिय श्रीकंता ॥ ७ ॥ ५ ॥

जय नटवर वेषा आरति उतारो यादव वर जगदीशा ॥ टेक॥मोर मुकुट मस्तक पर राजै कंठे वनमाला॥श्रवणन कुंडल झलके सँग लिये ब्रजबाल ॥ १ ॥ नृत्यकरैं नारायण वृंदावन राजैं॥ताल पखावज बाजै मधुरे सुर गाजैं ॥२॥ घुमकर घुमकर घुंघुरू घुमकै नाचै राधा माधो पायल ठुमठुमकै ॥ ३ ॥ ताता थेइ ताताथेइ ताते सुरराजै ॥ नेपुर भ्रुकुटि विराजै कौस्तुभमणि छाजै ॥ ४ ॥ ऊंचे सुर गावै गिरिधारी नारि मधुर सुरगावै ॥ मनमोहन की जोरी मनमे थिरलावै ॥ ५ ॥

रास रच्यो वृंदावन शोभा ना जैये ॥ केशव मुख निरखैयन रसिकेवटियो कैये ॥ ६ ॥ ६ ॥

जय श्रीयदुनाथा श्यामसुंदर मनमोहन मेटो यमत्रासा ॥ टेक ॥ मथुरामे हरि जन्म लियोहे गोकुल पगधारी ॥ झूलतेहे पलनेमे पूतनाके हितकारी ॥ १ ॥ यमुनाके नीरेतीरे धेनुचरावे मुर्ली अतिवाजे ॥ ग्वालनके सँग विहरत शोभा अतिराजे ॥ २ ॥ पैठि पताल कालिनाग नाथे फनपर नृत्य कारी ॥ ताथेई गंधर्व उच्चरे शोभा अतिभारी ॥ ३ ॥ इंद्र कोपि चल्यो व्रज ऊपर वर्षाअतिआरी॥नखपर गिरिवर धारचो संतन हितकारी ॥ ४ ॥ जगन्नाथ बलभद्र सहोद्रा शोभा अति राजे ॥ सुर नर चमर ढुरावे नटवर वपुधारी ॥ ५ ॥ कृष्ण दयालु दया करि बोले उपकारी ॥ दास आनंद गिरिधर पर पल पल वलिहारी ॥ ६ ॥ ७ ॥

सीताराम सीताराम राघोराम मेरे मन वसि गयो सीताराम ॥ टेक ॥ गौरवर्ण सिया जनकनंदनी रघुवरहे घनसुंदर श्याम ॥ १ ॥ जटा मुकुट मुनि वेप धरयोहे कठिन धनुप लिय सारँग वान ॥ २ ॥ दशरथसुवन अयोध्यानायक जापर चमर ढोरावे हनुमान ॥ ३ ॥ रत्नसिंहासन रघुवर वैठे वाम भाग सीता सुख धाम ॥ ४ ॥ तुम जिन विसरि जावो तन मनसो तुम विनु निकसि जायँ मेरेप्रान ॥ ५ ॥ आशा नंद कहै करजोरे चौसठ घडि भजि आठो याम ॥ ६ ॥ ८ ॥

राधे श्याम राधे श्याम राधे श्याम मेरे मन बसिगयो राधे श्याम॥टेक॥ गौरवर्ण वृषभानु नंदनी यदुवरहै घनसुंदरश्याम १ मोर मुकुट पीतांबर सोहे ॥ गलसोहे वैजंतीमाल ॥ २ शंख चक्र गदा पद्म विराजे ॥ नीलांवर सोहै घनश्याम ॥ ३ ॥ रत्नसिंहासन यदुवर बैठे ॥ वाम भाग राधे सुखधाम ॥ ४ ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरे मिलनको ॥ चरणकमलमें मेरो ध्यान ॥ ५ ॥ ९ ॥

लागि रहे रघुवीर ॲखियांमे लागि रहे रघुवीर ॥ टेक ॥ मैं सरयू जलभरन जातही ॥ भरन विसर गयो नीर ॥ १ ॥ विनदेखे मोहि कल न परतहे ॥ निशि दिन नयनअनींद ॥ ॥ २ ॥ रुनुक झुनुक पगनेवर बाजे ॥ चाल चलत रणधीर ॥ ३ ॥ संगसखा सरयूतट विहरत ॥ रामलपण दोउ वीर ॥ ॥ ४ ॥ रघुवर लछमन भरत शत्रुहन ॥ गलविच मुक्ताहीर ॥ ॥ ५ ॥ क्रीट मुकुट कर धनुप विराजे ॥ पहिरे पीत पटचीर ॥ ॥ ६ ॥ मात कौशल्या करत आरती ॥ निरखत श्यामशरीर ॥ ७ ॥ तुलसिदास प्रभु रूप निहारे ॥ हरत सत जनपीर ॥ ८ ॥ १० ॥

लागि रहे गोपाल ॲखियामे लागिरहेगोपाल ॥ टेक ॥ मै यमुना जल भरन जातही ॥ भरलाई जंजाल ॥ १ ॥ विनदेखे मोहिं कल न परतहै ॥ घर ॲगना न सुहाय ॥ २ ॥ रुनुकझुनुक पग नेवर बाजे ॥ चाल चलत गजराज ॥ ३ ॥ लोकलाज कुलकी मर्यादा ॥ निकट भरम की खान ॥ ४ ॥

मोर मुकुट पीतांबर सोहै ॥ तिलक विराजैभाल ॥ ५ ॥ शंख चक्र गदा पद्म विराजैं ॥ गल वैजंती माल ॥ ६ ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावै ॥ संग सखा लिय ग्वाल ॥ ७ ॥ चंद्रसखी भजि बालकृष्ण छवि ॥ चिरंजीव रहो नँदलाल ॥ ८ ॥ ११ ॥

युगल चरणाहो राम चरणाभज रघुवर श्याम युगल चरणा ॥ टेक ॥ इतमे अयोध्या निर्मलसरयू ॥ उत मथुरा शीतल यमुना ॥ १ ॥ इतमें कौशल्या मैया गोद खिलावै उत यशुदा जी झुलावै पलना ॥ २ ॥ इतमें जानकीजी बाये विराजे ॥ उत राधे सँग कियो रसना ॥ ३ ॥ इतमे क्रीट मुकुट शिरराजै ॥ उतही मोर मुकुट धरना ॥ ४ ॥ इतमें धनुपबाण कर राजे ॥ उत मुरली मुखपरधरना ॥ ५ ॥ इतपदरेणुअहल्यातारी ॥ उत कुबजासंग किय रचना ॥ ६ ॥ इतमें सागर शिला तिराये॥उतगिरिवर नखपर धरना ॥ ७ ॥ रावणके दश मस्तक छेदे ॥ कंसको मारि बहाये यमुना ॥८॥ तुलसि दास प्रभु रूपनिहारै ॥ युगल चरण पर चित धरना ॥ ९ ॥ १२ ॥

नमो नमो री मैया नमो नमो तुलसी महारानी नमो नमो वृंदा महारानी ॥ टेक ॥ जाके दरश परश अघनाशैं॥ महिमा वेद पुराण बखानी ॥ १ ॥ शाखा पत्र मंजरी कोमल श्रीपति चरण कमल लपटानी ॥ २॥ धनि तुलसी पूरब तप कीन्हो ॥ शालिग्राम महा पटरानी ॥ ३ ॥ शिव सनकादिक अरु ब्रह्मादिक खोजत फिरे महा मुनि ज्ञानी ॥ ४ ॥

छप्पन भोग धरे हरि आगे ॥ विन तुलसी हरि एक न मानी ॥ ५ ॥ धूप दीप नैवेद्य आरती ॥ पुष्पनकी वर्षा वरपानी ॥ ६ ॥ प्रेम प्रीति करि हरि वश कीन्हो ॥ सांवरि सुरति हृदय हुलसानी ॥ ७ ॥ सांवरी सखी मैया तेरो यश गाऊं ॥ भक्ति दान मोहि दीज्यो महारानी ॥ ८ ॥ १३ ॥

कौनसे रघुनाथ इनमे कौनसे रघुनाथ ॥टेक॥ नौतम नारि आयोध्यापुरकी पूछतहैं कुशलात ॥ १ ॥ आगे आगे विश्वामित्र महामुनि ॥ पीछे लक्ष्मण राम ॥ २ ॥ जिनके रथ पर कनक सिहान पीत ध्वजा फहरात ॥ ३ ॥ क्रीट मुकुट कर धनुप विराजै ॥ सुंदर झलकत गात ॥ ४ ॥ सीता सहित सिंहाहासन बैठे ॥ भरतजी चमर ढोरात ॥ ५ ॥ मात कौशल्या करत्त आरती अग्रदास गुणगात ॥ ६ ॥ १४ ॥

प्रकटे सीता रामजी अवधपुरमे ॥ टेक ॥ राजा दशरथजीके रामजी जनम लियो नौनिधि भई उनके घरमे ॥ १ ॥ वाजे वाजे इंद्र गाजे जय जय कार भई पुरमें ॥ २ ॥ वर्षत पुष्प देव मुनि हर्षे ॥ आनंद भये नारिनरमे ॥ ३ ॥ संग सखा सरयू तट विहरत ॥ धनुप वाण धारे करमे ॥ ४ ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सफल कियो ॥ खल मारे एकै शरमे ॥ ५ ॥ क्रीट मुकुट कुंडलकी शोभा ॥ जन तुलसी धारे उरमे ॥ ६ ॥ १५ ॥

भजु वद्रीनाथ योग ध्यानी ॥ टेक ॥ आस पास पर्वतको गढहै ॥ वीच पड़तहै वरफानी ॥ १ ॥ हेम हिमालय निशि

दिन वरसै ॥ भरतकुंडकी निस्सानी ॥ २ ॥ गंगा निकट वहत चरणनमे ॥ बोलतहै गहरी बानी ॥ ३ ॥ सुर नर मुनि जाको ध्यान धरतहै ॥ तपसी सिद्ध महाज्ञानी ॥ ४ ॥ नारि परश नर देही पावे नर परशे होय ब्रह्मज्ञानी ॥ ५ ॥ वनमाली प्रभु शरणे आये युग युग महिमा हम जानी ॥ ६ ॥ १६ ॥

जय जय जगदीशहरे पूरण करत मनोरथ मनके जय जय जगदीशहरे ॥ टेक ॥ पूरण ब्रह्म कलीमें प्रगटे दरशनदेत निहाल करे ॥ १ ॥ जगन्नाथ वलभद्र सहोद्रा चक्र सुदर्शन निकटधरे ॥ २ ॥ महाप्रसाद देवनको दुर्लभ सो नर पावे पेट भरे ॥ ३ ॥ माधोदास आश रघुवरकी भवसागरतें पारकरे ॥ ४ ॥ १७ ॥

बॉकी चितवनपर बलिहारी ॥ बॉकी चाल प्यारे राघो जीकी बॉकी चितवनपर बलिहारी ॥ टेक ॥ बॉके पेच जरकसी पगिया बांकी अलकें घुंघुरवारी ॥ १ ॥ बांके धनुष बाण कर राजे बांकी कछनि कछे प्यारी ॥ २ ॥ बांके भाल तिलक शिर सोहे बांके कुंडल लगे अतिप्यारे ॥ ३ ॥ बांके क्रीट मुकुट शिरसोहे बांकी कलॅगी लगै अतिप्यारे ॥ ४ ॥ रामसेवकजीके प्रभु सुखसागर बांकी चाल मोहे नरनारी ॥ ५ ॥ १८ ॥

जल कैसे भरौ सरजू गहरी ॥ सन्मुख राजा रामजी खड़े जल कैसे भरौ सरजू गहरी ॥ टेक ॥ अवधनगर सो चलि मेरी

सजनी हाथ घड़ा शिरपर गगरी ॥ १ ॥ क्रीट मुकुट कर धनुप विराजे उर वनमाला सूझ परी ॥ २ ॥ निठुर भरौ मोहि लाज लगतहै वैठि भरौ भीजूँ सगरी ॥ ३ ॥ रामसेवकजीके प्रभु सुखसागर बार बार हरिचरणपरी ॥ ४ ॥ १९ ॥

मुनि संग मिथिला आये ये दोउ राजकुमार मुनिसंग मिथिला आये ॥ टेक ॥ सखि क्रीट मुकट माथे बन्यो, घूंघरवारे केश ॥ वैजंती माला गले, आछे सुंदरभेस ॥ १॥ सखि भाल तिलक माथे बन्यो, भौंह बनीहै कमान ॥ सुर नर मुनि जन मोहिये, आछे कर संधान ॥ २ ॥ सखि अधर कीर नासा बनी, मुख बन चंद्र चकोर ॥ जगमग ज्योति विराजिये, मानों कोटिक भान ॥ ३ ॥ सखि करकोदंड विराजिये, आछे धनु अरु तीर ॥ मन हरलीनो भावनी, मोहे श्रीरघुवीर ॥४॥ सखि वचन सखन ऐसे कहे, गुरु पुरजन सब लोग ॥ नायक वैद्य बुलाइये, जावे नाहीं रोग ॥५॥ सखि अनव्याही तुलसी फिरे, व्याही लेत उसास ॥ गवनेकी भवने रही, लगि रघुवरकी आस ॥ ६ ॥ सखि नयननमे बसबो करे, निशिदिन और न ध्यान ॥ वीर भजो रघुवीरको, भावे नाही आन ॥ ७॥ २० ॥

रंगभुवन हरि आयेरी चलो सखि रघुवर छवि निरखें रंगभुवन हरि आयेरी ॥ टेक ॥ गौरश्याम दोउ रूप मनोहर संग महा मुनि आयेरी ॥ १ ॥ झूंठ नहीं सखि सांच कहतहूं समाचार सुन पायेरी ॥ २ ॥ घन दामिनि मन हरत सखनको धन्य जननि जिन जायेरी ॥ ३ ॥ तोडेंगे शिवधनुप कठिन है

जनकसुता मन भायेरी ॥ ४ ॥ टूट्यो धनुष शब्द भयो भारी भूप सबै मुरझायेरी ॥ ५ ॥ जानकि हाथ लिये वर माला रघुवर उर पहिरायेरी ॥ ६ ॥ जय जयकार करत पुरवासी देवन दुंदुभि वजायेरी ॥ ७ ॥ हरे हरे गोवर अँगना लिपाये कनक कलश धरवायेरी ॥ ८ ॥ गजमोतियनकी चौक पुराये सखियन मंगल गायेरी ॥ ९ ॥ राम जानकी परत भांवरी ब्रह्मा वेद उचारैरी ॥ १० ॥ धन्य धन्य भाग्य सीयाजी तुम्हारे रामचंद्र वर पायेरी ॥ ११ ॥ धन्य धन्य भाग्य जनक राजाके दशरथ समधी पायेरी ॥ १२ ॥ रामसेवकजीके प्रभु सुखसागर सबै प्राण प्रिय पायेरी ॥ १३ ॥ २१ ॥

भजु दशरथनंदन जनकलली जनकलली रघुनाथवली ॥ टेक ॥ ऋषिके संग जनकपुर आये पुष्प बिछावत गलियगली ॥ १ ॥ तोड़े धनुष भूप सब हारे राय जनककी भली भली ॥ २ ॥ पूजत गौरि मनावत शंकर वर पायो रघुनाथ वली ॥ ३ ॥ फूली कुँवरि फिरति आंगनमे वरमाला पहिराय चली ॥ ४ ॥ पहने कुँवर राय दशरथके मंगल गावत पुर कि अली ॥ ५ ॥ तुलसिदास प्रभुकी छवि निरखत हृदय वसो मेरे येहि भली ॥ ६ ॥ २२ ॥

भजु दशरथ नंदन सियारामा ॥ टेक ॥ दूर्वादल नील मणि तनु राजत मेघवर्ण प्रभु घनश्यामा ॥ १ ॥ संग सखा सरयूतट विहरत धनुष धरे प्रभु कर वामा ॥ २ ॥

क्रीट मुकुट कानन कुंडल छवि निरखि लजित कोटिन कामा ॥ ३ ॥ जन हरि आनंदरूप निहारे रसना गावत गुण-ग्रामा ॥ ४ ॥ २३ ॥

भजु सीतारामजी धनुपधारी भजु राघोरामजी धनुप-धारी ॥ टेक ॥ सुंदर चरण बनी पैजनियाँ चाल चलत शोभा-भारी ॥ १ ॥ एकहि बाण असुर सब मारे विश्वामित्रके आज्ञाकारी ॥ २ ॥ मुनिके संग जनकपुर आये गौतम नारि अहल्यातारी ॥ ३ ॥ जायजनकपुर धनुपा तोड्यो परशुरा-मकी मतिहारी ॥ ४ ॥ सीताराम लछमन भरत शत्रुहन हनूमान आज्ञाकारी ॥ ५ ॥ राजा दशरथके चार पुत्रहैं ध्यान धरत सुर नर नारी ॥ ६ ॥ तुलसिदास प्रभुकी छवि निरखे हरिकी भक्ति युग युग प्यारी ॥ ७ ॥ २४ ॥

रघुवंशीहो राम मेरे मनमे वसो सीतापतिहो राम मेरे ह्रिदे वसो ॥ टेक ॥ सीता मेरी माता पिता मेरे राम लछमन धनुप चढाये कर बान ॥ १ ॥ कंठ मेरे तुलसी मुख मेरे राम हृदय विराजे स्वामि शालिग्राम ॥२॥ बांधे सेतु तरेहै पपाण सियाकि खवरिको पठाये हनुमान ॥ ३ ॥ तोड़ी गढ लंका फिरि गई आन भक्त विभीपण पाये विशराम ॥ ४ ॥ हाथिन ऊपर घुरत निसान सुर नर मुनि जन चढे है विमान ॥ ५ ॥ रावण मारि विभीपण थापे अस्तुति करत है सुर नर नारि ॥ ६ ॥ आगे आगे राम लक्ष्मण पीछे हनुमत आये है अयोध्या पुष्पवि-

मान ॥ ७ ॥ पुरीहै अयोध्या आनँदकंद यह ध्वनि गावै स्वामीरामानंद ॥ ८ ॥ २५ ॥

भजुरे मन सिया रघुनंदन को सियारघुनंदन जगवंदनको भजुरे मन सिया रघुनंदनको ॥ टेक ॥ दशरथनंदन आनँद कंदन सूर्य्य वंश कुलमंडनको ॥ १ ॥ जानकीनायक जन सुखदायक भक्तनके मनरंजनको ॥ २ ॥ विश्वामित्रको यज्ञ सुधारे गौतम नारि उधारनको ॥ ३ ॥ जनक स्वयंवर पावनकीन्हो कठिन धनुपके भंजनको ॥ ४ ॥ हनूमान सुग्रीव विभीपण चरणकमल रज वंदनको ॥ ५ ॥ सागरसेतु नाम कर बांधे असुरनके दल गंजनको ॥ ६ ॥ रावणके दश मस्तक छेदे वीसभुजाके खंडनको ॥ ७ ॥ तुलसिदास प्रभु शरणे आये काटो भवके फंदनको ॥ ८ ॥ २६ ॥

रघुनाथ तुम्हारे चरित मनोहर ललित मनोहर गावत सकल अवधवासी ॥ अति उदार अवतार मनुजवपु धरयो ब्रह्म वर अविनासी ॥ १ ॥ प्रथम ताडका हति सुवाहु वधि मखराख्यो द्विज हितकारी ॥ देखि दुखित अति शिला शापवश रघुपति विप्र नारि तारी ॥ २ ॥ सब भूपनको गर्व हरयो हरि भंज्यो शंभु चाप भारी ॥ जनकसुता समेत आवत घर परशुरामको मद हारी ॥ ३ ॥ तात वचन सुनि राज काजतजि चित्रकूट मुनि वेपधरयो ॥ एक नयन कीन्हो सुरपति सुत वधि विराध ऋषि शोक हरयो ॥ ४ ॥ पंचवटी पावन राघो करि शूर्पणखा को कुरूप कीन्हो ॥ खर

दूषण संहारि कपट मृग गीधरायको गति दीन्हो ॥ ५ ॥ हति कबंध सुग्रीव सखा करि वेधे ताल वालि मारयो ॥ वानर ऋच्छ सहाय अनुज सँग सिंधु बाँधि यश विस्तारयो ॥ ६ ॥ सकल पुत्र दल सहित दशानन मारि असुर सुर दुख टारयो॥ परम साधु जिय जानि विभीषण लंकापुरी तिलक सारयो ॥ ७ ॥ सीता और लछमन संग लीन्हे और दास जेते आये॥ नगर निकट विमान आयो जब नर नारी देखन धाये ॥ ८ ॥ शिव सनकादिक और ब्रह्मादिक अस्तुति करत विमल बानी॥ चौदह भुवन चराचर हर्षत आये राम रजधानी ॥ ९ ॥ मिले भरत जननी गुरु परिजन चाहत परम आनंदभरे॥दुसह वियोग जनित दारुण दुख राम चरण देखत बिसरे ॥ १० ॥वेद पुराण विचारि लग्न शुभ महाराज अभिषेक कियो॥ तुलसिदास जिय जानि सुअवसर भक्ति दान वर माँगिलियो ॥ ११ ॥ २७ ॥

नयननमे सियाराम बसोजी मेरे नयननमे सियाराम ॥ टेक ॥ कनक वेल सिया जनकनंदनी रघुवर तनु घनश्याम ॥ १ ॥ रत्नसिंहासन मध्य विराजे युगलमूरति अभिराम ॥ २ ॥ भरत शत्रुहन चमर छत्रलिये कर विजना ढुरावे हनुमान ॥ ३ ॥ लछमन छत्रलिये करठाढे नृप मंदिर सुख धाम ॥ ४ ॥ रघुवर लछमन भरत शत्रुहन जोड़ी सुंदर श्याम ॥ ५ ॥ अग्रदास दंपति छबि निरखे बिसरगई गृह काम ॥ ६ ॥ २८ ॥

मोहिं भावै हो श्रीरामजी लला मोहिं भावैहो ॥ टेक ॥
चारो भैया रामजी सुंदर श्याम मैया गोद खेलावै हो खेला-
वैहो ॥ १ ॥ कनक कटोरा तेल फुलेलः मरदन अधिकसुहा
वैहो ॥ २ ॥ पीत झंगुलिया सुंदर सोहै मैया हाथ हर्षि निरखि
पहिरावैहो ॥ ३ ॥ शिर सोहे जरकसकी पागः कान कुंडल
झलकावैहो ॥ ४ ॥ गल सोहै मोतियनकी माला बाजूबंद
अधिक सुहावैहो ॥ ५ ॥ लाल खडाऊं सुंदर सोहे हरिके पॉव
अवध नगर फिरि आवैहो ॥६॥ माधुरि मूरति नयन विशालः
मंद मंद मुसकावैहो॥७॥बाण धनुहिया सुंदर सोहैं हरिके हाथ
खेलत सखा सॅग आवैहो॥८॥ चारो भैया रामजी चतुर सुजान
लछमन चमर ढुरावैहो ॥ ९ ॥ प्रयागदासके सिया रघुवीर
नयनन माहि समावैहो ॥ १० ॥ २९ ॥

आछे रामजी लला सांवरे वदन पर अनंत कला॥टेक॥
मुखमे बीडा नयन विशाल जित चितवे तित करत निहाल
॥ १ ॥ क्रीट मुकुट कुंडल वनमाला भाल तिलक
सोहे नयन विशाल ॥ २ ॥ छोटी मोटी नदियां गहरगॅभीर
कदमकी छैया रामजी ठाढे रघुवीर ॥ ३ ॥ जहां जहां पर
संतनमे भीर हर्षत आवे सियारघुवीर ॥ ४ ॥ भरत शत्रुहन
लछुमनवीर खेलत सखा संग सरयूकेतीर ॥ ५ ॥ प्रयागदास
चले सरयूतीर बीचमे मिलगये सिया रघुवीर ॥ ६ ॥ ३० ॥

कौशल्यानंदन करुणा करिहो कौशल्यानंदन करुणाकरि
राम करुणा करिहै भजु रामा रामा रामा रघुवर रामजीहरे सीता-

रामजी हरे राघो रामजीहरे केवलरामजीहरे रमतारामजीहरे भजु रामा रामा रामा ॥ १ ॥ सियावर सुमिरे सकल अघ हरेहैं सियावर सुमिरे सकल अघहरेहै सकल अघ हरेहै सकल अघहरेहै भजु रामा रामा रामा रघुवर रामजीहरे सीतारामजीहरे राघोरामजीहरे केवलरामजीहरे रमतारामजीहरे भजु रामा रामा रामा ॥ टेक ॥ कौशल्या नंदन करुणाकरेहैं ॥ १ ॥ माधुरि मूरति मुनि मन हरेहै ॥२॥ भक्त हेतु सारँग कर धारे है ॥ ॥ ३ ॥ शंख चक्र गदा गिरिवर धारे हैं ॥ ४ ॥ गौतमनारि अहल्या तारे हैं ॥ ५ ॥ जनक स्वयंवर पावन करे है ॥ ६ ॥ तोरच्यो धनुष जानकी वरे है ॥ ७ ॥ ध्रुव प्रह्लाद विभिषण तारे है ॥ ८ ॥ सुवा पढावत गनिका तारेहै ॥ ९ ॥ दंडकवन प्रभु पावन करेहै ॥ १० ॥ अजामील गज गनिका तारेहै ॥ ११ ॥ भक्त सुदामाके दारिद्र हरेहै ॥ १२ ॥ पुरीहै अयोध्या सरयूतीर ॥ १३ ॥ रामदास आनंद भरेहै ॥ १४ ॥ २१ ॥

जय जय यशोदानंदनकी ॥ टेक ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहे खौरविराजे चंदनकी ॥ १ ॥ यमुनाके निरे तिरे धेनु चरावे हाथ लकुटिया चंदनकी ॥ २ ॥ पैठि पताल कालिनाग नाथे फन पर निरत करंदनकी ॥ ३ ॥ भाल तिलक मोतिय नकी माला शोभा नागर नटवरकी ॥ ४ ॥ वृंदावनमे बाग बगीचा कोयल बोले मधुवनकी ॥ ५ ॥ केश पकरि हरि कंस पछाड़े असुरनके दल भंजनकी ॥६ ॥ उग्रसेनको राजतिलक दियो रक्षाकरि सब साधुनकी ॥ ७ ॥ वृंदावनमे रास रच्यो

है सहस्र गोपि एक नंदनकी ॥ ८ ॥ घंटाताल पखावज बाजे गहरीध्वनि सब साधुनकी ॥ ९ ॥ आपन जाय द्वारका छाये पल पल लहरि तुरंगनकी ॥ १० ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छवि चरण कमल जगवंदनकी ॥ ११ ॥ २२ ॥

जयलाल जयलाल जयलाल जीकी हरिनाम भज जाके लागि मुकी॥ टेक॥ सुरंग चुंदरी राधेजीको सोहे पीतांबर छवि मोहन जूकी ॥ १ ॥ शिरवेणी राधेजीको सोहे मोर मुकुट छवि मोहन जूकी ॥ २ ॥ शीश फूल राधेजीको सोहे भाल तिलक छवि मोहन जूकी ॥ ३ ॥ कर्णफूल राधेजूको सोहे कानोमे कुंडलछविमोहनजूकी ॥ ४ ॥ कर कंकण राधेजीको सोहे कर मुरली छवि मोहनजूकी ॥ ५ ॥ कर पहुँची राधेजीको सोहे कर बाजू छवि मोहन जूकी ॥ ६ ॥ नवलहार राधेजीको सोहै वनमाला छवि मोहन जूकी ॥ ७ ॥ चंद्रघटिका राधेजीको सोहे कौस्तुभमणि छवि मोहनजूकी ॥ ८ ॥ पग पायल राधेजीके सोहे पग पैजन छवि मोहन जूकी ॥ ९ ॥ श्याम घटा इत उत सो आई दमकन लागीं दामिन जूकी ॥ १० ॥ दास गोवर्द्धन शरणे आये बलिहारी छबि मोहनजूकी ॥ ११ ॥ २३ ॥

मै तोहिं द्यूंगी गारी रे लाला मै तोहिं द्यूंगी गारी गागरिया जिन ढोरो लालजी मै तोहि द्यूंगी गारी ॥ टेक ॥ मै यमुना जल भरन जातही बीच मिले गिरिधारी ॥ १ ॥ गागरढोरी

मेरी बैयां मरोरी मोतियनकी लर तोरी ॥ २ ॥ लै मेरो चीर कदम पर बैठे हम जल बीच उघारी ॥ ३ ॥ चीर तुम्हारो जब हम देगे जलसो हो जा न्यारी ॥ ४ ॥ जलसो न्यारी कैसे होगी तुम पुरुप हम नारी ॥ ५ ॥ जाय पुकारो कंस रजा सों ठाढेरहो गिरिधारी ॥ ६ ॥ सुंदर श्याम कमल दल-लोचन कुंडलकी छवि न्यारी ॥ ७ ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छवि तुम जीते हम हारी ॥ ८ ॥ २४ ॥

नाचै नंदलाल नचावै वाकी मैया॥ टेक॥ मथुरामे हरि जन्म लीन्हे गोकुलमे लाला बजत बधैया ॥१॥ दूधनपीवे दहियन खावे माखनको लाला बडोरे खवैया ॥ २ ॥ रुमक झुमक पग नेपुर बाजे ठुमक ठुमक पग धेरे कन्हैया ॥३॥ यमुनाके निरेतीरे धेनु चरावे मुरलि कि टेर सुनावे रे कन्हैया ॥४॥ बैठि पताल कालिनाग नाथ्यो फन पर निरत करेरे कन्हैया॥५॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छवि चरणकमल कि मै लूंरी बलैया॥६॥२५॥

भजु रामाकृष्णा गोविंदे प्रह्लाद पढे भजु रामा कृष्णा गोविंदे ॥ टेक ॥ जन प्रह्लाद महा दुख पाये हरि चरण कमल चितलाये खंभ फाड़ि नरहरि प्रगटे ॥ १ ॥ कृष्ण कृष्ण कहि द्रौपदी टेरे राखो लाज दयानिधि मेरे जन्म जन्मकी चेरी तेरी अंबरके अंबारवढे ॥ २ ॥ अजामील सुत हेत पुकारे नारायण मुख नाम उचारे जन्म जन्मके पाप हरे ॥ ३ ॥ अंबरीष ध्रुव भक्त सुदामा जिनके कृष्ण सुधारे कामा राम उपासी है हनु-माना राम नाम जाके मन भावे प्रेम प्रीतिके लाडलडे ॥ ४ ॥ शेपादिक सनकादिक शारद व्यासादिक इंद्रादिक नारद

ब्रह्मादिक श्रीकृष्णा कृष्णरटे ॥ ५ ॥ शिव शुक मुनि भीष्म पाराशर निम्बार्कमुनि सहसअठासी जो योगेश्वर नाम उपासी ज्ञान ध्यानके गगन घडे ॥ ६ ॥ रामानुज अनंतानुजस्वामी कृष्णदासजीके अग्र विनोदी भक्त योगकी महिमा सोधी जगन्नाथके नरहरिदास 'चरण कमल पीतांबरदास प्रेम प्रीति कर गगन चढे ॥ ७ ॥ सूरदास हरिके गुणगाते शेप महेश पार नहि पाते निगम नेति कर वेद रटे ॥ ८ ॥ ३६ ॥

नृसिंह साहि महाराज साहि जय जय जय जय नृसिंह साहि ॥ टेक ॥ खंभ फाड़ि हरिणाकुश मारे राखि लियो प्रह्लादसाहि ॥ १ ॥ उद्रविदार झकझोर कियेहै तीन लोक जाकी गरज भई ॥ २ ॥ लक्ष्मीजी प्रभुजीके निकट न आवे देखिरूप चकृतभई ॥ ३ ॥ वोई राम जिन रावण मारे भक्त विभीपण लंक दई ॥ ४ ॥ मथुरामे हरि कंस पछाड़े तीन लोक छवि छायरही ॥ ५ ॥ तुलसिदास प्रभु रूप निहारे भक्त वछलकी टेक रही ॥ ६ ॥ ३७ ॥

भजु नरहरि नरहरि नरहरिया प्रह्लाद उधारन नरहरिया हरिणाकुश मारन नरहरिया ॥ टेक ॥ खंभ फार हरिणाकुश मारयो जन प्रह्लाद उछंग धरिया ॥ १ ॥ रामकृष्ण दोउ नाम वड़ेहै तारन तरन अखंड भरिया ॥ २ ॥ ग्वालनके सँग गऊ चरावे कर मुरली वन वन फिरिया ॥ ३ ॥ वामनरूप छले बलि राजा तीन पैग वसुधा भरिया ॥ ४ ॥ रावणके

दश मस्तक छेदे वीस भुजा खॅड खॅड कारिया ॥५॥ गुरु परताप साधुकी संगति भव जल तारन गिरिधरिया ॥ ६ ॥ ३८॥

जय जय बोलो साधो लछिमन वालाकी वालाकी प्रतिपालाकी हरि हरि दशरथ सुत नॅदलालाकी ॥ टेक ॥ दक्षिण देश सवालख पर्वत वाला जग मग ज्योति दिवालाकी ॥ १॥ त्रिपतीमे सीतारामजी विराजै वाला चौकीहै लछिमनवालाकी ॥ २ ॥ शेपाचल पर आप विराजे वाला चौकीहै हनुमत लालाकी ॥ ३ ॥ जय विजय दोउ पौरिया विराजै वाला गहिरी वॅवनगाराकी ॥ ४ ॥ आठ पहर फूलनको जामो वाला ऊपर मोज दोसाला की ॥ ५ ॥ देश देश के जातरि आये वाला मार परै मृगछालाकी ॥ ६ ॥ जाके रथ पर कनक सिंहासन मुकुट वने मोतिमालाकी ॥ ७ ॥ आशानंद गरीव तुम्हारे वाला पतिराखो टीकामालाकी ॥ ८ ॥ ३९ ॥

लछमन महाराजा महाराजा तेरे वाजे अनहद वाजा लछमन महाराजा महाराजा ॥ टेक ॥ त्रिपतीमे सीतारामजी विराजै शेपनागकीहै छाया शेपाचल पर आप विराजै तीनलोकके राजा ॥१॥ क्रीट मुकुट कर धनुप विराजे गल वैजंती माला॥ कमल नयन करुणाके सागर वड़ि वड़ि भुजा विशाला॥ २ ॥ सप्त द्वीप पानीके ऊपर लीला अजव वनाया॥विना खंभ असमान खड़ोहै नौ लखतारा छाया ॥३॥ ब्रह्मा जाको वेद सुनावै सुर नर ध्यान लगाया॥शेप सहस मुख रटत निरंतर सो वाको

पार न पाया ॥ ४ ॥ भक्तवछल भक्तनके भीरु हरि हैं सुखके दाता ॥ चरणदास चरणनकी महिमा चरण कमल चित-लाया ॥ ५ ॥ ४० ॥

जय जय हनुमान विरधबंका ॥ टेक ॥ करि किलकार कूदिगये सागर राम काज पर दियो डंका ॥ १ ॥ आज्ञा माँगि बागमें पैठे तोड़ि कियोहै फलफंका ॥ २ ॥ पैठि पताल तोडि यमकातर देखि असुर मन भइ शंका ॥ ३ ॥ उडत निसान राम लछिमनके लंक जराय कियो हंका ॥ ४ ॥ अहि-रावणके भुजा उपारे होम कियो जब लूटी लंका ॥ ५ ॥ तुल-सिदास प्रभु शरणे आये भक्त विभीषण पाये लंका ॥ ६ ॥ ४१ ॥

भजु गोविंद गोविंद गोपाला हरि हरि कृष्ण कन्हैया दूलह नँदलाला ॥ टेक ॥ मथुरामे हरि जन्म लियोहै गोकुल झूलें नँदलाला ॥ १ ॥ देवकीके छैया बलभद्रजीके भैया भक्त-वछल प्रभु प्रतिपाला ॥ २ ॥ पूतनाको जननी गति दीन्हीं अधम उधारन नँदलाला ॥ ३ ॥ मोरमुकुट पीतांबर सोहे गले वैजंती वनमाला ॥ ४ ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावे मुरली बजावे नँदलाला ॥ ५ ॥ वृंदावन हरि रास रच्योहै सहसगोपि यक नँदलाला ॥ ६ ॥ गोकुलसो हरि मथुरा आये संग सखा लिये व्रजग्वाला ॥ ७ ॥ कंस राजाके वसन लुटाये पहिराये सब व्रजबाला ॥ ८ ॥ मार पँवरिया मल्ल पछाड़े रंगमहलमें नँदलाला ॥ ९ ॥ केश पकरि हरि कंस पछारे मारे नरपति

शिशुपाला ॥ १० ॥ उग्रसेनको राजतिलक दियो कियो मथुराको भूपाला ॥ ११ ॥ कुबजा तो चंदन घसिलाई मालन लाई फुलमाला ॥ १२ ॥ जन वनमाली शरणतिहारी प्रेमभक्तिकी जपिमाला ॥ १३ ॥ ४२ ॥

म्हॉने चाकर राखोजी सॅवलिया गिरिधारीलाला चाकर राखोजी॥ टेक॥चाकर रहिसो बागलगायसो नित उठि दरशन पाइसों॥ वृंदावनकी कुंज गलिनमे गोविंद लीला गाइसो ॥१॥ चाकरिमे दरशन पावो सुमिरन पावों खरची भाव भक्ति जागीरि पावो तीनो बाते सरसी ॥ २ ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहे गले वैजंतीमाला ॥ वृंदावनमे धेनु चरावे मोहन मुरलीवाला ॥ ॥ ३॥ ऊंचे ऊंचे महल बनावो बिच बिच राखों बारी॥सॉवलियाके दरशनआवो पहिर कुसूंभीरसारी ॥ ४ ॥ योगी आया योगकरनको तप करने संन्यासी ॥ हरि भजने को साधू आये वृंदावनके वासी ॥ ५ ॥ मीराके प्रभु गहिर गंभीर ग्वालनिको दरशन दीन्हो तट यमुनाके तीर ॥ ६ ॥ ४३ ॥

वृषभानुकी लली सॉवलियासूं नेह लगायली ॥ टेक ॥ आवोहो अहीरके हमारी गली चंदन चरचूं तेरी पगरी ॥ १ ॥ हाथमे गजरा गुलाबकी छरी ॥ठाढे रहियो लालजी मै कबकी खरी ॥ २ ॥ नयनन भरि कजरा मुख भरि पान छोटीसी उमर राधे बहुत गुमान ॥३॥ वृंदावनकी कुंजमे रास विलास या ध्वनि गावे स्वामी कानडदास ॥ ४ ॥ ४४ ॥

अब सोहे रामजी ललाके शिर टोपी ॥ टेक ॥ छोटे छोटे लरकनकेसंग डोले खात फिरे दधि रोटी ॥ १ ॥ अंग अंगकी यहँ छवि निरखे मात कौशल्या हँसि लोटी ॥ २ ॥ प्रयागदासके हृदय बसतहे चारों भइयनकी जोटी ॥ ३ ॥ ४५ ॥

अब मै तो रामजी ललाकी बलिजाउँरे ॥ टेक ॥ सरयू तीर वीर चारो विहरत ॥ बसत अयोध्या गाँवरे ॥ १ ॥ हे युग तात गात वाके लोने ॥ पतित पावन वाको नामरे ॥२॥ गौतम नारि अहल्या तारी ॥ सुरपुर दीनो वाको ठाउँरे ॥ ३ ॥ प्रयागदास भजु दशरथ नंदन ॥ भलोहि वन्यो तेरो दाँवरे ॥ ४ ॥ ४६ ॥

श्रीमन् नारायण नारायण नारायण ॥ टेक॥ जाको नाम लेत अघ नाशै कोटि पाप भय पारायण॥१॥जाके चरण सदा सुख चैये काम क्रोध भय जारायण ॥२॥ शिव सनकादिक औ ब्रह्मादिक सुमिरि सुमिरि भय पारायण॥३॥क्रीट मुकुट मकराकृत कुंडल शंख चक्र गदा धारायण ॥४॥अजामील सुत हेत पुकारे नाम लेत भय पारायण ॥ ५ ॥ शबरीके फल रुचि रुचि खाये भक्त सुदामा तारायण ॥६॥ दुर्योधनकी मेवा त्यागे साग विदुर घर पारायण ॥ ७॥ जो नारायण नाम लेतहै मात पिता कुल तारायण ॥ ८॥ इंदर कोपि चढ्यो व्रज ऊपर नख पर गिरिवर धारायण ॥ ९ ॥ जल डूबत गजराज उबारे चक्र सुदर्शन धारायण ॥१०॥ चार वेद और भगवद्गीता वाल्मीकि जीकी रामायण ॥ ११ ॥ माधोदास आश रघुवरकी भवसागर भय पारायण ॥ १२ ॥ ४७ ॥

शोभा श्याम शरीरकी रामध्वनि लागि रही रघुवीरकी॥टेक॥ उडीसामें जगन्नाथ विराजे बाला चौकी है बलभद्रवीरकी ॥१॥ त्रिपतीमें सीतारामजी विराजें बाला चौकीहै लछिमन वीरकी ॥ २ ॥ शेषाचल पर आप विराजें बाला चौकीहै हनुमत धीरकी ॥ ३ ॥ दक्षिणमे ठींकरनाथ विराजै बाला चौकीहै सागर नीरकी ॥ ४ ॥ द्वारकामें रणछोर विराजे बाला चौकीहै टीकमजीकी ॥ ५ ॥ उत्तराखंड बद्रीनाथ विराजै बाला चौकीहै गहर गंभीरकी ॥ ६ ॥ मथुरामे केशवराय विराजै बाला चौकीहै यमुनानीरकी ॥ ७ ॥ अयोध्यामे सीतारामजी विराजै बाला चौकीहै सरयूनीरकी ॥ ८ ॥ दास गोवर्द्धन शरणे आये बाला गति होय जाय शरीरकी ॥ ९ ॥ ४८ ॥

जै वंशीवट जै फुलना भजो वृंदावन जय यमुना ।। टेक ॥ कृष्ण चरणको ध्यान धरतहैं छूटगई मनकी भ्रमना ॥ १ ॥ मोरमुकुट पीतांबर सोहै मुरली ले मुखपर धरना ॥ २ ॥ इत मथुरा उत गोकुल नगरी बीचमे रास रचो ललना ॥ ३ ॥ यमुनाके नीरे तीरे धेनु चरावै वंशीकी टेर सुनावे ॥ ४ ॥ पैठि पताल कालिनाग नाथे फनपर निरत करत ललना ॥ ५ ॥ इंदर कोप किये व्रज ऊपर नखपर गिरिवर धरे ललना ॥६॥ केशी मारे कंस पछारे यमुनामे मारि वहाये ललना ॥ ७ ॥ उग्रसेनको राजतिलक दियो उनको वंश वढायो ललना ॥८॥

नारदमुनि जाको ध्यान धरत है सेवा कुंजमे कियो रमना ॥ ॥९॥ जल डूबत गजराज उबारे चक्रसुदरशन धारे ललना ॥ ॥ १० ॥ चंद्रसखी भजु बालकृष्ण छवि हरिके चरणपर चित धरना ॥ ११ ॥ ४९ ॥

रघुनंदन आगे मै नाचूंगी नाचूंगी रंगराचूंगी ॥टेक॥ करि शृंगार हार तुलसीको भाल तिलक शिर राखूंगी ॥ १ ॥ प्रेम प्रीतिके बाँधि घूंघुरा सुरतकि कछनि मै काछूंगी ॥ २ ॥ नाच नाच रघुनाथ रिझाऊं भक्ति रसीली मै जाचूँगी ॥ ३ ॥ रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन सांवली सुरति मन राखूंगी ॥ ४ ॥ चुनि चुनि कलियां में हार बनाऊं रघुवर उर पहिराऊंगी ॥५॥ धूप दीप नैवेद्य आरती येहि विधि लाड लडाऊंगी ॥६॥ लोक लाज कुलकी मर्यादा इनमे एक न राखूंगी ॥ ७ ॥ सरयूके तीर आयोध्यानगरी बैठि झरोखे मै झाकूंगी ॥ ८ ॥ सोनादास बिलास सांवरो हरिके चरण चित राखूंगी ॥ ९ ॥ ५० ॥

अथ ब्यारू.

टेरतहै महतारी लालजीको टेरतहै महतारी ॥ टेक ॥ रजनी बहुत गई मेरे प्यारे आनि करो कछु ब्यारू ॥ १ ॥ मधु मेवा पकवान मिठाई सरस बनीहै सुहारी ॥ भाँति भाँति के धरेहै अथानों नानाविधि तरकारी ॥ २ ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन जेवत कंचन थारी ॥ खाजा खुरमा रुचिकर पावै परसत जनकदुलारी ॥ ३ ॥ दूध जानकी हितकर अवटो

मेवा मिसरी डारी ॥ तुलसिदास द्वारे यश गावत जूँठनके अधिकारी ॥ ४ ॥ १ ॥

अजी व्यारू करन हेत सो मैया रघुवर बोलि पठायेजी ॥ रामजी सियावर बोलि पठायेजी ॥ टेक ॥ अजी रघुवर लक्ष्मण भरत शत्रुहन राजत अवधबिहारीजी ॥ १ ॥ चारो भैया मिलि जीमन बैठे परसतिहै महतारीजी ॥ २ ॥ खाजा खुरमा त जलेवी सीरा सरस सुहारीजी ॥ ३ ॥ भाँति भाँतिको धन्यौहै अथानो नानाविधि तरकारीजी ॥ ४ ॥ दूध जानकी हितकरि अवटो मेवा मिसरी डारीजी ॥५॥ आपन जीम भरतजीसूँ पूछें कहा परस्यो महतारीजी ॥६ ॥ निर्मल जल सरयूको अचवन रत्नजटित भरि झारीजी ॥ ७ ॥ तुलसिदास द्वारे यश गावै जूठनके अधिकारीजी ॥ ८ ॥ २ ॥

मातु कौशल्या रघुवीर बोलाये आवो राम वियारू कीजे सुनत वचन सादर हरि आये ॥ टेक ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन मातु हर्षि आसन बैठाये ॥ कंचन थार धरे हरि आगे जनकसुता परसे मनलाये ॥ १ ॥ पापर पूप पकौड़ी पेड़ा फेनी गुंझा गरम बनाये ॥ पूरी कचौरी मुँगौरी जलेवी सीरा सेव वडा अधिकाये ॥ २ ॥ अदरख आम अचार कदलीफल कटहर नींबू लोन चराये ॥ खीर खांड खाजा दधि खुरमा बेसनके बहु व्यंजन बनाये ॥ ३ ॥ मधु मिश्री मेवा बहु विधिके रुचि रुचिकै रघुवर जी पाये ॥ अचवन ले हरि पान करचो है रामसेवक आनंद उरछाये ॥ ४ ॥ ३ ॥

कौशल्या कुँवर वियारू कीजे प्रेम सहित बोली कौशल्या जगत् ईश जननी सुखदीजै॥ टेक॥ मीठापाक जलेबी पेड़ा सेव लाडू मोती लाडू मुगद वनाये ॥ पुरी सरपुरी मनोहर गुटका खाजा खुरमा राम मन भाये ॥ १ ॥ रायती दही मिसरीमें घोरचो विविध भाँतिके वडा वनाये ॥ आदो निबू और अथानो कचरी करोंदा केर मँगाये ॥ २ ॥ औटो दूध खोवा करि आन्यो वारी जाय मात ग्रास दुइ लीजे ॥ वीरी आरोगि पलंग पधारो जूठन ज्ञानदेवको दीजे ॥ ३ ॥ ४ ॥

सुखनिधि रघुवर करत वियारी ॥ मधु मेवा पकवान सरसरस प्रेम सहित परसे महतारी ।टेक॥ गुंझा लाडू उजरी फेनी पुरी सरपुरी पुवा सुहारी ॥ घेवर पापर तप्त जलेवी मिश्री सीरा सरस समारी ॥ १ ॥ सूरन आम करोदा जेमत आदो निंबू अति रुचिकारी ॥ औटो दूध धरो लै आगे पियो लाल जननी वलिहारी ॥ २ ॥ अति सुगंध सरयू जल सियरो रत्नजडित भरि लाई झारी ॥ भोजन कियो लियो प्रभु अचवन राजिवनयन वयन वलिहारी ॥ ३ ॥ वीरी देत सियाजी कर अपने गरिय कपूर भरि लौंग सुपारी ॥ गोकुलदास द्वारे यश गावै पावत जूठ रहै कछु थारी ॥ ४ ॥ ५ ॥

राम जिमुनार चले हो उनी दे नयन रतनारे राम जिमुनार चले ॥ टेक ॥ ब्रह्मा आदिक थारी लाये नारद लाये झारी ॥ दूध भात कौशल्या लाई रघुवर करो हो वियारू॥ राम जिमुनार चले ॥ १ ॥ खाजा खुरमा तप्त जलेवी अजव बनी तरकारी ॥

राम लक्ष्मण जेमन बैठे परसत जनकदुलारी ॥ २ ॥ खासा मलमल औ दरियाई फूलन सेज बनाई ॥ राम लक्ष्मण पौढन लागे भरतजी चमर ढुराई ॥ ३ ॥ सब देवता मिलि चौकी आये वीर आसन हनुमान् ॥ राम० ॥ तुलसिदास प्रभु द्वारे ठाढो कनक डबा भरिपान ॥ ४ ॥ ६ ॥

अचवन कीजै अवधविहारी ॥ शीतल सुंदर जल सरयूको निकट धरी भरि कंचनझारी॥टेक॥खासा झीना अमल अँगोछा लिये ठाढीहै जनकदुलारी ॥ सो लेकै कर वदन अँगोछो वचन कहैं निज मातु उचारी ॥ १ ॥ कत्था चूनो लौंग इलाची लष ण लगाये पान सुधारी ॥ पाई पान पौढ़िये त्रिभुवनपति राम सेवकके प्रभु सुखकारी ॥ २ ॥ ७ ॥

लाडिले रघुराई पियो पय लाडिले रघुराई ॥ उत्तम मणि मय कनक कटोरा कौशल्या भर लाई ॥ टेक ॥ बहुत कह्यो बलि जाउँ रामजी मिसरी दैहै मिलाई ॥ विशद औषध पियो पय रुचिसो तेरी शिखा बढै अधिकाई ॥ १ ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन सँग बैठो चारो भाई ॥ भोर भये विट्ठलके प्रभु को देहो मे मेवा औ मिठाई ॥ २ ॥ ८ ॥

मोहनलाला बियारू कीजे ॥ व्यंजन मीठे खाटे खारे रुचिसो माँगि जननी सूं लीजे ॥ टेक ॥ खोवा मिसरी अरु वासूंधी ता ऊपर तातो पय पीजे ॥ जोर मंडली भोजन कीजे जूँठन आशकरनको दीजे ॥ १ ॥ ९ ॥

कछु जीमो बलि जावति मैया मेरो कह्यो न मानत मोहन मैं अपने बलभद्र कि मैया ॥ टेक ॥ हँसि हरि किलकि गरे लपटाने यो कह मैया मेरो कन्हैया ॥ सखा सहित हरि जीमन बैठे परमानंद दास बलिजैया ॥ १ ॥ १० ॥

करत बियारू मोहन हँसि हँसि करत बियारू मोहन ॥ चितवनमें चित चोर लेतहैं नख शिख सुंदर रूप सगोहन ॥ टेक ॥ औटो दूध कनक बेला भरि लै ललिता आई है गोहन ॥ फूंकत पिवत सेरात सांवरो अंचल दैदै मात यशोहन ॥ १ ॥ देखत बने कहत नाहिं आवै सुधि भूलीहै मोहीं सोहन ॥ कृष्णदास गिरिधरन लाडिली चित चोरेहै मृदु मुसकोहन ॥ २ ॥ ११ ॥

भलिये भाँति सो कीन्हों भोजन भलिये भाँति सों कीन्हों॥ षटरस व्यंजन बरा सलोना मांगि मांगि हरि लीन्हो ॥ टेक ॥ हँसत लसत परसे नंदरानी बालकेलि रसभीनी ॥ परमानंद बच्यो पनवारो बाँट सखनको दीन्हों ॥ १ ॥ १२ ॥

युगलकिशोर किशोरी अँचवत युगल किशोर किशोरी ॥ भोजन कर बैठे सिंहासन भलिये विराजत जोरी ॥ टेक ॥ कोउ सखि चरण पछालति ठाढी कोउ सखि करत निहोरी ॥ कोउ सखि लाई कुंदर खरिचा युगल चरण हित जोरी ॥ १ ॥ कोउ सखि प्यारेजूको वागो लाई कोइ राधेजीकी सुरंग पटोरी ॥ एक सखी दर्पण ले आई एक देत बीरी भरझोरी

॥ २ ॥ निज मंदिर बैठे पिय प्यारी कोउ डारत तृणतोरी ॥ सेवासखि श्रीवल्लभजीको जूठनलैके करत निहोरी ॥ ३ ॥ १३ ॥

बीरी देत ब्रजनारी ललजिको बीरी देत ब्रजनारी ॥ पान सुपारी कत्था गुलाबी लौंगन खील सँवारी ॥ टेक ॥ मृगनयनी खंजन सी ठाढी कंचन वेल सवाँरी ॥ कमल करन बिच लैलै बीरी ठाढी करत मनुहारी ॥ १ ॥ कहत लाडली बीरी ल्यो प्रभु श्याम सुंदर शुभकारी ॥ कृष्णदास गिरिधर आरोगो श्रीवल्लभ प्राणअधारी ॥ २ ॥ १४ ॥

बीरी लेवो मेरे करसों रंगीले लाल ॥ नागवेल और सुगंध सुपारी तुमहींको लाई घरसों ॥ टेक ॥ मुक्ताको चूनो कत्था लाई लौंग इलाची भरके ॥ संतनको दीजे उगार प्रभु विनती करतहूं डरके ॥ १ ॥ १५ ॥

खवावत कर कर बीरी पान खवावत कर कर बीरी ॥ यक-टक हो मोहन मुख निरखत देत परस्पर धीरी ॥ टेक ॥ हँसत निहारत वदन श्यामके तनुकी सुधि बिसरीरी ॥ रसि-कराय मोहनके अँग अँग कर छतियाँ परसीरी ॥ १ ॥ १६ ॥

पान खवावत मोहन प्यारीजीको पान खवावत मोहन ॥ सुंदर मुख सुख देखोइ चाहत नंदनँदन पिय सोहन ॥ टेक ॥ यद्यपि करतल न लेत लाडली करत विनय पद गोहन ॥ श्री-भट निपट दीनतन देखत मुसकि मुसकि दियो ठोहन ॥ १ ॥ १७ ॥

रामकी प्रसादी पावे पवनसुत रामकी प्रसादी पावे ॥ टेक ॥

खाटे मीठे और चरफरे रुचि रुचि भोग लगावे लैलै नाम सकल व्यंजनको आप जिमे बतलावे ॥ १ ॥ जनकसुता अपने करपल्लव शीतल पवन ढोरावे ॥ कनिकाको ब्रह्मादिक तरसे शंकर ध्यान लगावे ॥ २ ॥ श्रुति कीर्ति उर्मिला मांडवी सरयूजल अचवावे ॥ या छवि निरखि मग्न भये तुलसी आनंद उर न समावे ॥ ३ ॥ १८ ॥

अथ दूध पिवन.

एरी दूध लाई यशोमति मैया ॥ दूध पियो मेरे कुंवर लाडिले तेरी बेनी बढेगी भैया ॥ टेक ॥ आछे नीको औट सेरायो तामे मधुर मिठैया ॥ परमानंद प्रभु अब दूध पीजै भोर उठत देउँगी बैया ॥ १ ॥ १ ॥

दूध पियो मनमोहन प्यारे॥बलि बलि जाउँ गहर जनि करहो कमल नयन अँखियनके तारे ॥ टेक ॥ भर बेला पीजै सुख दीजै और पियो बलभद्र पियारे ॥ परमानंद दासके ठाकुर भोर उठत करो चैयारे ॥ १ ॥ २ ॥

हँसि हँसि दूध पिवै गोपीनाथ॥मधुर कोमल वचन कहि प्राणप्यारी साथ ॥ टेक॥कनक कटोरे भरोहै अमृत लियो है ललिता हाथ ॥ लाडली अचवाये पहिले पाछे आप अघात ॥ १ ॥ चिंतामणि चित वसोरी सजन निरखि पिया मुसकात ॥ श्यामा श्यामकी जुगल छविपर रसिक बलि बलि जात ॥ २ ॥ ३ ॥

सिंधुसुता महरानी खवावत सिंधुसुता महरानी ॥ पान पुरान मसालन संयुत सांचि सुगंध सुजानी ॥ टेक ॥ श्रीजग-

नाथ मुसकात खातहैं प्यारीलखि मुसकानी ॥ परमानंद अपार परस्पर कासो जात बखानी ॥ १ ॥ श्रीबलदेवजीको देत रेवती सुभद्राजीको बानी॥सुदरशन को सखियें खवावें चारों सुख की खानी ॥२॥ पूगीफल गिरि लौंग जायफल कपूरकी अरघानी ॥ पीकदान रतनमय कर लिये वल्लभ सखिय सयानी ॥ ३॥ ४॥

खेलतहै पिय प्यारी पांसा खेलत हैं पिय प्यारी ॥ रत्न-जटित चौकीपर ढारत हँसत करत किलकारी ॥ टेक ॥ पहिले दांव परचो श्यामाको पीत पिछोरी हारी ॥ अबकी बेर पिया मुरली लगावो तो खेलौगी गिरिधारी ॥ १ ॥ जानत हो छल बल कर छूटो कहो लाल हरि हारी॥ परमानंद दासके ठाकुर जीती है वृषभानुदुलारी ॥ २ ॥ ५ ॥

अथ शयन.

सखिरी तू पुष्पसेज बनाय ॥ जानकी श्रीराम राजा पौढिये प्रभु आय ॥ टेक ॥ कनक पलँगा रत्न जडिया अगर चंदन लाय ॥ केतकी कमल गुलाब पॉडरी गहिरि चंपाजाय ॥ १ ॥ पान नागर परम सुंदर लीजिये रघुराय ॥ लौंग सहित कपूर बीरी लेहो रुचि उपजाय ॥ २ ॥ चरण चापत रहों मैं निशि दिन रावरो यश गाय ॥ दास तुलसी शरण आये लेहो प्रभु अपनाय ॥ ३ ॥ १ ॥

अब प्रभु कीजिये उठि शैन ॥ लटकि आई चाँदनी प्रभु

बहुत बीती रैन ॥ टेक ॥ उठे राजसमाजते प्रभु सुनि सखीके वैन ॥ प्राणनाथ प्रवीनहैं प्रभु जानकी सुखदैन ॥ १ ॥ २ ॥

राग केदारा।

भवन गवन प्रभु कीजै सेज बिछी भवन गवन प्रभु कीजै ॥ टेक ॥ परिश्रम भये सभा सब बैठे सबको आयसु दीजै ॥ रामदूत हनुमान पवनसुत सँग चौकीको लीजै ॥ १ ॥ कमल मुखी कमला मगहेरे प्रेम प्रीति रस भीजै॥मन क्रम वचन तुम्है प्रभु सेवै चपला अचल करीजै ॥ २॥ मंदमंद मुसकात छबी ले बोलत वचन रसीले ॥ बालानंदको देहै किंकरी श्रीपति ऐसे सुशीले ॥ ३ ॥ ३ ॥

बैठे सुखपाल लाल आवत महलमें जू ॥ आलसभरे उनींदे सुलोचन अति अलसाने कछु मदन गहलमैं जू ॥ टेक॥ चुनि चुनि कलियां में सेज बनाई चोवा चंदन चरचूँ चहलमें जू ॥ पौढे श्रीदरशरथराज कुँवरवर अग्र अली जहँ दासी टहल-मैजू ॥ १ ॥ ४ ॥

पौढे श्रीरघुवर प्राण अधारा जू ॥ जनक कुँवरि वर चरण पलोटत शारद गावत राग केदाराजू ॥ टेक ॥चुनि चुनि कलियां मै सेज बनाई सोंधे अरगजा चरच चहलमेजू ॥ जनदेव प्रभुजीको बिरिया खवावत सीताराम नित प्रति करत विहाराजू ॥ १ ॥ ५ ॥

सेज सीताराम पौढे सुख सेज सीताराम ॥ आनँद सिंधु

अयोध्या नायक जानकी भुजवाम ॥ टेक ॥ कनक मंदिर पुष्पशय्या रचेहै विविध विधान ॥ देवता सब चौकि आये सन्मुखहै हनुमान ॥१॥ शेष शंकर करत अस्तुति रटत निशि दिन नाम ॥ गर्वगंजन राम राजा भक्ति पूरण काम ॥ २ ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा कनक डबा भरि पान ॥ दास तुलसी लिये ठाढे खानाजाद गुलाम ॥ ३ ॥ ६ ॥

जगन्नाथ अलसाने सलोने जगन्नाथ अलसाने ॥ लोचन कमल श्याम शिथलाने सुघर अधिक अरुणाने ॥ टेक ॥ श्रीभुज दक्षिण श्रीके कंधधरि अँगिराने जँभुवाने ॥ औघत झुकत चौकि तकिया धरे प्यारी हँसि मुसकाने ॥ १ ॥ अद्भुत रूप स्वरूप श्यामाके रतिपति कोटि लजाने ॥ वल्लभि विहँसि सेज रचवे लगी दासी सुलभ बखाने ॥ २ ॥ ७ ॥

सेज सुंदरि बनी हरि की सेज सुंदरि बनी हस्तिदंत अनूप पाया जटित माणिकमनी ॥ टेक ॥ हेम सीरोसोन पाटी लसत नाना कनी ॥ दिव्य रेसम देव दुर्लभ नीके २ तनी ॥ १ ॥ पलँग ऊपर अनूप अंबर तुला तामे छनी ॥ विविध तापर वसन सोहे मोहे निजमोहनी ॥ २ ॥ सेज बंद जडाव झब्बे तकिया बहु अनगनी ॥ सेज शीतल सुभग कोमल मानो रवि शशिजनी ॥ ३॥ हली सेज अनूप आभा सुभद्रा छवि घनी ॥ अमितशोभा स्वामि शय्या जगत्पति जा धनी ॥ ४ ॥ चोवा चंदन कपुर कस्तूरी पुण्य गंधो सनी ॥ चरचि रचि रचि अखिल फूलन वल्लभी कछु भनी ॥ ५ ॥ ८ ॥

अब उठि पौढिये महाराज ॥ संत गण मुनि देव गंधर्व गावै सहित समाज ॥ टेक ॥ परानंद स्वरूप स्वामी ब्रह्मदारू व्याज ॥ बलिनमे बलवान बाहू दुष्ट दानव गाज ॥ १ ॥ वदन तुम्हारो देख पापी तरे सरिगये काज ॥ रूप तुम्हरो अमित देखत कोटि कंद्रप लाज ॥ २ ॥ वल्लभीको देख दीजै सजै शय्या साज ॥ जगन्नाथ अनाथ बंधू संतके शिरताज ॥३॥९॥

जगन्नाथ दयाल पौढे श्रीजगन्नाथ दयाल ॥ ज्येष्ठ हलधर रानि सुभद्रा चक्र असुरन काल ॥ टेक ॥ रत्न भवन विचित्र पुतली लसत हीरालाल॥व्याल मणि शशि कोटि वारों वारो रवि कोटि वाल ॥ १ ॥ जरी चंदवे चंद निदहिं तारन्ह मोतिन माल ॥ अमिय तिनते झरत झिमि झिमि अखिल तिन्हमें ख्याल ॥ २ ॥ सेजवनके अनूप आभा रती देखि विहाल ॥ कनक पत्रन घनन वस्तू लिये युवती जाल॥ ३॥ रमाआरति करत मोही करन कंचन थाल ॥ वल्लभी वल्लभहि देखत वाल वाल निहाल ॥ ४ ॥ १० ॥

बलभद्र देव अनंत पौढे बलभद्र देव अनंत ॥ देवी सुभद्रा चक्र सुदर्शन सहित कमलाकंत ॥ टेक ॥ धोय मंदिर चले पंडा पलँग बिछे गजदंत॥ जगदीश रात बहुत गइ सोये सकल जीव और जंत ॥ १ ॥ शयन आरति देख सुर मुनि वदत जय जयसंत ॥ धन्य हलधर धन्य माधो माधोदास भनंत॥२॥११॥

जय जय श्रीजगन्नाथ जगदेवा शिव विरंचि नारद करें सेवा ॥ टेक ॥ पुरुषोत्तम प्रभु अलख अभेवा महिमा गुणगावै

सुख देवा ॥ जय जय जय गिरि लालविहारी साधुनके आनँद हितकारी ॥ १ ॥ छप्पन भोग लगै दिन राती, पटरस व्यंजन नाना भाँती ॥ सुर नर मुनि जन करत आरती, कंचनथार कपूर कि वाती ॥ २ ॥ पुष्पअंजली जय जय बरषैं, नर नारी आनँद मुनि हरषैं ॥ चमर छत्र सिंहासन राजै, श्रीजगन्नाथ जीको राज विराजै ॥ ३ ॥ दुग्धफेन रुचि सेज बनाई, पौढे सजे त्रिभुवनपति राई ॥ सिंधुसुता जब मंदिर आई, दास वली आये शरणाई ॥ ४ ॥ १२ ॥

नयनन अरुणता छाई लालजीके नयनन अरुणता छाई ॥ छिटकि छिटकि कर पल्लव मुखपर ऐंढे लेत जँमाई ॥ टेक ॥ पांच सखी मिलि सेज बनाई श्रीमंदिर सुखदाई ॥ पुष्प सुवास व्यास लिये ठाढे पौढौ श्रीयदुराई ॥ १ ॥ १३ ॥

नयन अरुण अनियारे लाल जीके नयन अरुण अनियारे ॥ नींद भरे अलसात मनोहर घूमिरहे रतनारे ॥ टेक ॥ विविध भाँतिकी सेज बनाई श्रीमंदिर पगधारे ॥ शयन उचित सब साज सखी लिये मृदु मुसकात निहारे ॥ १ ॥ करि शृंगार माल फूलनकी वर्ण वर्ण वपु धारे ॥ दासावलि अभिराम विलोकत छवि वर्णत कवि हारे ॥ २ ॥ १४ ॥

तुम पौढो मै चमर ढोरावो ॥ चापों चरण रहो पाथीतर निर्मल यश मधुरे स्वर गावो ॥ टेक ॥ सहचरि चतुरी अबै आवतहै दंपति छवि नयना देखलावों ॥ आशकरण प्रभु मोहन नागर ये सुख श्याम सदा मै पावो ॥ १ ॥ १५ ॥

नयन नींद घुमानि पिया नयननमे नींद घुमानी ॥ झुकि२ परत अंश भुज ऊपर ललिता कहति कहानी ॥ टेक ॥ नैन वैन आलस युत जानी शयन आरती ठानी ॥ विट्ठल विपुल विनोद कि बातें सबहिनके मन मानी ॥ १ ॥ १६ ॥
पौढिये घनश्याम बलैया लेवों सीरिसि व्यार झरोये आवै रजनी घटी युग याम ॥ टेक ॥ चुनि चुनि कलियां मै सेज बनाई और डबा भर पान ॥ आशकरन प्रभु मोहन पौढे सेवा सुमरन ध्यान ॥ १ ॥ १७ ॥

सुख पौढे हरि कुँवर कन्हाई ॥ नौतम वसन विविध कुसुमावलि मैं अपने कर सेज बनाई ॥ टेक ॥ नाहिन समय सखी काहूको ग्वाल मंडली सँग बहुराई ॥ आशकरन प्रभु मोहन नागर नागरिको ललिता ले आई ॥ १ ॥ १८ ॥

नयनानींद भरेहो लालजिके नयनानींद भरे ॥ सेज सघन अरुण अनियारे चंचल चपल खरे ॥ टेक ॥ अद्भुत रूप स्वरूप श्यामके मन्मथ मान हरे ॥ आनंदी सखि सेज सँवारे श्रीपति शयन करेहो ॥ १ ॥ १९ ॥

मदन मोहन श्याम पौढे माई मदन मोहन श्याम ॥ आनंद होइ चरणारविंद भजु सकल पूरणकाम ॥ टेक ॥ अष्ट सिधि नवनिद्धि द्वारे योग भोग विश्राम ॥ उमापति शुकदेव नारद रटत निशि दिन नाम ॥ १ ॥ सकल कला परवीन गिरिधर राधिका भुजवाम ॥ कहत कृष्णा सुवश वसियो श्रीनंद गोकुल ग्राम ॥ २ ॥ २० ॥

रंगमहल गोविंद पौंढे माई रंगमहल गोविंद ॥ संग राधे शरद रजनी उदित पूरणचंद ॥ टेक ॥ चित्र विचित्र अनेक चितलिये कोटि कौतुक फंद ॥ हर्षि निरषिविलास विलसत दंपती रसकंद ॥ १ ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा उठत लहर सुगंद ॥ पुष्प व्यंजना चमर ढोरे सजनि परमानंद ॥२॥२१॥

शयन करो नारायण देवा॥चरण पलोटि करों हरि सेवा ॥ शयन करो तुम अन्तर्यामी मनसा वाचा करो गुलामी ॥ १ ॥ सोने कि कोर किरोर कि सारी रुक्मिणि पलँग बिछाये झारी ॥ फुल गेडवा गजमुक्ता सोहे निरखत पलँग नामदेव मोहें ॥ २ ॥ २२ ॥

पौढे माई द्वारका रणछोड़ रत्नागिरि की लहर उठत है गोमति करत किलोल ॥ टेक ॥ घंटा ताल पखावज बाजे शंखनकी घनघोर ॥ संतनकी रक्षाके कारन डारेहे असुर मरोर ॥ १ ॥ टीकम माधो औ पुरुषोत्तम कुँवर कल्याण किशोर ॥ राधा रुक्मिणि अरु सत्यभामा कुँवरि रहीं करजोर ॥ २ ॥ लक्ष्मीजीके महल पधारे दीपक लाख करोर॥ दास देवा शरण आये ठाढेहे करजोर ॥ ३ ॥ २३ ॥

राग केदारा ।

लागगये दोउ नयनरी बतियां करत करत ॥ दशरथ सुत अरु जनकनंदनी रूप शील गुणअयन ॥ टेक ॥ झीन बीन सुरमांदल बाजे बीति याम युग रयन ॥ मधुर मधुर हरि सहचरी गावें बोलत अमृत वयन ॥ १ ॥ २४ ॥

रागविहागरा।

अब आई कमला करनको सेवा ॥ पुष्प् अंजलि दियेहै महाप्रभु विदा भये सुरपुरके देवा ॥ १ ॥ मोदक मगद मिठाई अनगन भोग लगे प्रभु मिसरी मेवा ॥ श्रीवलवीर विमल यशगावै जनदेवा जूठनके लेवा ॥ २ ॥ २५ ॥

एदोउ सुरत सेज मिलि सोये ॥ टेक ॥ करत पान मकरंद पिया पिय अधर पान मुख भोये ॥ १ ॥ तनसो तन मनसो मन मिलवत नयन कमल मुखजोये ॥ २ ॥ नरहरदास यह सुख निधि विलसत मदन मान सब खोये ॥ ३ ॥ २६ ॥

मुजरो मानिये महाराज ॥ सब साधुनकी वीनती प्रभु हमरी तुमको लाज ॥ टेक ॥ प्रह्लादकी प्रतिज्ञा राखी खंभ माहि अवाज ॥ डुवतसो गजराज राखे ध्रुवको अविचल राज ॥१॥ द्रौपदीकी लाजराखी चीरकेरे काज॥ विभीषणको लंक वख्शी सागरवांधी पाज ॥ २ ॥ नवरंग तकिया पलंग राजे रंगमहल अवास॥ सूरके प्रभु श्याम पौढे कीजे भोग विलास॥३॥२७॥

कपिकी चौकी आई साधो भाई कपिकी चौकी आई ॥ चलियो वेग विलम नहि कीजे सीख सबन मिलिपाई ॥ टेक ॥ बडे बडे योधाहै कपिध्वजके रहत महल परछाई ॥ चार पहरके चार पहरुवा चौकस रहियो भाई ॥ १ ॥ नाकाहूको करत भरोसो नाकाहू पतियाई ॥ तुलसिदास हनुमानजी भरोसो सुख पौढे रघुराई ॥ २ ॥ २८ ॥

अथ जन्म रामनवमीके.

नौमीके दिन नौबति बाजे सुत कौशल्याजायोरी ॥ सात घड़ी दिन वीतिगयो तब सखियन मंगल गायोरी ॥ टेक ॥ अति आनंद अवध पुर घर घर भयो सबन मनभायोरी ॥ शुभ नछत्र शुभ घरी मुहूरत मंगल कलश बनायोरी ॥ १ ॥ जय जय कार करत सुरपुरमें पुष्प वृष्टि झर लायोरी ॥ कंचनथार भरे मोतियनके चंदन चौक पुरायोरी ॥ २ ॥ धनि यह वंश भयो रघुकुलको परम पुरुष तहँ आयोरी ॥ गृह गृहते कुल वधू बुलाईं मंगल गावत आईरी ॥ ३ ॥ रायआंगनमें डारि दुलीचा आदर करि बैठाईरी ॥ विश्वामित्र वशिष्ठ आदिदे विप्र पवित्र बुलायेरी ॥ ४ ॥ जात करम दशरथ नृप कीन्हो अरु भंडार लुटायेरी ॥ विप्रननाम धरचो विश्वम्भर शुभ श्रीराम सुनायेरी ॥ ५ ॥ फूले फिरत सबै रघुवंशी मनहुं रंक निधि पायेरी ॥ खासा हीरा पाट पटंबर दिये जाहि मन भायेरी ॥ ६ ॥ कंप्योसिंधु कंगूर थरहरे आगम निगम जनायेरी ॥ सब लंकामें शोच परचोहै कोउ राजवीर गृह आयोरी ॥ ७ ॥ चिरजीवो कौशल्या नंदन सबन अशीश सुनायोरी ॥ कमलानंद कहांलों वरनों तीन लोक यश गायोरी ॥ ८ ॥ १ ॥

राग आसावरी।

रामजन्म सुनि अपने पतिसों हँसि ढाढिनि यों बोलीहो ॥

जाहु कंत राजा दशरथको दान कोठरी खोलीहो ॥ टेक ॥ तुमको देइ अंगको वागो और दक्षिणा भर झोरीहो ॥ हमको लीजो नखशिखको गहनो पटर सुधाकी चोलीहो ॥ १ ॥ साज सहित यक घोडा लीजो गैया दूध अचोईहो ॥ सहित अमारी हाथी लीजो हथिनी अधिक अमोलीहो ॥ २ ॥ लीजो कंत कहार सहित यक हमन चढनको डोलीहो ॥ सोलह्वर्षकी सुंदरि लीजो टहल करनको गोरीहो ॥ ३ ॥ सेज सहित एक पलँगा लीजो और पाननकी ढोलीहो ॥ बीरी करि करि हमहिं खवावे लीजो सुघर तमोलीहो ॥ ४ ॥ जन्म जन्म काहूके आगे बहुरि न मारो बोलीहो ॥ जन गोविंद रघुवीर याचिके भयेहैं अयाचक ढोलीहो ॥ ५ ॥ २ ॥

राम जन्म सुनि ढाढी ढाढिनि आज़ु आनंदमें डोलैहो ॥ रघुवंशिन की घरकी ढाढी कोउन इन सम तूलैहो ॥ १ ॥ चार पुत्र जनमें दशरथगृह सब सुर जय जय बोलैहो ॥ हालरदे हुलरावत गावत सुखके सिंधु झकोरैहो ॥ २ ॥ मुँहमाँग्यो कर जोरि देतहै ढाढी पलक नखोलेहो ॥ रानी राजा आज़ु लघु मोहन मोल लिये विन मोलेहो ॥ ३ ॥ ३ ॥

राय दशरथके आनंद बधाई ॥ घर घर मंगल होत अयोध्या द्वारे वंदनवार बँधाई ॥ टेक ॥ नवल नारि सब देत साँथिया चित्र विचित्रन सींक बनाई ॥ रोरी चंदन दूब दही लो आँगन मोतियन चौक पुराई ॥ १ ॥ बाजा बाजि रहे बहु

विधिके डफ दुंदुभी ढोल सहनाई ॥ नंददास चिरंजीयो रघुवर सखी सुवासिनि सब पहिराई ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

रागसारंग ।

अयोध्या राम लियो अवतार ॥ चैतमास नौमी उजियारी भयो दुपहरी वार ॥ टेक ॥ पूरण ब्रह्म कृपा कर प्रगटे आये दशरथद्वार ॥ जन्मभयो भक्तनके कारण भूमि उतारन भार ॥ १ ॥ विप्रपवित्र बैठे ऑगनमे करत वेद उच्चार ॥ कनक कलश ध्वज वंदनमाला सोहत घर घर द्वार ॥ २ ॥ भेरि दमामे झांझै बाजे शंख शब्द बहुतार॥पुरकी वधू सबै सुन धाई नव-तन साजि शृंगार ॥३॥ नाचत मग्न भई सब सुंदरि गावत मंगल चार ॥ चढि विमान सुर कौतुक आये वर्षत कुसुम अपार ॥४॥ अति आनंद उमँगे नृप दशरथ भये दान उदार ॥ मणिकंचन गोदान द्विजनको देत सुबहुत प्रकार ॥ ५ ॥ दधि दूर्वा ले देत वंदिजन ठाढे करत विहार॥हीरा वारिदिये रघुपति पर भर भर कंचन थार ॥ ६ ॥ कुंजर अश्व और बहु दाना गोधन नाहीं पार ॥ भिक्षुक सबहिं अयाचक कीने करत न लाये वार ॥ ॥ ७ ॥ कौशल्या के प्राण जिवन धन दशरथके आधार ॥ भक्तजननके कल्पतरूवर रघुपति राजकुमार ॥ ८ ॥ तीन लोक अरु भुवन चतुर्दश गावत सुयश अपार ॥ तुलसिदासको भक्ति दान देहु पूरण अक्षय भंडार ॥ ९ ॥ ५ ॥

रागबिलावल।

राम जन्म आनंद वधाई सुरतरु कामधेनु चिंतामणि अवध पुरी मानो घर घर आई ॥ प्रफुलित हियो नगरवासिनको बाल वृद्ध सब बात सोहाई ॥ १ ॥ भई भीर नाचै नरनारी बाजे बहुत गने नहिजाई ॥ सुवरण कलश चौक मोतियनके द्वारे बंधनवार बँधाई ॥२॥ शिशु को वदन निहारि नारि सब वारत भूषण लेत बलाई ॥ रत्नकोषि कौशल्यारानी धन्य भाग्यकी करत बडाई ॥ ३ ॥ दशरथ राय आय भये ठाढे कनक वसन मणि धेनु मँगाई ॥ परम पुनीत विप्र पद वंदित दान मानसों देत बधाई ॥ ४ ॥ मागध सूत भाट वंदीजन आपु विधू मन वांछित पाई ॥ दशरथसुत मुख नृपती देखेहु अग्रदास जीये यह भाई ॥ ५ ॥ ६ ॥

राग आसावरी।

हंस सुवंश गृहे दशरथके देह धरे अविनाशीहो ॥ अंश न सहित करन सुखसंतन भंजन भव भय फाँसीहो ॥ टेक ॥ मधुमास दिन नवमी सोम शुक्ल सुपुण्य प्रकाशीहो ॥ युगल याम वर परम पुनर्वसु प्रगटे विश्वविलासीहो ॥ १ ॥ परम मग्न सुनि भये हैं महामुनि सकल कोशलावासीहो ॥ नाचत लाज तजिगये बिसर सुध वस्त्र अगोचर भासीहो ॥ २ ॥ ध्वजा अवलि फहरात सुनौवत मृदु घहरात घटासीहो ॥ मनसुखनाथ अनूप सदाके अमित रूपरसराशीहो ॥ ३ ॥ ७ ॥

अवधनगर वर नृप दशरथ घर देह दयानिधि धारीहो ॥
निर्गुण नित्य निरंजन जनहित हरनभार भूभारीहो ॥ टेक ॥
अति पुनीत मधुमास लग्न ग्रह नवमी शुभ उजियारीहो ॥
युगल याम वर चढत पुनर्वसु प्रगटे राम खरारीहो ॥ १ ॥
विसरे सब सदननके कारज महा मग्न नर नारीहो ॥ सोहे
भूभाग्य कौशल्या नाचत लाज विसारीहो ॥ २ ॥ वाजे वजत
वदत गुणगायक पढत सुभाट पुकारीहो ॥ हय गज रथन
लुटावत नृपजू आवत नजर मँझारी हो ॥ ३ ॥ सुर नर मुनि
जाको पार न पावे शंभु समाधि न टारीहो ॥ चिरंजीवि मन-
सुख के स्वामी जल थल अवध विहारी हो ॥ ४ ॥ ८ ॥

राग आसावरी ।

सुंदर राम पालने झूलै कौशल्या गुणगावेरी ॥ वलि अव-
तार देव मुनि वंदित राजिवलोचन भावेरी ॥ टेक ॥ दशरथ
पलना सरस गढायो सब चंदनको साजूरी ॥ हीरा जटित
पाटकी डोरी रत्नबनाये बाजूरी ॥ १ ॥ राते चरण कमल
कर राते सुभग श्यामतनु सोहेरी ॥ घूँघुरवारी अलके विराजे
मधुरहास मनमोहेरी ॥ २ ॥ घर घर मंगलचार अयोध्या
राजो जन्म निवासरी ॥ कहत सुनत सब होत कृतारथ वलि
परमानंद दासरी ॥ ३ ॥ ९ ॥

चारों ललना पालने झूलै जननी हर्षि झुलावै री ॥ देव
मुनी गण ध्यान धरतहै ध्यानहु आवत नाहीं री ॥ टेक ॥

ब्रह्मा शिव सनकादिक नारद निरखि निरखि मुसकावैरी॥ धन्य भाग्य राजादशरथके पुत्रन गोद खेलावैरी ॥ १ ॥ पूरणब्रह्म अखिल अविनाशी नृप सुत आय कहावैरी ॥ भक्त वत्सल भक्तन हितकारन बलि गुणरूप देखावैरी ॥ २ ॥ १० ॥

रागटोडी ।

देखो द्वारे राय दशरथको कहत न कछु बनि आवैरी ॥ मूरतिवंत मुक्ति सिधि उझकति भीतरजात लजावैरी ॥ टेक ॥ मणिमय अजिर अनूप अधिक छबि जहँ खेलत सुत चारोरी ॥ भानु कोटि द्युति काम कोटि छवि अमित तेज तनु धारोरी ॥१॥ घूँघरवारी अलक वदन पर चंचल चपल सोहातेरी ॥ मानु मंदार तेज तनुहित भयो घूमतहै मदमातेरी ॥ २ ॥ उज्वल भाल सुचिक्कन हापर श्याम चकोटा साज्योरी ॥ रघुपति मुख पूरण शशिनिरखत तिमिर सकुचि मन लाज्योरी ॥३॥ कर्ण-फूल मणि जटित मनोहर लटकि कपोल झुक्योरी ॥ दिग्गज तनु रवि कोटि उदय भयो छविता अभयसुह्योरी ॥ ४ ॥ अरुण अधर पर मुक्ता वर सखि नासा अग्र डिग्योरी ॥ सकल लोककी शोभा लेकर कमल कोस पर वस्योरी ॥ ५ ॥ वर्णों कहा विशालनयन अति उपमाको कोउ नाहीरी ॥ इंद्रियवर पर उझक परीदे लोल मीन की झारीरी ॥ ६ ॥ विघना कंठ विराज मनो अति उरपर सुभग निकाईरी ॥ द्वितिया चंद अनंद जनक मनो घनमे देत दिखाईरी ॥ ७ ॥

नील पीत सित हरित कोधनी श्याम सुभग कटि सोहैरी॥
जलद घटा मे प्रगट भयो मनो इंद्र धनुप मन मोहैरी ॥८॥
कौशल्याकी कोखि कल्पतरु मनहुं चंद्र. फल लाग्योरी ॥
पुण्य प्रभावते अगम अगोचर भलो मुक्त यह जाग्योरी ॥९॥
ब्रह्मा इंद्र महेश शारदा निज स्वरूप नहि जान्योरी॥ ताके गु-
ण कछु अग्रदास अलि मति अनुमान वखान्योरी ॥१०॥११॥

राग आसावरी।

आज्ञु अवध महाराज सदन सखि बाजत विविध वधाईरी॥ कुँवर रूप धरि नृप घर प्रगटे चारि पदारथ आईरी॥ टेक॥ प्रमुदित फिरत सकल पुर नर वर मानहु निधन महा निधि पाईरी॥ हरि हँसि मिलत रुठे नरवर सब छाँडि क्रोध अरि ताईरी॥ १॥ कहि न जाय सुंदरता अवसर बहुविधि पुरी सुहाईरी॥ आई है साँझ दिन माँझ मनो सखि प्रभुहि मिलन सुखदाईरी॥ २॥ अगर सुहोम धूम गृह गृह प्रति अंधकार अधिकाईरी॥ उडत अवीर धूरि तामाही सहज सदन अरु-णाईरी॥ ३॥ ग्रह मणि गण उडुगण नृप गृह पुनि कलश इंदु छवि छाईरी॥ मागध बंदी वेद मधुर ध्वनि मनुप गरव सुखदाई री॥ ४॥ शिशुको वदन निरखि ऋषिवर सब यक-टक रहे लुभाईरी॥ संध्या समय करत वंदन मुनि देह दशा बिसराईरी॥ ५॥ शिशुहि निहारि नारि अति प्रमुदित देत अशीश सुहाईरी ॥ चिरंजियो महाराजकुँवर वर चरणदास बलिजाईरी॥ ६॥ १२॥

अथ सीताजन्मके भजन.

रागटोडी ।

आजु जनकपुर मंगल माहि ॥ माधो शुक्र पक्ष नौमीतिथि प्रगटी कुँवरि सकल सुखदाई ॥ टेक ॥ देव नटी निरतत सुर-पुरमे वर्षत कुसुम देव हरषाई ॥ जय जय जय मुनिजन सब उचरत गावत नौतम नारि वधाई ॥१॥ करि अस्नान दान बहु देईहैं गौ गज वाजि भूमि समुदाई ॥ कनक वसन संख्यानहिं आवत याचक जननि अभिलाष पुराई ॥ २ ॥ जिहिं मांगो तिहिं तैसोई दीनो विदाकरी बहुभाँति वडाई ॥ जनक नंदिनी वदन विलोकत तुलसिदास दरवार सुहाई ॥ ३ ॥ १ ॥

रागधनाश्री ।

हम ढाढी मिथिलेशरायकी फूली अँग न समावोजू ॥ कुल-मंडन कन्याके जन्मत मन वांछित फल पावोंजू ॥ टेक ॥ दीजै लाय पुरातन मेरो तवहो डुरक वजावोजू ॥ अति निर्मल सूरजकी धार सम वंश छपाकर गावोजू ॥ १ ॥ आदि अंत निमि अंत शिरध्वज ए मेरे यजमानजू ॥ जोई यांचो सो देत हर्ष चित करत वहुत सनमानजू ॥ २ ॥ ढाढी सुनि सानंद वुलायो दान मान बहु दीन्होंजू ॥ गज तुरंग हाटक मणि भूषण परम अयाचक कीन्होजू ॥ ३ ॥ ढाढ़िन वोलि लई अंतहपुर रानिन बहु सनमानीजू ॥ नाचत गावत झाँझ वजावत कहत सुयश वखानीजू ॥ ४ ॥

लहँगा सारी अँगिया गहनो ढाढिन पहिरि विराजीजू ॥ दिन्ही चिंतामणिकी चौकी निरखि रमा रति लाजीजू ॥ ५ ॥ ओली ओडि कहत दिनकरसों ढाढिन इहै मनाईजू ॥ देख्यो जन्म स्वयंवर देखो श्रीजगदीश दुहाईजू ॥ ६ ॥ २ ॥

अथ श्रीकृष्णजन्मके भजन.

रागविहागडा।

हरिमुख देखिहो वसुदेव ॥ कोटिकाम शशिरूप सुंदर कोउ न जाने भेव ॥ टेक ॥ जुरि जुरि चलिहैं बधाव नंद घर सुंदर ब्रजकी बाला ॥ कंचन थार हार चंचल छवि कहि न परत तिहिं काला ॥ टेक ॥ डहडहे मुख कुमकुमा रस रंजित राजत सुखके ऐना ॥ कंजन पर खेलत युग खंजन अंजन युत बने नैना ॥ १ ॥ दमकत कंठ पदिक मणि कुंडल नवल प्रेम रंगबोरी ॥ आतुर गति मनो चंद्र उदय भयो धावत तृषित चकोरी ॥ २ ॥ खसि खसि परत सुमन शीशनते उपमा कौन बखानो ॥ चरण चलनि पर रीझि चिकुर वर वरषति फूलनि मानो ॥ ३ ॥ गावत गीत पुनीत करत जग यशुमति मंदिर आई ॥ वदन विलोकि बलैया लैलै देति अशीश सोहाई ॥ ४ ॥ मंगल कलश निकट दियो वलि ठाम ठाम मन भूल्यो ॥ मानहु आगम नंद सुवनको स्वर्ण फूल ब्रज फूल्यो ॥ ५ ॥ ता पाछे गण गोप ओपसो आये अतिशयसोहैं ॥ परमानंद कंद रस भीने निकर पुरंदरकोहै ॥

॥ ६ ॥ आनँदघन ज्यों राजत गाजत बाजत दुंदुभिभेर ॥ राग रागिनीं गावत हर्षत वर्षत सुखकी ढेर ॥ ७ ॥ परम धाम सुख धाम श्याम अभिराम सो कुल आये ॥ मिटिगये द्वंद्व नंद दासनके भये मनोरथ भाये ॥ ८ ॥ १ ॥

राग आसावरी ।

आजु कहां ते या गोकुलमें अद्भुत वर्षा आईरी ॥ मणि गण हार हेमकी धारा ब्रजपति अति झरलाईरी ॥ टेक ॥ वाणी विमल पढत द्विज दादुर हिये हर्षि हर्षायेरी ॥ दधि घृत क्षीर नीर नाना रँग बहिचले धार पनारेरी ॥ १ ॥ पटह निशान भेरी सहनाई महागर्जकी घोरेरी ॥ मागध सूत वदत पिक चातक बोलत वंदी मोरेरी ॥ २ ॥ आनँद भरि नाचै नर नारी पहिरे रँग रँग सारीरी ॥ वर्ण वर्ण बादरन लपेटी विद्युत न्यारी न्यारीरी ॥ ३ ॥ भूषण वसन अमोल नंदजू नर नारिन पहिरायेरी ॥ शाखा फल दल फूलनि मानो उपवन झालरि आयेरी ॥ ४ ॥ दरिद्र दावानल मिट्योहै सबनि को याचक सरोवर पूरेरी ॥ बाढी सुभग सुयशकी सरिता दुरित तीर तरु चूरेरी ॥ ५ ॥ उलझे ललित तमाल बाल यक भयो सबन मन फूलेरी ॥ छाया हित अकुलात गदाधर तक्यो चरणको मूलेरी ॥ ६ ॥ २ ॥

राग आसावरी ।

आजु महामंगल गोकुलमे पुत्र यशोदा जायोहो ॥ पूजे

सकल मनोरथ मनके भयो सबन मन भायोहो ॥ टेक ॥ गावत चलीं सकल ब्रजवनिता नंदभवन चलि आईहो ॥ पॉयलागि उठि आदरकीन्हो यशुदा निकट बुलाईहो ॥ १ ॥ नामकरण शुभ धरयौहै गर्गजू रोचन दूब मँगाईहो ॥ गुरुजन पुरजन सकल संतजन सबके शीश बँधाईहो ॥ २ ॥ घरी नक्षत्र परे शुभ नीके यह सुनि सब अनुरागीहो ॥ धन्य धन्य नर नारि गोप कहे नंद परम बडभागीहो ॥ ३ ॥ वासुदेव भगवान कृष्णजू नाम तिहारो गावोहो ॥ ४ ॥ नाम अनंत कहाँ लगि वर्णों वर्णत पार न पावोहो ॥ नाचत गोप कुलाहल पुरमे भीर न कतहुं समाईहो ॥ देखत अमर विमानन चढि चढि ऑगन बजत बधाईहो ॥ ५ ॥ यह सुनि मुनिन्ह विरति बिसराई हम न भये ब्रजवासीहो ॥ जाकारण हम जप तप कीन्हों प्रगट भये अविनाशीहो ॥६॥ ढाढी गावत ढाढिनिनाचत पावत मोतियन मालाहो ॥ देत अशीश पसारति अंचल चिरंजिवो नंदजीको लालाहो ॥ ७ ॥ कंस वधन भूभार उतारन तीनलोक सुखदाईहो ॥ मानस दास प्रभुके गुणगावत वार वार बलि जाईहो ॥ ८ ॥ ३ ॥

रागआसावरी।

देखो अद्भुत अवगति की गति ऐसो रूप धरयौहैहो ॥ तीनलोक जाके उदर मध्य सोइ शूपेके कोने परयौहैहो ॥ ॥ टेक ॥ जाके नाभि कमल ब्रह्मादिक सकल विश्व बसु

साध्योहो ॥ सोइ अब नारि कीन ब्रज युवतिन बाँटि तगासो बाँध्योहो ॥ १ ॥ जामुखको सनकादिक तप करि सकल प्रेम रस सान्योहो ॥ सोइ मुख चूमति महरि यशोदा दूध लार लपटान्योहो ॥ २ ॥ जिन श्रवणन गजकी विपदा सुनि गरुड वाहन बिसरावैहो ॥ तिन श्रवणनके निकट यशोदा हुलरावै अरु गावैहो ॥ ३ ॥ अनंत कोटि जाकी आश करतहै सो माखन देखि करि रोवैंहो ॥ अद्भुत है गिरिवरतेभारी सो पलना महँ परचोहैहो ॥ ४ ॥ सुर नर मुनि जाको ध्यान करतहैं शंभु समाधि न टारीहो ॥ सो अब ठाकुर सूरदासको गोकुल गोप बिहारीहो ॥ ५ ॥ ४ ॥

हरि मुख देखिहो वसुदेव ॥ कोटि काम स्वरूप सुंदर कोउन जानत भेव ॥ टेक ॥ जटित ताला पडत पाला श्वान नींद सनेह ॥ निशि अँधियारी बिजरी चमके सघन वर्षे मेह ॥ १ ॥ चारभुजा जाके चार आयुध देखहो नरताहु ॥ अजहुं मन परतीत नाहीं नंद गृह ले जाहु ॥ ॥ २ ॥ मास भाँदों पक्ष पहिलो रोहिणी बुधवार ॥ अष्टमी अरु रैनि आधी कृष्ण लियो अवतार ॥ ३ ॥ पहरु पौढे श्वान सूते खुले वज्रकिंवार ॥ बंध वेडी सबै छूटी कहो कौन विचार ॥ ४ ॥ शेप पीछे सिंह आगे वहे यमुनापूर ॥ नाशिकालो नीर आयो पार पैबो दूर ॥ ५ ॥ कृष्ण जब हुंकार दीन्हो यमुना जान्यो भेव ॥ फाटि यमुना बाट दीन्हो उतरि

गये वसुदेव ॥ ६ ॥ नंदसों मनुहार कीजो सुनो हो वसुदेव ॥ कहत कबीर सुत जानि अपनो बहुत कीजे सेव ॥ ७ ॥ ५ ॥

रागजैजैवंती ।

माई आज हो बधाई बाजे द्वारे नंदरायके ॥ टेक ॥ ब्रजरानीने ढोटा जायो भयो सबके मनभायो ॥ गोपिनके कान परी चलीं जुरि धायके ॥ १ ॥ हाथनमे थार लिये विविध शृंगार किये गावति मधुर गीत लई है बेढाइके ॥ २ ॥ साथिया चितताबाला बाँधति वंदन माला आँगनमें चौक पूरे कलश धरायके ॥ ३ ॥ ब्राह्मण रटत तंत्र वेदके पढत मंत्र होतहै अग्निहोत्र रही ध्वनि छायके ॥ ४ ॥ आये सब ग्वाल बाल भयो अति कोलाहल नाचत गावत हेरि आनँद बढायके ॥ ५ ॥ ढोलकी मृदंग बाजे सारंगी तमूरा साजे बाजत अनेक द्वंद्व नफीरी बजायके ॥ ६ ॥ नाचत ढाढिनि नटी वसन भूषणजटी गावति मधुर सुर मंद मुसकायके ॥ ७ ॥ ब्रजवासी भेट ल्यावैं फूले मन अंगनसमावें नंदराय ठाढ़े होय लेत शीशलायके ॥ ॥ ८ ॥ भाट वंदीजन आये वंश के नाम सुनाये ब्रजराज देत दान लेत शीशनायके ॥ ९ ॥ दोय लक्ष धेनु कीनी द्विजनको बोलि दीनी मोहरे वसन अन्न दीयहे लुटायके ॥ १० ॥ जाके जैसी होति वासा नंदराय पुरई आशा निकसे अशीशदेत चले सुखपायके ॥ ११ ॥ कुंजविहारी दास माँगत वृंदावन वास दीजे मोहि कृपा करि रह्यों शिरनायके ॥ १२ ॥ ६ ॥

रघुकुलकमलविषयक.

रागवसंत।

वंदौ रघुपति करुणानिधान ॥ जाते छूटे भव भेदज्ञान ॥ ॥ टेक ॥ रघुवंश कुमुद सुखप्रद निशेस सेवित पद पंकज अज महेस ॥ अति प्रबल मोह तम मारतंड अज्ञान दहन पावक प्रचंड ॥ १ ॥ रागादि सर्प गण पन्नगारि कंदर्प नाग मृगपति मुरारि ॥ अभिमान सिंधु कुंभज उदार सुररंजन भंजन भूमिभार ॥२ ॥ भव जलधि पोत चरणारविंद जानकी रमण आनंद कंद ॥ जिन भक्ति हृदय पाथोजभृंग लावण्य वपुप अगणित अनंग ॥ ३ ॥ हनुमंत प्रेम वापी मराल निष्काम कामधुक गोदयाल ॥ त्रैलोक तिलक गुण गहन राम भज तुलसिदास विश्राम धाम ॥ ४ ॥ १ ॥

वसंत वधावो चलो अवधि धाम जहाँ सुभग सिंहासन बैठे राम ॥ टेक ॥ सुर नर मुनि जन सकल देवता विश्वामित्र विराजे॥वाजा विविध भाँति बहु बाजे घन दामिनि ज्यों गाजे॥१॥ पान लिये पिचकारी प्यारी सोधेसूंभर लाय ॥ पांच सखी मिलि कलश बनायो भलीभाँति बनिआये ॥ २ ॥ मधुर मधुर सुर गान करतहै देत होरिन की गारी॥सब सखि मिली गुलाल उडावति कंचन भर भर थारी ॥ ३ ॥ चोवा चंदन अविर अरगजा कीच मच्यो अतिभारी ॥ उडत गुलाल अरुण भये अंबर सोधे भिजि सब सारी ॥ ४ ॥ प्रथम पंचमी बैठि सिंहा-

सन कौतूहल सब कीजिए ॥ अग्रदास की येही विनती भक्ति दान मोहिं दीजिए ॥ ५ ॥ २ ॥

वसंत बधावो चलो अवधि धाम ॥ जहँरतन सिंहासन बैठे राम ॥ टेक ॥ अति पवित्र उदार नाम लावण्य कलेवर कोटि काम ॥ रघुवंश सरोवर हंस चारि जहँ हरि विहरत नर देह धारि ॥१॥मानो कनक कलश अबअंबमौर वनितादि वृंद जहाँ नवल किशोर ॥ गृह गृह रमनी करि करि शृँगार ॥ कंठ नविच सोहत मोतियनहार ॥२॥ बाजे मृदंग डफ झाँझ ताल जहँ गंधर्व गावैं गुण रसाल ॥ अवतारशिरोमणि धर्मधाम ॥ कह तुलसिदास प्रभु सीताराम ॥ ३ ॥ ३ ॥

खेलत वसंत कौशलकुमार राजीव नयन सुखमा अपार ॥ ॥ टेक ॥ लिये भरत लषण रिपुदवन संग छवि सुभग निरखि मोहे अनंग ॥ १ ॥ झोरिन भरि भरि लीन्हे गुलाल कर पिचकारी मृगमद जु भाल ॥२॥ कानन कुंडल अति चपल नैन होली बोलै सब मीठे बैन ॥ सजि वरण वरण वनिता अनूप नर नारि थकित भये देखिरूप ॥ ३ ॥ शिर लसत पाग जरकसी लाल कलँगी जराउ तापर रसाल ॥ प्रभु वनि ठनि निकसे सिंहपौर ॥ तव सखा मिले सब दौरिदौर ॥ ४ ॥ तहँ खेल मच्यो कछु कहि न जाय अवनी अकाश रँग रह्यो छाय ॥ पिचकारी जित तित छुटे अपार ॥ भाजहिं पकरहिं अरु देहिं डार ॥ ५ ॥ मुखमेडे छाँडे बहु नचाय मुसकात मनहिं मन

रामराय ॥ सुर वर्षें सुमन करि जय जयकार चिरंजिवो सदा कोशलकुमार ॥ ६ ॥ सुख निरखि अशीशत सकल मात ॥ आनंद मोद भरे विरह तात ॥ रस सिंधु वढ्यो न समात गात॥ वलिहारी रघुवर दास तात ॥ ७ ॥ ४ ॥

खेलत वसंत राजाधिराज ॥ नभ कौतुक देखत सुरसमाज ॥ ॥ टेक ॥ इत अनुज सखा रघुनाथ साथ ॥ झोरिन अबीर पिचकारि हाथ ॥ बाजत मृदंग डफ ताल वीन छिरकत सुगंध पर मलयरेनु ॥ १ ॥ उत युवति यूथ जानकिके संग पहिरे पट भूषण अतिसुरंग ॥ हाथछरिय बेतशोभा विभाग ॥ गावे चाँचरि झूमरि सरसराग ॥ २ ॥ चढि खरन वधू गणस्वांग साधि ॥ करकूट निपट गई लाज भागि ॥ इत नारि परस्पर गारिदेत॥ सुनि हँसत राम भाइन समेत ॥ ३ ॥ कटि किंकिणि नूपुर ध्वनि सुहाय ॥ ललना गनि आँगन धरैहै धाय ॥ वारिज-लोचन फगुवा मँगाय ॥ छाडे नचाय हाहाकराय ॥४॥ वरषैं प्रसून सुर विविध वृंद जय जय श्रीरघुकुल कुमुद चंद ॥ ब्रह्मादिक संशय अवधवास ॥ कलि कीरतिगावे तुलसि-दास ॥ ५ ॥ ५ ॥

कृष्ण–वसंत.

प्रथम समाज आजु वृन्दावन विहरत लाल विहारी ॥ पंचमि नवल वसंत वधावो उमँगि चलीं व्रजनारी ॥ टेक ॥ कंचन थार लिये व्रज सुंदरि मध्यहिमें वृषभानु दुलारी ॥ फल

दल यव नवनीत मंजरी कनक कलश शुभकारी ॥१॥ गावत गीत वजावत बाजा मैन सन उनहारी ॥ दरश परश मन मोद वढावत राजत छवि अति भारी ॥ २ ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा भरिकेशर पिचकारी ॥ छिरकत फिरत छबीली गातन रंग अनूप अपारी ॥ ३ ॥ विपिन विलास हास रस वर्षत उत प्रीतम इत प्यारी ॥ हित हरि वंश निरखि यह शोभा अँखिया टरत न टारी ॥ ४ ॥ १ ॥

वसंत वधावो चलो व्रजकी नारी सखि नंद पौर ठाढे मुरारी ॥ टेक ॥ राधा चंद्रभागा चंद्रावलि भामा ललित सुशीले ॥ मंज्यावली कनक घट शिरधरि अंवमोर जव लीले ॥ ॥ १ ॥ नये नये चीर कुसुंभी सारी नवसत अभरन सजिये ॥ नये नये केलि करत मोहनसँग नवल कान्ह पिय भजिये ॥ ॥ २ ॥ चोवा चंदन बूका वंदन उडत गुलाल अबीर ॥ खेलत फाग भाग वड गोपी छिरकत श्याम शरीर ॥ ३ ॥ ताल मृदंग ढोल डफ महुवर बाजे वेणु रसाल ॥ कृष्णाके प्रभु गिरिधर नागर रसिकराय गोपाल ॥ ४ ॥ २ ॥

चलहिं भरन गिरिधरन लालको बनि बनि आँगन गोपी ॥ उबटिहे उबटना नवल चपलता मानहु दामिनि ओपी ॥ ॥ टेक ॥ पहिरे वसन विविधरँग भूषण करन कनक पिच-कारी ॥ चितवनि वंक वडी वडि अँखियां मानहुँ मृगजावारी ॥ १ ॥ छिरकत चली गली गोकुलकी कहि न परत छवि

भारी ॥ चोवा चंदन बूका वंदन अटि गये अटा अटारी ॥ ॥ २ ॥ सखन सहित साजि साँवरे सुंदर सुनतहि सन्मुख आये ॥ मानो अंबुज वसन व्यसन होइ अलि लंपट उठिधाये ॥ ३ ॥ हरि कर पिचकारी निरखि त्रियनके नयन छबीले ढोराये ॥ खंजनसे उडि चलेहै मानो ढुरकि मीन होइजाये ॥ ॥ ४ ॥ पहिलेकान्ह कुँवर पिचकारी ताकि तियनपर मेली ॥ मानहुं सोम सुधाकर सींचत नवल प्रेमकी वेली ॥ ५ ॥ दुरि मुरि भरनि बचावनि छविसो आवनि उलटनि सोहै ॥ डोलनि अविर गुलाल घुमड रह्यो सबनि देखि मन मोहै ॥ ६ ॥ विच विच छुटत कटाक्ष कुटिल शर अरसपरस अनुरागी ॥ मुरछि परचो तहँ मैन महाभट रति भुजभरि ले भागी ॥ ७ ॥ पियके अंग त्रियनके लोचन लुबधे छविके गोभा ॥ मानो हरि कमलन करि पूजे बनी अनूपम शोभा ॥८॥ यह होरीकी अद्भुतलीला सब काहूको प्यारी ॥ परम प्रेमको प्रगट उदय तहाँ नंददास बलि हारी ॥ ९ ॥ ३ ॥

श्रीजानकी-वसंत.

रसहोरीखेलै श्रीजानकीराय सब कुँवरि झरोखे झांकै आय ॥ टेक ॥ महादेव साजै मृदंग ऋषि नारद नाचै लिये उपंग ॥ ताल लिये गावै जयदेव जहाँ नाभा पीपा नामदेव ॥ १ ॥ रैदास बजावै नव रवाव गावै आसा टोडी वसंतराग ॥ सनका-

दिक ऋपि खेलै मझार जहां निगम उचारैं जय जयकार ॥२॥ केसर कुमकुमा भरेहैं माट जहां सैन भक्त देहै बाँट बाँट ॥ पिचकारी है वलभद्र हाथ प्रहलाद विभीपण विदुर साथ ॥ ३ ॥ ऊड़त गुलालभौं अरुण अकाश जहाँ चंद्र सूर्य ध्रुव कृष्णदास॥ अग्रअली चरचै अबीर जहँ अंवरीप शुकदेव धीर ॥ ४ ॥ रंका वंका कालु केवलदास दासदेवाकर वहु प्रकास ॥ खोजी नरसी प्रभु आस पासि जहँ प्रेम सहित गावै मीराँदासि॥५॥श्रीरामानंद कथै ब्रह्मज्ञान जहां कवीर चलावै शब्दवान ॥ निमानंद अरु विष्णुश्याम जहां माधवाचार करे वहु वखान॥६॥होरी खेलत खेलत वाढ्यो है रंग जहां अनंत कोटि लिये साधुसंग ॥ अवकी वेर मेरो राखोमान जन नाभाको दीजै भक्तिदान ॥ ७ ॥ १ ॥

रामहोरी.

रागसारंग ।

अवधपुरीकी नारि सबै मिलि खेलन आई होरीहो ॥ नख-शिख रूप अनूप किशोरी बनीहै मनोहर जोरीहो ॥ टेक ॥ फागुन फाग सुहायो आयो सहित झूम कड़ा बोलै हो ॥ कुल वधु लाज कान नहिं मानै असन वसन पट खोलैहो ॥१॥ यक मुहुंचंग उपंग वेणु डफ यक करताल बजावैहो ॥ एक एकनसो छयल छबीली अति अद्भुत सुरगावैहो ॥ २ ॥ मीठी ध्वनि सुनि आये रघुवर जगमंगल हितकारीहो ॥ तनु रीनवघन पीतां-वर भूपण भूपित अवध विहारीहो ॥ ३ ॥ लछिमन भरत

बोलायो शत्रुहन जनकसुता सुधि पाईहो ॥ श्रुति कीरति उर-
मिला मॉडवी वनि ठनि ये सब आईहो ॥ ४ ॥ इंदुवदनि सब
कंठ कपोती वय समान मृगनयनीहो ॥ गजगामिनि भामिनि
सीतासंग गानकरन पिकवैनीहो ॥ ५ ॥ भरि भरि लइ है
कनक पिचकारी छविसो छैल छबीलीहो ॥ मानो हेम कोटते
उतरी धारा रंग रँगीलीहो ॥ ६ ॥ वका सुरंग गुलाल उडावत
अविरभरे भरि झोरीहो ॥ अरसपरस मिलि भरत भरावत
गिनत न काहू कि ओरीहो ॥ ७ ॥ रघुवर धाइ भरे वैदेही
सहचरीसंग अपाराहो ॥ दामिनि सी फिरि गई चहूंदिशि पकरे
राजकुमारा हो ॥ ८ ॥ करसों कर जव गह्यो लडैती काजर
आंखिअँजाईहो ॥ मुख माड्यो नीके करि नागरि बन्योहै मनोरथ
भारीहो ॥ ९ ॥ फगुवा गोद भराइ परमरुचि पट भूपण पहिरा-
ईहो॥तन मन प्राण करत नौछावर बांटत वहुत वधाईहो॥१०॥
सरयू जल क्रीडत सिया रघुवर संत जनन्ह सुखदाईहो ॥
तुलसीदास जाइ वलिहारी जनकसुता रघुराईहो ॥ ११ ॥१॥

रागसारंग ।

खेलत राम रघुपुरी रुचिसो वहुभांतिन सुखदाईहो ॥
इतहै जानकी युवति यूथमे उत सोहै सँग भाईहो ॥ टेक ॥
चमर छत्र वर ध्वजा पताका रचना रुचिर वनाईहो ॥ सकल
फागको साज सज्योहै कवहुँक निकट नजाईहो ॥ १ ॥ बाजे
वजन लगे चहुँ दिशिते गावत गारि सोहाईहो ॥ मानों दुरद

छुटे मदमाते भरत परस्पर धाईहो ॥२॥ केसरि गारि कुमकुमा भरि भरि छूटत छवि पिचकारीहो ॥ प्रेरित पवन मनहुं पावसऋतु घन बरसत यकवारीहो ॥ ३ ॥ मृगमद मलय अबीर सखा सब अगरन कीच मचाईहो ॥ उमग चले अरगजा पनारे वीथिन नदी बहाईहो ॥ ४ ॥ केसर अगरसो भरेहैं चहवचा धूप धूम छवि छाईहो ॥ सोंधेलहर महोदधि मानो पुरजन प्रीति बढाईहो ॥ ५ ॥ चोवा चंदन छलबल करकै प्रीतम मुख लपटाईहो ॥ राजिवनयन लेत जब बदलो तब सिया देत दोहाईहो ॥ ६ ॥ श्रुति कीरति उर्मिला मालती रघुवर घेरेजाईहो ॥ हाहा किये तबै भल छुटि हो कहैं सिया शीश नवाईहो ॥ ७ ॥ भरत भरावत कुँवरि कुँवरपै हौले दे किलकाईहो ॥ मानो मघवा ध्वनि व्यापि रही है उठत महलमे झाईहो ॥ ८ ॥ खंभ खंभ प्रतिबिंब रामको जहाँ तहाँ देत दिखाईहो ॥ कुशधुज कुँवरि भरत दृढ भ्रमसो हांसी करत खिसाईहो ॥ ९ ॥ पलटे पकरे जांय शत्रुहन काजर आंखि अँजाईहो ॥ करत सकल भामिनि मन भायो बंधु तो लेहुँ छुड़ाईहो ॥ १० ॥ पकरो ता वीरनमे पक्षी मिसकरि हाथ दिवाईहो ॥ खोलनलगे उड़िगये चिरैया हरि हँसि ताल बजाईहो ॥ ११ ॥ जालरंध्र मुख निरखत जननी आनँद उर न समाईहो ॥ तन मन प्राण करत नौछावर बाँटत बहुत बधाईहो ॥ १२ ॥ रंग रँगे डोलत राय अँगना जनकसुता रघुराईहो ॥

रीझि सुमन वर्षत सुर संघट दिव्य दुंदुभी बजाईहो ॥ १३ ॥ वीच कियो कौशल्या रानी फगुवा गोद भराईहो ॥ सीताराम विनोद फागु पर अग्रअली बलिजाईहो ॥ १४ ॥ २ ॥

खेलत राम अवधपुर होरी जोड़ी परम सुहाईहो ॥ इतहिं सखिन मधि सिया विराजे उतहि सखा सुखदाईहो ॥ टेक ॥ बाजत ढोल दुंदुभी भेरी महुअरि अरु सहनाईहो ॥ गावत गीत पुनीत फगुवाके बहुविधि सब हरपाईहो ॥ १ ॥ गजगामिनि भामिनि दामिनिसी होहो करिकरि धाईहो ॥ उत दौरे रघुवर लक्ष्मण संग भरत शत्रुहन भाईहो ॥ २ ॥ अविर गुलाल कुमकुमा भरि भरि पोटनि मार मचाईहो ॥ इतहिं जयति जय जनक ललीकी उत दशरथ सुत धाईहो ॥ ३ ॥ उडत गुलाल लाल भये अंबर धुंध चहूंदिशि छाईहो ॥ मृगमद केशर भरि भरि छोडत यंत्रन युक्ति लगाईहो ॥ ४ ॥ एक सखी पीछेते लक्ष्मण गही अचानक जाईहो ॥ दौरी बाल ताल दै हँसिकै गहि लालनको ल्याईहो ॥ ५ ॥ अब सब भयो भावँतो मनको राखोगी उर लपटाईहो ॥ अब करिहै हम मनको भायो ह्यां न चलति चतुराईहो ॥ ६ ॥ तुम जिन जानो हम छुटि जैहै छोंडोगी बहुत रिझाईहो ॥ व्यंग्य वचन सुनि गये कूदिकै सबै रहीं खिसियाईहो ॥ ७ ॥ जानकिवल्लभ फगुवा दीन्हो मेवा सरस मिठाईहो ॥ चली किशोरी भरि भरि झोरी संतदास बलिजाईहो ॥ ८ ॥ ३ ॥

राग सारंग ।

रघुवर खेलत होरी ॥ संग लिये जनक किशोरी ॥ टेक ॥ अनुज सहित पिचकारी करगहे ठाढे अवधविहारी ॥ उतै सखीन समागम लीन्हे निकसी जनकदुलारी ॥ बाजत ताल मृदंग झांझ डफ अरु बाजत करतारी ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा भरि केशर पिचकारी ॥ १ ॥ अँगना आइ धाइ दुहुँ लीन्हे खेलनको हुलसाने ॥ लाज भाजि दुर गई भवन मे शंक न कोऊ माने ॥ मनहुँ दुरद मदके अति गर्वित अेडभरे अंटाने ॥ छविके भरे छबीले दोऊ छके रहत नहिंछाने ॥ २ ॥ लिये लुकाइ अरगजा लालन सिया शीशपर ढोरी ॥ तारीदे हँसि कहे पियारे होहो होहो होरी ॥ मृगमद मलय कपूर सुवाकी कंचन घट बहु घोरे ॥ मान खेनलमें रहत जु कैसे भरन परस्पर होरे ॥ ३ ॥ एक सुमुखि सखि सिया बोलिके मंत्र जु अद्भुत ठान्यो ॥ कछु ललचाइ लालके ढिगसो भरत आपमे आन्यो ॥ अब हम कहैं सोई तुम करिहो कह्यो जु हमरो मानो ॥ तुम अग्रजको जैस तैस कर हमरे निकट जु आनो ॥ ४ ॥ भरत चतुर चितचोर लालको कछु यक रुचि उपजाई ॥ वे रँगको लिये नारि रँगीली झुमकि पियापै आई ॥ धाइ उर्मिला गह्यो पीतपट अंजन आंखि अँजाई ॥ रोरी करि मुख मांडन कीन्हो जनकसुता मुसकाई ॥ ५ ॥ सिया नैनकी सैनदई जब लछिमनको पकरायो ॥ अरी ये सबहीमे महाढी-

ठहे करो सखी मनभायो ॥ शत्रु जीत छलसो गहि आन्यो वाके ढिग बैठायो ॥ राजकुवँरि दोरी भरो भरतने दाँवभलो बनि आयो ॥ ६ ॥ चहुं भाइन्हको अब मुख मांडो सखिरी पकरि नचावो ॥ कै तुम उनसो कहो लडैती संग हमारे गावो ॥ कै तुम जाय कहो महरानी तुमको आन छोडावो ॥ कै हाहा-करो पॉय परो सियाके मंत्रजू भलो बतावो ॥ ७ ॥ मानो घन दामिनी दमके नवललाल ढिगडोले ॥ छाडतनही छबीली पियको कामिनि करत किलोले ॥ अब यह बानिक बनत न काहू परे आन वश भोले ॥ करत कटाक्ष परस्पर युवती हँसि हँसि प्रतिमा बोले ॥ ८ ॥ बीच कियो कौशल्या रानी फाग लोगको ध्यावै ॥ भूपण वसन मँगाइ भुवनसों सकल वधू पहिरावै ॥ श्रीनरहरि वपुधारि अव-निपर अवधपुरी चलिआवै ॥ चिरजीवहु कौशल्या नंदन विष्णुदास गुणगावैं ॥ ९ ॥ ४ ॥

राग काफी।

खेलत रघुवर रंग भरेहो हो मेरे प्यारे अवधपुरीके प्रान ॥ टेक ॥ घर घर तोरण ध्वजा पताका मुक्ता बंदनवार ॥ इंद्रवदनि मृग शावकनयनी गावत गीत रसाल ॥ १ ॥ बाजा बहु विधि साज बजावे मधुर मधुर स्वरगान ॥ देखन आये देवताहो चढि चढि व्योम विमान ॥ २ ॥ उत रघुवर भूपण बहु भूपित पीतांवर छविदेत ॥ लछिमन भरत शत्रुहन सुंदर

बोलि सखा सब लेत ॥ ३ ॥ नखशिख कियो शृँगार लाडली चलिहै सहचरि ओट ॥ श्रुति कीरति उर्मिला मॉडवी वनी छवीली जोट ॥ ४ ॥ चोवा चंदन और कुमकुमा अरगजा माट भराये ॥ बूकावंदन मंगल मंजन कुँवरि लिये अपनाये ॥ ५ ॥ भरि भरि लई कनक पिचकारी अपने हाथ ॥ मानो छुटी वनधारा चहुँदिशि रँग्यो सियाजीको साथ ॥ ६ ॥ रघुवर भर्‍यो जब प्राणपियारी बहुविधि रंगकेशार ॥ मानो सांवर गिरिते उतरी रंग रंगीली धार ॥ ७ ॥ वहुरयो बहु विधि लई सामग्री दुरी आनि हरि ओर ॥ उडेउ गुलाल छयउ सुखरतन मानहुँ ऊगेउ भोर ॥ ८ ॥ खेलत मगन भये नर-नारी मची अरगजा गारी ॥ जहाँ तहाँ छुट चले पनारे मानों पावस वारी ॥ ९ ॥ करसो कर जब गह्यो लडैती काजर ऑखि अँजाई ॥ जोये रघुवर तुम्हरे प्यारे है अब क्यों न लेहु छोडाई ॥ १० ॥ अहिवेली भाजन लियो रघुवर दियो सहचरी हाथ ॥ जिनि छीयो यो कहै लडैती छल कीन्हो रघुनाथ ॥ ११ ॥ सजल अमी हँसि ऑजे लोचन हँसि पकराई दीन ॥ खंजन खरे कहाते निकसे जावक भीने मीन ॥ १२ ॥ सुख-सागर पियनागर झूलत वाढेउ रंग अपार ॥ गहे अँचरा गोरी कहे हरिसों फगुवा देहु कुँवार ॥ १३ ॥ फगुवादिये मँगाइ सवन्हको अँग वनिता अनुकूल ॥ जय जय सिया राम ध्वनि उचरै सुरगण वर्षें फूल ॥ १४ ॥ इंद्रादिक यों कहे परस्पर

धन्य अयोध्या वास ॥ क्यो न कियो विधना हम निज पुर कहुँ रघुवर दासी दास ॥ १५ ॥ सुंदरदास चले गुणगावत सरयू करि अस्नान ॥ मणि भूषण अवधेश युगल पर वारदेत है दान ॥ १६ ॥ ५ ॥

राग काफी।

रघुवंशी सुंदर अतिवनेहो ॥ बनेहो दशरथ राजकुमार ॥ टेक ॥ सरयूतीर अयोध्या नगरी अधिक राज वड़भाग ॥ सुर नर मुनि अरु देव तेतिसो खेलन आयेहै फाग ॥ ॥ १ ॥ कनक खंभ मिलि डोल रच्योहै झूलत सीताराम ॥ मानो सिधु कि उठत तरंगै वर्षत कुसुम विमान ॥ २ ॥ राम लक्ष्मण भरत शत्रुहन राजत कुँवर किशोर ॥ खेलत फिरत सबै रँगभीने इंद्र रह्यो कर जोर ॥३॥ क्रीट मुकुट मकराकृत-कुंडल अलक भ्रमर भ्रम भूल ॥ मृगमद तिलक माल मुक्ताहल पीतवसन अनुकूल ॥ ४ ॥ ढोल झांझ सहनाई बाजे यंत्र पखावज ताल ॥ मृदँग भेरि और रायगिडगडी बिच बिच वेणु रसाल ॥५॥ चोवा चंदन और अरगजा केसर बहुत सुवास ॥ रंग भरे खेलत रघुवंशी मानो वर्षत भादोमास ॥ ॥ ६ ॥ सब सखियन मिल मतो उपायो लछुमन पकरे धाय ॥ आँजे नयन कपोल करन गहे लियो है धनुष छिनाय ॥ ७ ॥ रघुवर रीझि देत पीतांबर मेवा बहुत मँगाय ॥ वर्ण वर्ण पहिराय पटंबर आनँद उर न समाय॥८॥धनि धनि आज अयोध्या

नगरी धनि पुरवासी लोग ॥ लघु हरिदास धन्यदशरथसुत वारों कोटि इँद्रभोग ॥ ९ ॥ ६ ॥

अविनाशीदूलह कव मिलिहै हो मेरे प्यारे मिलहितो जाने नदेहुं ॥ टेक ॥ जल उपनी जलसे नहिं नेहा रटत पियास पियास ॥ मै विरहिनि ठाढी मग जोऊं राम मिलनकी आस ॥ ॥ १ ॥ दिवस न भूख रैनि नहि निद्रा गृह अँगना नसुहाय ॥ सेजारियां वैरन भइ मोको जागूंतो रैनि विहाय ॥ २ ॥ छोडों गेह नेह जोड़ों तुमसों भई चरण लवलीन ॥ तलफि तलफि परी प्रेमकी फाँसी जैसेहो जल विन मीन ॥ ३ ॥ हमतो तुम्हारी दासिहो मोहन तुम हमरे शिरताज॥दीनदयाल दयाकर माधो साई सिरजन हार ॥ ४ ॥ कै हम प्राण तजतहूं हो मोहन कै अपनी करलेहु ॥ दास कवीर विरह अति वाढचो हम हिकै दरशन देहु ॥ ५ ॥ ७ ॥

रागधनाश्री ।

खेलें नगर अयोध्या फागु रघुवर जानकी ॥ कस्तूरीको तिलक विराजै मे वलि वलि मुखपानकी ॥ टेक ॥ इतते आई जनकनंदनी कीन्हें सवं शृंगार ॥ उतते आये लाड-लेहो दशरथ राजकुमार ॥ १ ॥ सीताजी शैनदई सखियनको रघुवर पकरे धाय ॥ कै तुम वोल देउ लछुमनको फगुवा देहो मँगाय ॥ २ ॥ वाजत ताल मृदंग झांझरी डफ वाजत हनु-मानकी ॥ तुलसिदास प्रभु तुम्हरे मिलनको मोहिं गति नाहीं आनकी ॥ ३ ॥ ८॥

रामडोल.

राग धनाश्री।

बैठे डोल विराजै आजु श्रीरघुवर जानकी ॥ नर अरु नारि सबै मिलि गावत राग रागिनी तानकी ॥ टेक ॥ पुरट जटित पटनी पट सोहै रचना रचीहै वितानकी ॥ झलकि रही कहिजात न झलरी झुमकनि गज मुकतानकी ॥ १ ॥ सखी चखी मृग झुमक झुलावत वीरी खवावत पानकी ॥ सिय पिय पर हँसि चोट चलावति लोचन कोयन वानकी ॥ २ ॥ अवीर गुलाल अरगजासो छवि फविहै भानुकुलभानुकी ॥ युगल विलोकि वदनविधु सुंदर गतिगइ मदन गुमानकी ॥ ३ ॥ १ ॥

राग धनाश्री।

खेलैं अरसपरस मिलि फागु नागर नागरी ॥ दशरथ सुत और जनकनंदनी इनको परम सुहागरी ॥ टेक ॥ चोवा चंदन और अरगजा भरि भरि केसरि गागरी ॥ पिय प्यारी प्यारी पिय ऊपर वाढ्यो अति अनुरागरी ॥ १ ॥ पकरि लालके गाल लपेटे धोये छुटत न दागरी ॥ होहो बोलै होरी खेलै तोरचो लाजको तागरी ॥ २ ॥ वाजत ताल मृदंग झांझ डफ मच्यो धनाश्री रागरी ॥ दोउ मिलि फगुवा रीझ देतहै लघु-मोहनको भागरी ॥ ३ ॥ २ ॥

रागसारंग ।

झूलत डोल अवधविहारी ॥ अरुण वसन अलवेली वनिता गावति कोकिलकारी ॥ टेक ॥ सबहिं सखी दामिनि ज्यो दमकहिं पहिरे अनूपम सारी ॥ अपनो अपनो माटधरे सब मृगमद केसरि गारी ॥ १ ॥ आप आपके झूमके चालत देत परस्पर तारी ॥ लाज कानि काहू कि न मानत प्रेम भरी मतवारी ॥२॥ झूक चलत हैं तट सरयूके गावत राग धमारी ॥ अलवेली हटक्यो नहिं मानत सिया निरखि रतिहारी ॥ ३ ॥ और ख्यालको कौन गनिसकै अनंग रति दोउ हारी ॥ कहि न परत कछु छवि राधाकी शोभित रूप अपारी ॥ ४ ॥ फूलन हीकी पाग विराजे फूलन पेच सवाँरी ॥ फूलनहीकी माला-विराजे फूली फिरत पुरनारी ॥ ५ ॥ फूलहि फूल बने फूलनमें फूलनकी पिचकारी ॥ फूलनहीकी अलग गुहाई फूलन मांग सवाँरी ॥ ६ ॥ फूलनही की अँगियाविराजे फूलनहीकी सारी ॥ फूलनहीको बनो घाघरो फूलन छरी सँवारी ॥ ७ ॥ फूलनही को अटार अटारी फूलन डोल सवाँरी ॥ फूलनहीको बनो झरोखा फूलनहीकी वारी ॥८॥ फूलनही की रौस बनाई फूलनकी चिक डारी ॥ सकल फूलकी छाति बनाई अरुणफूल डंडकारी ॥ ९ ॥ पीत फूलकी झांकी राखी फूल कुशुंभा-जारी ॥ नील फूलके परदा डारे झूलति जनकदुलारी ॥१०॥

फूलनहीकी भूमि विराजै फूल लता लटकाई ॥ फूलनहीके खंभ विराजें फूलन तनी सँवारी ॥ ११ ॥ फूली नारि अद्भुत अति गावहिं मनौ मनोज लजाई ॥ दशरथनंदन जनकदुलारी झूलतहै भुज जोरी ॥१२॥ घन दामिनि द्युतिराजत दोऊ कहि न परत छविभोरी ॥ अनंगलज्यो रघुवर छवि देखत सिया निरखि रतिहारी ॥ १३ ॥ निशि दिन सुख ब्रह्मादिक बांछत संशय रहत सुरनारी ॥ विन पुरवासी कोउ नहि पावै अवध आन सुखकारी ॥ १४ ॥ सीताराम अभयपद मोको दीजे भक्तिसुखभारी ॥ निशिदिन ध्यान धरौ हिरदय बिच तुलसी छविपर वारी ॥ १५ ॥ ३ ॥

शेषाचल–होरी.

राग काफी।

शेपाचल धाम सुहावनोहो ॥ हो मेरे प्यारे जहाँ खेलत विकटफाग ॥ टेक ॥ गिरिपर्वतकी कहा छवि वर्णों विकट बैठे आय ॥ पुष्करणीजीके निकट विराजे कोटिक तीरथ माँझ ॥ १ ॥ कंचन मंडप छाय रहोहै सन्मुख है हनुमान ॥ जै अरु विजय दोउ पौरिया विराजे भीरभइ है घनघोर ॥२॥ गरुड वाहन असवारी निकसी भई है नगाराकीबंब ॥ रत्नजटित शिर मुकुट विराजे यह शोभावर्णी न जाय ॥ ३ ॥ मारि फलांग रथ ऊपर बैठे इंद्र रहो घनघोर ॥ ब्रह्मादिक स्तुति करतहै धन्य धन्य भाग्य पुरवासी लोग ॥ ४ ॥ केसरियो

वागो जु वन्योहै लक्ष्मी रहे लवलाय ॥ दासहार्थीरामजीको दरश भयोहै चितवत संतन ओर ॥ ५ ॥ १ ॥

कृष्णहोरी.

राग सारंग ।

मोहन खेलत होरी ॥ श्रीवृषभानुगोपकीपोरी ॥ टेक ॥ वंशीवट यमुनातट कुंजनतर ठाढे वनवारी ॥ इत सखियनको मंडल जोरे श्रीवृषभानु दुलारी ॥ होडा होडी होत परस्पर देत अनंद की गारी ॥ उडत गुलाल कुमकुमा केसर कर कंचन पिचकारी ॥ १ ॥ वाजत वेणु वांसुरी कींगर अरु महुअर मुरचंगा ॥ अमृत कुंडलिसरमंडलमे सवते सरस उपंगा ॥ वाजत ताल मृदंग झांझ डफ सुरके उठत तरंगा ॥ नाचत हँसत करत कौतूहल केसर छिरकत रंगा ॥ २ ॥ तवहि श्याम सव सखा वोलाये सवको मतो सुनायो ॥ भैयारे तुम चौकस रहियो मत कोउ देहु गहायो ॥ जो वे तुमको पकरि पावहीं करिहै मनको भायो । ताते सावधानहोय रहियो हम तुमको समुझायो ॥ ३ ॥ सवै किशोरी राधागोरी मनमे मतो जुकीन्हो ॥ सखी एक वोलाय आपनी वेप ग्वालको दीन्हो ॥ ताको मिलन चले मनमोहन सखा न काहू चीन्हो ॥ एकन वात लगाय लालको पाछेसूं गहिलीन्हो ॥ ४ ॥ आई समिट सकल व्रजवनिता मोहन पकरे जवही ॥ हम मॉगतहै या विधनापै दावॅ परेगो कवही ॥ जव तुम चीर हरे जु हमारे

हाहाखाय हम सबहीं ॥ अब हम वसन छीन सब लैहै हाहाखा-
इहो तुमहीं ॥ ५ ॥ एक सखी अचानक आई मोरपच्छ गहि
लीनो ॥ एकसखी पीछेते आई पीतांबर गहि छीनो ॥ एकने
ऑख ऑजि मुखमॉडि ऊपर गुलचा दीनो ॥ मानत
कौन फागमे प्रभुता मन मानो सो कीनो ॥ ६ ॥ एक
सखी दूर भई ठाढी घूँघट पट मुखढांके ॥ एक सखी
मधुरे सुर गावे मुखसो गारिनभाके ॥ एक सखी हरिको
मुखनिरखे तनु की दशा न ताके ॥ गिरिधर चरित्र कोउ
नहिंजानो सबहिनकी दिशिताके ॥७॥ एक कहे वाको वदन
उघारो हमहूं दर्शनपावे ॥ श्रीमुखकमल नयन मेरे मधुकर
तनुकीतपत बुझावे ॥ एक कहै याकी वेणी गूँथो रुचिकर मॉग
बनावे ॥ एक कहे याको पकरनचावे हम सब ताल
बजावे ॥ ८ ॥ एक कहै बोलो बल भय्या वे तुम भले छुडावें
सखा एक तुम घरको पठावो यशुमतिहूंले आवे ॥ जानतहो
छल बल कर छूटे गहे न छूटन पावे ॥ पॉयन परो कुँवरि-
राधेके वो तुम्हे भले छोडावे ॥ ९ ॥ दूरहिते बल आवत देखे
सबै सखी उठधाई ॥ छल बल करि जैसे अरु तैसे उनहूंको
गहिलाई ॥ आन किये एक ठौरे ठाढे हरि हलधर दोउ भाई ॥
वाहू कि आंखि आंजि मुख मॉडो राधेजु शयन बताई ॥ १० ॥
हँसि २ कहत मोहन प्रीतम सो मानो सुख की भीजै॥छाडो हमै
जाई घर अपने पीतांबर मेरो दीजे ॥ कर जोरे हरि हलधर
जू ठाढे आज्ञा हमको दीजै ॥जोइ जोइ इच्छा होइ तुम्हारी सोइ

सोइ फगुवा लीजै ॥ ११ ॥ तब देख्यौ ब्रह्मा शिव नारद मनही मनपछताई ॥ बडो भाग्य है ब्रजवनितनको हम मुख कहो न जाई ॥ जाकारण हम ध्यान धरतहु ध्यानहुं आवतनाहीं ॥ सो देखा ब्रज युवतिन आगे जोरे ठाढे वाहीं ॥ १२ ॥ तबै श्याम सब सखा बोलाये फगुवा बहुत मँगायो ॥ जो जाके जैसो मन भायो सोइ सोइ ताहि पहिरायो ॥ श्रीजगन्नाथ राय चिरजीवहु जोड़ी सबको भलो मनावो ॥ वाढो वंश नंद बाबाको माधोदास गुणगावो ॥ १३ ॥ १ ॥

वाघंवर ओढे सांवरो होहो मेरी आली इनमे योगीको लक्षणकौन ॥ टेक ॥ शंख शब्द ध्वनि सुनि जित तितते जुरि आई ब्रजनारी ॥ वदन विलोकि कुँवर राधे को बैठे है आसन मारी ॥ १ ॥ कौन दिशासूं आयेहो रावर कहा तेरी मनसा जाई ॥ आपनमौन गहे मनमोहन दक्षिण दियौहै बताई ॥ २ ॥ हँसि बूझत वृषभानु नंदनी रावर उत्तर देहु ॥ कारण कवन भेप तपस्वीको वन तजि आये हो गेहु ॥ ३ ॥ झोलिन पात्र विभूतिन वटुवा मुद्रा नाहि न कान ॥ योगी नहीं कोउ वडोहै विरोगी भोगीहै परम निधान ॥ ४ ॥ सिगी न नाद न डंड कमंडलु शिरचंदनकी खौरी ॥ मेरे मन उनमान सखीरी कंथ विसारे है गौरी ॥ ५ ॥ चुटकी विभूति दई है राधेकूं चलेहै वाघवर झार ॥ तनक चितवनमे मन हरिलीन्हो गोहन लागि- है कुँवर ॥ ६ ॥ नगर नगर योगी डगर डगरमे निशिदिन फिरत उदास॥नयनचकोर भये राधेके हरिमिलनेकी आस॥७॥

तीनलोक ब्रह्मांड खंडमें घट घट रहेहै समाय ॥ सो योगी वृषभानुकुंवरिके ठाढेहैं पौर दुआर ॥ ८ ॥ तनक तनक करि मन हरि लीन्हो निरखि नयनकी कोर ॥ श्रीजगनाथजीवन धन माधो प्रीति बढीहै दोउ ओर ॥ ९ ॥ २ ॥

मेरे नयननिमे जिन डारो पिया पिचकारी झीने वसन अंग लपटाने भीज रही तनुसारी ॥ टेक ॥ खंजन मीन मराल दधिसुत मानो कनककुँवारी ॥ मृगरिपु मगर पपैया कोकिला मानो विधि सांचे ढारी ॥ १ ॥ ले दर्पण कुंवरी कर अपने मोतियन मांग समारी ॥ तीनलोकको रूप राधिका सरवश कियो है विहारी ॥ २ ॥ केसरसूं मेरी अँगिया सानी सूंधे भीनी सारी ॥ नाकनकी नकवेसर भीनी मोतियनकी लर न्यारी ॥ ३ ॥ केसर घोर मँगाय लाडली नवल लाल परडारी ॥ गोरेसे वदन भये नँदनंदन हँसत त्रियादे तारी ॥ ४ ॥ मृगमद घोर भरे हरि श्यामा अंग अंग भये कारी ॥ अरस परस दोउ लाल लाडली रंग उपज्यो रसभारी ॥ ५ ॥ ललना धाय गहे मनमोहन नयन शयन दे प्यारी ॥ फगुवा देहो तबै भले छुटि हो कहै वृषभानुदुलारी ॥ ६ ॥ फगुवा बहुत मँगाय लाडले हँसि हँसि देइ गिरिधारी ॥ यो सुखसिंधु कहांलौ वर्णौ लीला मंगलकारी ॥ ७ ॥ धनि धनि भाग्य भूर ब्रज वनिता जा सँग रमत मुरारी ॥ लाल लाडली की छवि ऊपर अग्रदास बलिहारी ॥ ८ ॥ ३ ॥

रस होरी खेलै सांवरोहो अहो मेरी आली तट यमुनाजीके तीर ॥ टेक ॥ लाल गगन भये लाल मगन भय वृक्ष लाल ॥ फल पात लालहिलाल बनी ब्रज वनिता लालहि लालजीको साथ ॥ १ ॥ कंचनकेर कटोरा केसर घसि ललता लिये हाथ ॥ अंचलदे वृपभानुनंदनी छिरकत हरिजीको गात ॥ २ ॥ भरिपिचकारी सुघर सुदामा देहै कृष्णजीके ओर ॥ चितवत चोट करत मनमोहन भीज गई मृगमद खोर ॥ ३ ॥ इत-भये ग्वाल उतै ब्रजवनिता गये है नंददरबार ॥ बांसन मार परत अतिभारी जीतैहै नंदकुमार ॥ ४ ॥ विद्यापतिप्रभु फगुवा दीन्हो मेवा सरस मँगाय॥ दे आशीश चली ब्रजवनिता चिरंजीवो नँदजीको लाल ॥ ५ ॥ ४ ॥

रागगूजरी ।

श्रीराधे नवल किशोर डोले गूजरी ॥ कनक मथनियां-शिरधरि बाबा नंदजीके द्वार खरी ॥ टेक ॥ हरिये कुसुमको घाँघरो ओढनको चुनरी ॥ अंगिया बनी है कटावकी मानो फूली चंपकली ॥ १ ॥ अनवट बिछुवा घूँघरूहो जेहर अजव बनी ॥ चाल चलै मदहस्ती की मानों यौवनगर्वभरी ॥ २ ॥ हार हिये हारेकी चौकी बनी खंगुवारी दुलरी । बिदा बन्योहै जडावको मानो मोतियन मांग भरी ॥ ३ ॥ विद्यापत वर्णों कहालौं अंग अंग सुघरी ॥ शोभाको सागर बन्यो सबहिनमे अगरी ॥ ४ ॥ ५ ॥

गिरिहोरी.

रागकाफी।

नवरंगी केसर हम बोईहै ॥ अहो मेरी आली अपने बालमजीके काज ॥ टेक ॥ गिरिपर्वत पर केसर बोई मिरगा चुगिचुगिजाय ॥ क्यो रे मृगा तू मानत नाहीं मारोगी धनुष चढ़ाय ॥ १ ॥ आस पास हम केसर बोई बिच बिच बोयोहै गुलाल ॥ वाकी बास सुवास उडतहै गूँथूँगी नवसर हार ॥२॥ कनक कटोरा केसर घोरे अरु यमुनाजीको नीर ॥ कृष्ण जीवन जीनो वागो चरचौ चरचौगी राधेजीको चीर ॥ ३ ॥ वृंदावन वंशी बजी मोहन ध्वनि सुनि रह्यो न जाय ॥ वेगि मिलो हरिवंशके स्वामी रूठी को लेहु मनाय ॥ ४ ॥ १ ॥

गिरि लीलविहारी होरी खेलैहो ॥ अहो मेरी आली खेलत संत समाज ॥ टेक ॥ निकट महोदधि रतनसिंहासन रथ पर श्रीजगन्नाथ ॥ पुष्प विमान चढे बलदाऊ देवी सहोद्राहै साथ ॥ १ ॥ दोना मरुवा अधिक विराजें पहिरे पुष्प अपार ॥ सखिन सहित लक्ष्मी सँग राजे पहिरे नौतम चीर ॥ २॥ जगजीवन खेलन पधारे इंद्र दमन दरबार ॥ गोपरूप सौंधे रंगभीने चाले है भरि भरि भार ॥ ३ ॥ महिमा अधिक जात नाहिं वरणी सब देवनके देव ॥ आये शरण दास जन माधो प्रभु अपनो करिलेव ॥ ४ ॥ २ ॥

प्रह्लादहोरी.

रागवसंत ।

नाहिं छाडों बाबा रामनाम ॥ मेरे और पढनसो कौन काम ॥ टेक ॥ प्रह्लाद पधारे पढनशाल जहां संग सखा लिये बहुत बाल ॥ कहारे पढावो पॉडे आलजाल मेरी पाटीमें लिखिदे श्रीगोपाल ॥ १ ॥ शंडामर्का कहि जाय प्रह्लाद बंधाये बेगि आय ॥ राम कहन की छोड बान तोहिं अबहि छुटाये मेरो कहो मान ॥ २ ॥ कहा रे डरावै पांडे बार बार मैं जल थल गिरिको कियो पहार ॥ मोहिं मारिडारि भावे देहि-जारि हरिनाम छाडोतो मेरे गुरुहि गारि ॥ ३ ॥ काढ खड्ग-कोपे रिसाय तेरो राखन वारो मोहि बताय ॥ खंभ फारि प्रगटे मुरारि हरिणाकुश मारे नखविडारि ॥ ४ ॥ आदि पुरुष देवादिदेव धरो भक्तहेत नर आइ वेप ॥ कहत कबीर कोउ लहेन पार प्रह्लाद उबारे अनेक बार ॥ ५ ॥ १ ॥

रागमलार ।

मोरा बैरपरे हमारे माई मोरा बैरपरे ॥ घन गरजत बरज्यो नहि मानै त्यो त्यो रटत खरे ॥ टेक ॥ लेले पंख प्रगटे हरि उनके अपने शीशधरे ॥ याहीते बिरहनि दुख पावे मोहन ढीठकरे ॥ १ ॥ जानत काहेन नाहि सखीरी निशिदिन रहत अरे ॥ सूरश्याम परदेश सिधारे आँखनते न टरे ॥ २ १ ॥

कृष्णडोल.

राग धनाश्री।

चलो सखी देखन जइये डोल सोहावनो ऋतु वसंत फूले पति पतनी गृह गृह आनँद बधावनो ॥ टेक ॥ वन वृंदावन नववंशीवट बेलि सघन बन फूले ॥ धीर समीर कुंज जहँ यमुना देखि महामुनि भूले ॥ १ ॥ तामधि डोल रच्यो विश्वकर्मा अद्भुत चित्रबनाई ॥ वर्णों कहा एक मुखरसना शेषहु वरणि न जाई ॥ ॥ २ ॥ कनक खंभ नग जटित पिरोजा लगेहै लाल मणि मोती॥ हीरा नगन बनी चित्रायनि शशि उडगण सम ज्योती ॥ ३ ॥ रेसमडोरी लूंमखतूलन्हि नवललाल लपटावे ॥ झूलत श्रीराधे आनँदघन नौतम नारि झुलावे ॥ ४ ॥ लहँगालाल कुसुंभी अंगिया पहरि बसंती सारी ॥ चंद्रवदनि मृगलोचनि राधे श्री-वृषभानुदुलारी ॥ ५ ॥ चोवा चंदन अगर कुमकुमा अबिर गुलाल उडावे ॥ खेलत व्रजवनिता मोहन सँग अमर पुष्प वरषावे ॥ ६ ॥ ताल मृदंग झांझ डफ बाजे रंग रह्यो रसभारी ॥ लाल लाडिली की छबि ऊपर जन केशव बलिहारी ॥ ७ ॥ १

मंगलमूल।

चरण चिह्न रघुवीरके संतन सदा सहायका ॥ अंकुश अंबर कुलिश कमल यव ध्वजा धेनु पद ॥ शंख चक्र स्वस्तिक जंबूफल और सुधाह्रद ॥ अर्द्धचंद्र षट्कोन मीन बिंदु ऊरध

रेखा ॥ अष्टकोन त्रैकोन इंद्रधनु पुरुष विशेखा ॥ सीतापति पद वसत नित एते मंगलदायका ॥ चरण चिह्न रघुवीरके संतन सदा सहायका ॥ २ ॥

मूलमंगलाचरण.

दोहा ।

भक्ति भक्त भगवंत गुरु, चतुरनाम वपु एक ॥
इनके पद वंदन करत, नाशै विघ्न अनेक ॥ १ ॥

सवैया ।

अवधेशके द्वारे सकारे गई सुत गोदकै भूपति लै निकसे॥ अवलोकिहौ शोच विमोचनको ठगिसी रहि जेन ठगे हगसे ॥ तुलसी मनरंजन रंजित अंजन नैन सुखंजन जातकसे ॥ सजनी शशिमै समशील उभै नवनील सरोरुहसे विकसे॥ १॥ पगनूपुर औ पहुँची कर कंजन मञ्जु बनी वनमालहिये ॥ नव नील कलेवर पीत झँगा झलकै पलकैं नृप गोद लिये ॥ अर-विंदसे आनन रूप मयंद अनंदित लोचन भृंगपिये ॥ मनमै न बसै ऐसे बालक जो तुलसी जगमे फल कौन जिये ॥ २ ॥ पदकंजनि मंजु बनी पनहीं धनुही शर पंकज पाणिलिये ॥ लरिका संग खेलत डोलतहै सरयूतट चौहट हाट हिये ॥ तुलसी ऐसे बालकसों नहिं नेह कहा जप योग समाधि किये ॥ नर वै खर सूकर श्वान समान कहा जगमे फल कौन जिये ॥ ३ ॥ श्याम शरीर सरोरुहलोचन कंज कि मंजुलताइ हरे ॥ अति

सुंदर शोभित धूरि भरे छवि भूरि अनंग कि दूरि करै ॥ दँतियाँ दमकै द्युति दामिनि ज्यो किलकैं कलबाल विनोद करै ॥ अवधेशके बालक चारि सदा तुलसी मन मंदिरमै विहरै ॥ ४ ॥ कबहूं शशि मांगत आरि किये कबहूं प्रतिबिंब निहारि डरै ॥ कबहूं करताल बजाइकै नाचत मातु सबै मनमोद भरै ॥ कबहूं रिस झारि रहे हठि रूठिकै लेत सोई जेहि लागि अरै ॥ अवधेशके बालक चारि सदा तुलसी मन मंदिरमै विहरैं ॥ ५ ॥ दंत कि पंगति कुंदकली अधराधर पल्लव खोलनिकी ॥ चपला चमकै घनबीजु जगे उत मोतिनमाल अमोलनिकी ॥ घुंघुरारी लटै लटकै मुख ऊपर कुंडल लोल कपोलनिकी ॥ न्यौछावरि प्राणकरै तुलसी बलिजाउँ लला इन बोलनिकी॥६॥सरयू वर तीरहि तीर फिरै रघुवीर सखा अरु वीर सबै॥धनुही कर तीर निषंग कसे कटि पीत दुकूलन वीन फबै॥तुलसी तेहि औसर लावनिता दशचारि नौतीनि एकीस सबै मति भारति पंगु भई जो निहारि विचारि फिरीउपमान पवै।७।

कवित्त।

छोनीमेके छोनीपति छाजै जिन्हे छत्र छाया छोनी छोनी छाये छिति आये निमिराजके ॥ प्रबल प्रचंड बरिबंड वर वेप वपु वरबेको बोले वैदेहीको वर काजके ॥ बोले बंदी विरद बजाइ वरबाजनेऊ बाजे बाजे वीर बाहु धुनत समाजके ॥ तुलसी मुदित मन पुर नर नारि जेते वारवार हेरै मुख अवध मृगराजके ॥ १ ॥ सीयको स्वयंवर समाज जहां राजनिको राजनिके राजा महाराजा जानै नामको ॥ पवन पुरंदर कृशानु भानु ५

गुणके निधान रूप धाम शोभाकामको ॥ बान बलवान् यातुधान पति सारिखेसे जिनके गुमान सदा सलिम संग्रामको ॥ तहां दशरथके समर्थ नाथ तुलसीके चपरि चढायो चाप चंद्रमा ललामको ॥ २ ॥ मयन दहन पुरदहन गहन जानि आनिकै सबैको सार धनुष गढायोहै ॥ जनक सदास जेहि भले भले भूमिपाल किये बलहीन बल आपनो बढायोहै ॥ कुलिश कठोर कूर्म पीठिते कठिन अति हठिन पिनाक काहु चपरि चढायोहै ॥ तुलसी श्रीरामको सरोजर कर पर्सतही टूटो मानो बारेते पुरारिही पठायोहै ॥ ३ ॥

छप्पय ।

डिगत उर्वि अति गुर्वि सर्व पब्बै समुद्र सर ॥ व्याल बधिर तेहि काल विकल दिक्पाल चराचर ॥ दिग गयंद लरखात परत दशकंध मुखरभर ॥ सुर विमान हिमवान भानु संघटित परस्पर ॥ चौके विरंचि शंकर सहित कोल कमठ अहि कलमल्यौ ॥ ब्रह्मांड खंड कियो चंड ध्वनि जबहि राम शिव धनु दल्यौ ॥ १ ॥

कवित्त ।

लोचनाभिराम घन्य घनश्याम रामरूप शिशु सखी कहै सोतूं प्रेम प्रण पालिरी ॥ बालक नृपालजीके ख्यालही पिनाक तोरयो मंडलीक मंडली प्रताप दाप दालिरी ॥ जनकको सियको हमारो तेरो तुलसीको सबहीको भायो भयो मैंजो कह्यो कालिरी ॥ कौशल्याकी कोखि परतोखि तनु वारियेरी राइदशरथकी बलाइ लीजे आलिरी ॥ ४ ॥ दूब दधि रोचना कनक

थार भरि भरि आरति सवाँरि वर नारि चलि गावती ॥ लीन्हे जयमाल करकंज सोहैं जानकीके पहिरावो राघोजीको सखियां सिखावती ॥ तुलसी मुदित मन जनक नगर जन झांकती झरोखे लागी शोभा रानी पावती ॥ मानहुँ चकोरी चारु बैठी निज निज नीड चंद्रकी किरण पीवैं पलकौ न लावती ॥ ५ ॥ नगर निशान नभ दुंदुभी विमान चढि गान कैकै सुर मुनि नारि नर नाचही ॥ जय जय तिहूंपर जयमाल राम उर बरषै सुमन सुरवधू रूप राचहीं ॥ जनकको प्रणजयो सबको भावतो भयो तुलसी मुदित मन रोम रोम माचहीं ॥ साँवरे किशोर गोरी शोभा पर तृण तोरी जोरी जीवो युग युग युवती यो याचही ॥ ६ ॥ भले भूप कहत भले भदेश भूपतिसो लोक लखि बोलिये पुनीत रीति मारखी॥जगदंबा जानकी जगत पिता रामभद्र जानि जिय जोहौ जो लगै न मुख कारखी॥देखेहैं अनेक व्याह सुनेहै पुराण वेद बूझेहै सुजान साधु नर नारि पारखी॥ऐसे सम समधि समाजन विराजमान रामसे न वर दुलहिन सिय सारखी ॥७॥

सवैया ।

दूलह श्रीरघुनाथ बने दुलही सिय सुंदर मंदिर माहीं ॥ तहँ गावत गीत सबै मिलि दंपति वेद ऋचा जुरि विप्र पढाहीं ॥ रामको रूप निहारत जानकी कंकनके नगकी परछाहीं ॥ ताते सबै सुधि भूलि गई कर टेकि रही पल टारति नाहीं॥८॥

कवित्त ।

वाणी विधि गौरि हर शेषहू गणेश कही सही भरी लोमश भुशुंडि बहुवारिषो ॥ चारि दश भुवन निहारि नर नारि सब नारदको परदा न नारद सो पारिखो ॥ तिन कह्यो जगमें जगमगात जोरी एक दूजी को कहैया को सुनैया चखचारिखो ॥ राम रमा रमन सुजान हनुमान कही सियसी न तिय न पुरुष राम सारिखो ॥ ८ ॥ भूप मंडली प्रचंड चंडीशको दंड खंड्यो चंडबाहु दंड जाको ताहीसो कहत हो ॥ कठिन कुठार धार धरिवेकी धीरताहि वारता विदित ताकी देखिये चहतहो ॥ तुलसी समाज राज तजिसो विराजै आजु गाज्यो मृगराज गजराज ज्यो गहतहों ॥ छोमे न छांडो छिपो छोनिपको छौना छोटो छोनिप छपनवाको विरद बहतहो ॥ ९ ॥ निपट निदरि बोले वचन कुठारपानि मानि त्रास अवनिपति मानो मौनता गही ॥ रोपे भाषे लषण अकान अनखोही बातै तुलसी विनीत वाणी विहँसि ऐसी कही॥सुयशतिहारो भुवननि भृगुनाथ छायो प्रगट प्रताप आप कह्यो सो सबै सही ॥ टूट्यो सोन जुरैगो शरासन महेशजू को रावरी सरिकता पिनाकमें कहा रही॥१०॥

सवैया ।

गर्भके अर्भक काटनको पटुधार कुठार करालहै जाको ॥
सोइहौं बूझत राज सभा धनुको दलिहै दलिहौ बलताको ॥
लघु आनन उत्तर देत बडे लरिहै मरिहै करिहै कछु शाको ॥
गोरो गुरूर गुमान भरो कहो कौशिक छोटोसो ढोटोहै काको ९

कवित्त।

मखराखिवेके काज राजा मेरे संग दिये दले यातु-
धान जे जितैया विबुधेशके ॥ गौतमकी तिया तारी मेटे अघ
भूरि भारी लोचन अतिथि किये जनक जनेशके ॥ चंडबाहु
दंड वल चंडीशको दंडखंड्यो व्याही जानकी जीते नरेश
देशदेशके ॥ सॉवरे गोरे शरीर धीर महावीर दोऊ नाम राम
लषण कुमार कोशलेशके ॥ ११ ॥

सवैया।

काल कराल नृपालनिको धनु भंग सुने परशा लैके
धाये ॥ लक्ष्मण राम विलोकि सप्रेम वडे रिसहा फिरि आंखि
देखाये॥धीरशिरोमणि वीर वड़े विजयी विनयी रघुनाथ सोहाये॥
लायकहै भृगुनायकसो धनु सायक सौंपि सुभाय सिधाये १०॥

अथ वामनद्वारा.

ॐ कर्त्ता राम नाम निर्मल पद सव संतनको प्रेम प्यारा॥
करौ दंडवत कर जोरि निशि दिन वर्णौं वारंवारा ॥ चारों
युग हरिभक्त अखंडित आदि अंत औ मधि लागी ॥ कलि-
युग छापा तिलक उरमाला प्रगट भये वैरागी ॥ श्रीरामानंदी
विष्णूस्वामी नीमानंदी भारी ॥ महापवित्र माधवाचारज आदि
संप्रदाचारी ॥ चारौ घरका घना अखाड़ा द्वारा वहुत वढाना ॥
तिनका नाम सुनो भाई संतौ कहौ जहां लौ जाना ॥ अनंता-
नंद कवीर सुखा सुरसुरा पीपाजीका द्वारा ॥ अग्रकीलकों

भई अनुग्रह ताका बहुत पसारा ॥ खोजी जंगी वीरमत्यागी देवाकर हरिप्यारा ॥ अनभीनंद अभै मुरारी कलगोरख अवतारा ॥ परशुराम रैदास पूरन वैराठी लाहाटीला ॥ जणी कालु शोभा नाभाने नावहुराघमंडीला ॥ ज्ञानी जनको वा हरिवंस गोसांई नामदेव यश गाया ॥ राधावल्लभ गोकुल वीठल नामनिरंतर पद पाया ॥ जिन भगवान हठी नारायण जोगानंदी जाणो॥अलगैस अरु करमचंद स्वामी रावलराम प्रमाणो॥ माधो काणीलाल तरंगी तं तुलसी यशगाया ॥ दासमलूक सलूक सहेवसौ परचे राम रिझाया ॥ दासभडंगी चतुरा नागा नित्यानंदी कहिये ॥ दासकमाला और राम कबीरा श्यामानंदी लहिये ॥ चतुरभुजी अरु चैतन स्वामी दासविनोदी जानो ॥ वनखंडी व्योरा शुधवर्णौं वामन वपूबखानो ॥ धरणीदास धरी सतसंगत द्वारावली सुनाई ॥ जहँ जैसे जगदीश बनाई तहँ तैसे बनिआई ॥

इति श्रीवामनद्वारासपूर्णम् ।

कीर्त्तन.

श्रीराम कृष्ण गोपाल दामोदर हरि माधव मधुसूदना ॥ कालीमर्दन कंसनिकंदन देवकिनंदन तुम शरना ॥ चक्रपाणि वाराहमहीधर जलशायन मंगलकरना ॥ ये हरि नाम जपो निशि वासर जन्म जन्मके भवहरना ॥ हरे गोविंदे परमानंदे भजुगोविंदे रामा ॥ श्रीनागर नवल किशोर मनोहर मूरति सुंदर श्यामा ॥ श्रीवृंदावनमें रास रच्यौ है सहस गोपी

एक कान्हा ॥ मोर मुकुट पीतांबर सोहे कुंडल झलकै कान्हा ॥ यमुनाके नीरतीरे धेनु चरावे मोहन मुरलीवाला ॥ मुरली बजाय मेरो मन हरि लीन्हो लगे प्रेमके बाना ॥ केशोराय कमलदल लोचन अगम अगोचर भवहरना ॥ श्रीपुरुषोत्तम श्रीअविनाशी भक्त वछल अभिरामा ॥ सरयूतीर अयोध्या नगरी चित्रकूट निजधामा ॥ उजेननगरी सफरातीरथ अंगपात बिसरामा ॥ मथुरानगरी यमुना तीरथ वृंदावन विशरामा॥ ब्रह्मा जाको पार न पावै गावै सनक सनंदना ॥ गुरु परताप साधकी संगत नामदेवजी आये हरि शरना ॥ बोलो सीताराम लक्ष्मण भरत शत्रुहन हनूमान हरि नमो नमो ॥ श्रीजगन्नाथ बलभद्र सहोद्रा चक्र सुदर्शन नमो नमो ॥ कहै प्रहलाद सुनो भाइ साधो हमहिपढ़े सो तुमहु पढ़ो ॥ श्रीहरि नारायण दुष्टनिवारण परमानंद परम पुरुषोत्तम भक्तवछल प्रिय पंकज लोचन नारायण प्रभु वासुदेवहरे ॥ कृष्णानंद मुकुंद मुरारी वामन माधव गोविंदे श्रीधर केशो राधेजी कृष्णा लक्ष्मीजी नायक नृसिंहे अच्युतं केशवं रामनारायणं कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरे ॥ श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं जानकीनायकं श्रीरामचंद्रं भजे ॥ १ ॥ हरि गुरु माधोजी मुकुंदा मधुसूदन मुरारी जैजै रामा कृष्णा गोविंदे गोपाल वनवारी ॥ टेक ॥ हरि गुरु भाल तिलक सोहै नयना छबिन्यारी ॥ १ ॥ हरि गुरु मोर मुकुट सोहे कानो कुंडल भारी ॥ २ ॥ हरि गुरु शंख चक्र गदा पद्मधारी ॥ ३ ॥ हरि गुरु धेनु चरावें धोरी धूमर कारी ॥ ४ ॥ हरि गुरु हाथ लकुटिया सोहे कांधे काम

रिकारी ॥ ५ ॥ हरि गुरु मुरलीकिये ध्वनि सुनमोहीं व्रजनारी ॥ ६ ॥ हरि गुरु रास रच्यो वृंदावनभारी ॥ ७ ॥ हरि गुरु रास मंडल नाचें गोपी गिरिवरधारे ॥ ८ ॥ हरि गुरु प्राणपति राधा मोहन मुरलीवारे ॥ ९ ॥ हरि गुरु रघुकुल ये चरणन अहल्या तारी ॥ १० ॥ हरि गुरु यादवकुल ये कुब्जा अधिक सुधारी ॥ ११ ॥ हरि गुरु रघुकुल ये सायर पाज सँवारी ॥ १२ ॥ हरि गुरु यादवकुल ये गिरि गोवर्द्धनधारी ॥ ॥ १३ ॥ हरि गुरु रघुकुल ये यादवकुलकी बलिहारी ॥१४ ॥ हरि गुरु माधोदास शरण आये तुम्हारी ॥ १५ ॥

आदौ देवकिदेवगर्भजननं गोपीगृहे वर्धनं ॥ मायापूतनजीवितापहरणं गोवर्धनोद्धारणम् ॥ कंसच्छेदनकौरवादिहननं कुंतीसुतापालनं ॥ एतद्भागवतं पुराणकथितं श्रीकृष्णलीलामृतम् ॥ ॥१॥ आदौ रामतपोवनाधिगमनं हत्वा मृगं कांचनं॥ वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसंभाषणम् ॥ वालीनिर्दलनं समुद्रतरणं लंकापुरीदाहनं ॥ पश्चाद्रावणकुंभकर्णहननमेतद्धिरामायणम् ॥ ॥ २ ॥ हे रामा पुरुषोत्तमा नरहरे नारायणा केशवा ॥ गोविंदा गरुडध्वजा गुणनिधे दामोदरा माधवा ॥ हे कृष्णा कमलापते यदुपते सीतापते श्रीपते॥ वैकुंठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहि माम् ॥ ३ ॥ कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभं ॥ नासाग्रे गजमौक्तिकं करतले वेणुं करे कंकणम् ॥ सर्वांगे हरिचंदनं सुललितं कंठे च मुक्तावली॥गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः ॥ ४ ॥ श्रीरंगं करिशैलमञ्जन गिरिः शेषाद्रिसिंहाचलं॥ श्रीकूर्मं पुरुषोत्तमं च बदरीनारायणं

नेमिपम् ॥ श्रीमद्द्वारवती प्रयागमथुरायोध्यागयाः पुष्करं शालिग्रामनिवास्ययं विजयते रामानुजोयं मुनिः ॥ ५ ॥ हे रामानुज हेजगत्त्रयगुरो हे पुंडरीकाक्ष मां॥ हे गोपीजननाथ पालय परं जानामि न त्वां विना ॥ हे गोपालक हेकृपाजलनिधे हेसिंधुकन्यापते ॥ हे कंसांतक हे गजेंद्रकरुणापारीण हे माधव ॥ ६ ॥ पार्थाय प्रतिबोधितां भगवता नारायणेन स्वयं व्यासेन ग्रथितां पुराणमुनिना मध्येमहाभारतम् ॥ अद्वैतामृतवर्षिणीं भगवतीमष्टादशाध्यायिनीमंबत्वामनुसंदधामि भगवद्गीते भवद्वेषिणीम् ॥ ७ ॥ हे राधे वृषभानुगोपतनये गंधर्वेके राधिके हे कृष्णाननपंकजभ्रमरिके कृष्णप्रिये माधवि ॥ हे वृंदावननागरीगुणगृहे दामोदरप्रेयसि ॥ हे हे श्रीललितादिके प्रियसखे प्राणांऽतिके पाहि माम् ॥ ८ ॥ विष्णुः पाद अवंतिकागुणवती मध्येच कांचीपुरी ॥ नाभौ द्वारवती तथा च हृदये मायापुरी पुण्यदा॥ग्रीवामूलमुदाहरंति मथुरां नासाग्रवाराणसी॥ मेतद्ब्रेदविदो वदंति मुनयोऽयोध्यापुरीं मस्तके ॥ ९ ॥

दोहा।

वैनतेय सुनि शंभु तब, आये जहँ रघुवीर ॥
विनय करत गद्गद गिरा, पूरित पुलक शरीर ॥ १ ॥

छंद तोमर।

जय राम रमारमनं शमनं । भव ताप भयाकुल ,पाहिजनं ॥
अवधेशसुरेशरमेश विभो ॥ शरणागत माँगत पाहि, प्रभो ॥

दशशीश विनाशन वीस भुजा । कृत दूरि महा महि भूरि रुजा ॥ रजनीचर वृंद पतंगरहे । शरपावक तेज प्रचंडदहे ॥ महिमंडल मंडन चारु तरं ॥ धृतसायक चाप निषंगवरं॥मद मोह महा ममता रजनी । तमपुंज दिवाकर तेज अनी ॥ मनुजात किरात निपातकिये । मृगलोक कुभोग सरे न हिये ॥ हितनाथ अनाथनि पाहि हरे । विषया वश पांवर भूलिपरे ॥ बहु रोग वियोगन्ह लोग हये । भव दंभिनिरादरके फल ये ॥ भवसिंधु अगाध परे नरते । पदपंकज प्रेम न जे करते ॥ अति दीन मलीन दुखी नितही । जिन्हके पदपंकज प्रीतिनही ॥ अवलंब भवंत कथा जिन्हके । प्रियसंत अनंत सदा तिन्हके॥ नहि राग न लोभ न मान मुदा । तिन्हके सम वैभव वाविपदा ॥ यहितै तव सेवक होत मुदा । मुनि त्यागत योग भरोस सदा ॥ करिप्रेम निरंतर नेम लिये । पदपंकज सेवत शुद्ध हिये ॥ सनमानि निरादर आदरही । सब संत सुखी विचरंत मही ॥ मुनिमानस पंकजभृंग भजे । रघुवीर महारणधीर अजे ॥ तव नाम जपामि नमामि हरी । भव रोग महा मद मान अरी ॥ गुणशील कृपा परमायतनं । प्रणमामि निरंतर श्रीरमनं ॥ रघुनंद निकंदनद्वंद्वघनं । महिपाल विलोकिय दीन जनम् ॥ १ ॥

दोहा ।

बार बार वर मॉगऊं, हर्षि देहु श्रीरंग ॥
पद सरोज अनपायनी, भक्ति सदा सतसंग ॥ २ ॥

वर्णि उमापति राम गुण, हर्षि गये कैलास ॥
तब प्रभु कपिन्ह दिवाएउ, सबविधिसुखप्रद वास॥
गौतमनारी शापवश, उपलदेह धरि धीर ॥
चरणकमल रज चाहती, कृपा करहु रघुवीर ॥ ४ ॥

परसत पद पावन शोकनशावन प्रगट भई तपपुंज सही ॥ देखत रघुनायक जनसुखदायक सन्मुखदोउ कर जोरि रही ॥ अतिप्रेमअधीरा पुलकि शरीरा मुख नहिं आवत वचन कही ॥ अतिशय बड़भागी चरणन लागी युगलनयन जलधार वही ॥ धीरज मन कीन्हा प्रभुपद चीन्हा रघुपति कृपा भक्ति पाई ॥ अति निर्मलबानी अस्तुति ठानी ज्ञानगम्य जय रघुराई ॥ मै नारि अपावन प्रभु जगपावन रावणरिपु जन सुखदाई ॥ राजीवविलोचन भवभयमोचन पाहि पाहि शरणहि आई ॥ मुनि शाप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मै माना ॥ देखेउँ भरि लोचन हरि भवमोचन जेहि महिमा शंकर जाना ॥ विनती प्रभु तोरी मै मतिभोरी नाथ न वर माँगौ आना ॥ पदपद्मपरागा रस अनुरागा मम मन मधुप करहिं पाना ॥ जे पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई शिवशीश धरी ॥ सोई पदपंकज पूजित शिव अज मम शिर धरेहु कृपालु हरी ॥ यहि भाँति सिधारी गौतमनारी वार वार हरिचरण परी ॥ जो मन अतिभावा सो वर पावा गइ पतिलोक अनंदभरी ॥ २ ॥

दोहा–अस प्रभु दीननबंधु हरि, कारण रहित दयाल ॥
तुलसिदास शठ ताहि भजु, छाँडि कपट जंजाल ॥

रामगीता.

राग कान्हरा ।

सोहतमगमुनिसँगदोउभाई ॥ तरुनतमाल चारुचंपकछवि कविसुभायकहिजाई ॥ १ ॥ भूपणवसनअनुहरत अंगनीउमगति सुंदरताई ॥ वदनमनोजसरोजलोचननि रही है लोभाइ लोभाई ॥ २ ॥ अंसनि धनुशरकरकमलनिकटिकसेहै निपंग बनाई ॥ सकलभुवनशोभा सरवसलघु लागत निरखिनिकाई ॥ ॥ ३ ॥ महिमृदुपथघन छाँहसुमनसुरवरपि पवनसुखदाई ॥ जलथलरुह फलफूलसलिलसवकरतप्रेमपहुनाई ॥ ४ ॥ सकुचसभीतविनीतसाधुगुरुबोलनिचलनिसुहाई ॥ खगमृगविचित्रविलोकतविचविचलसतललितलरिकाई ॥ ५ ॥ विद्यादईजानि विद्यानिधिविद्यहुलहीवड़ाई ॥ ख्यालहिं दली ताडकादेखीऋषि देतअशीशअघाई ॥ ६ ॥ बूझत प्रभुसुरसरिप्रसंगकहिनिजकुलकथासुनाई ॥ गाधिसुवनसनेहसुखसंपतिउरआश्रमनसमाई ॥७॥ वनवासी वटु यती योगिजनसाधुसिद्धसमुदाई ॥ पूजत पेखिप्रीतिपुलकिततनुनयनलाभलुटिपाई ॥ ८ ॥ मखराख्योखलदलदलिभुजवलवाजतिविवुधवधाई ॥ नितपथचरितसहिततुलसीचित वसतलपणरघुराई ॥ ९ ॥ १ ॥

मंजुलमंगलमयनृपढोटा॥मुनिमुनितियमुनिशिशुविलोकिकरैमधुरमनोहरजोटा ॥ १ ॥ नामरूपअनुरूपवेपवयरामलपण लाललोने ॥ इन्हतेलहीहैमानोघनदामिनिद्युतिमनसिजमरकत सोने ॥ २ ॥ चरणसरोजपीतपटकटितटतूण तीरधनुधारी ॥ केहरिकंधकामकरिकरिवरविपुल वाहुवलभारी ॥ ३ ॥ दूपण

रहितसमयसमभूषणपाइसुअंगनिसोहैं ॥ वनराजीवनयनपूरन विधुवदनमदनमनमोहै ॥ ४ ॥ शिरानिसिखंडसुमनदलमंडन बालस्वभावबनाये ॥ केलिअंकतनु रेनुपंकजनुप्रगटतचरित चेराये ॥ ५ ॥ मखराखिवेलागिदशरथसो माँगि आश्रमहि आने ॥ प्रेमपूजिपाहुनेप्राणप्रियगाधिसुअनसनमाने ॥ ६ ॥ साधनफलसाधकसिद्धनिकेलोचनफलसवहीके ॥ सकलसुकृत फलमातुपिताकेजीवनधनतुलसीके ॥ ७ ॥ २ ॥

राग सुहाव ।

रामपदपद्मपरागपरी ॥ ऋषितियतुरतत्यागिपाहनतनुछबिमयदेहधरी ॥१॥ प्रबलपापपतिशापदुसहदवदारुणजरनिजरी॥ कृपासुधासिंचिविबुधवेलिज्योंफिरिसुखफरनिफरी ॥ २ ॥ निगमअगममूरतिमहेशमतियुवतिवरायवरी ॥ सोइमूरतिभइ जानिनयनपथयकटकतेनटरी ॥ ३ ॥ वर्णतहृदयस्वरूपशील गुणप्रेमप्रमोद भरी ॥ तुलसिदासकहेऐसे केहिआरतकीआरति प्रभुनहरी ॥ ४ ॥ ३ ॥

परतपदपंकजरजऋपिरवनी ॥ भईहैप्रगट अतिदिव्यदेहधरि मानोत्रिभुवनछविछवनी ॥१॥देखिबडोआचरजपुलकिततनु कहतिमुदितनतिमुनिभवनी॥जोचलिहैंरघुनाथपयादेहिशिलानरहिहैं कहुं अवनी ॥ २ ॥परसिजोपायपुनीतसुरसरी सोहे तीनिपथग वनी॥तुलसिदासतेहिचरणरेणुकीमहिमाकहैमतिकवनी॥३॥४॥

भूरिभाग्यभाजनुभई ॥ रूपराशिअवलोकि बंधुदोउप्रेम सुरंगरई ॥ १ ॥ कहाकहैकेहिभाँतिसराहैनाहिंकरतृतिनई विनुकारणकरुणाकररघुवरकेहिकेहिगतिनदई ॥ २ ॥ ५

विनयराखिउरमूरतिमंगलमोदमई ॥ तुलसीह्वैविशोकपतिलोक हिप्रभुगुणगनतगई ॥ ३ ॥ ५ ॥

राग कान्हरा ।

कौशिककेमखकेरखवारे ॥ नामरामअरुलपण ललित- अतिदशरथराजदुलारे ॥ १ ॥ मेचक पीत कमल कोमल- कलकाकपच्छधरवारे ॥ शोभा सकलसकेलिमदनविधिसुकर- सरोजसँवारे ॥ २ ॥ सहससमूहसुबाहुसरिसखलसमरशूरभट- भारे ॥ केलितृनधनुबानपानिरनिदरिनिशाचरमारे ॥ ३ ॥ ऋषितियतारिस्वयंवरपेखनजनकनगरपगुधारे ॥ मगनरनारि- निहारतसादरकहिबडभाग्यहमारे ॥ ४ ॥ तुलसीसुनतएकएक- निसों यो चलनिविलोकनिहारे ॥ मूकनिवचनलाहु मानो अंधनिलहेहैविलोचनतारे ॥ ५ ॥ ६ ॥

छप्पय-स्तुति ।

जयताडकासुबाहुमथनमारीचमानहर । मुनिमखरक्षणदक्ष- शिलातारणकरुणाकर ॥ नृपगणबलमदसहितशंभुकोदंडवि- हंडन । जयकुठारधरदर्पदलनदिनकरकुलमंडन ॥ जयजनक नगरआनंदप्रद सुखसागर सुषमाभवन । कह तुलसिदाससुर- मुकुटमणि जय जय जय जानकिरमन ॥ १ ॥ जयजयंतजय करअनंतसज्जनजनरंजन । जयविराधवधविदुषविबुधमुनिगण- भयभंजन ॥ जयनिशिचरीविरूपकरणरघुवंशविभूषण ॥ सुभट चतुर्दशसहसदलनत्रिशिराखरदूषण ॥ जयदंडकवनपावन- करनतुलसिदाससंशयशमन ॥ जगविदितजगतमणिजयतिजय जयजयजयजानकिरमन ॥ २ ॥ जयमायामृगमथन गीध

शबरीउद्धारण । जयकबन्धसूदनविशालतरुतालविदारण ॥ दवनवालिबलशालिथपनसुग्रीवसंतहित । कपिकरालभटभालुकटकपालनकृपालुचित ॥ जयसियवियोगदुखहेतुकृतसेतुबंधवारिधिदमन । दशशीशविभीषणउभयप्रदजयजयजयजानकिरमन ॥ ३ ॥

फुटकर-भजन.

देखो लली छबि लषणललाकी ॥ गोरेगात तिलक केसरयुत गोल कपोलन अलख झलाकी ॥ देखो० ॥ तिरछीतकनि हँसनि मुख मुरकनि चलत गरूर गयन्द कलाकी ॥ देखो० ॥ श्रीरघुराज निरखि छबि मोहत ऐसी नारि कौनहै मिथिलाकी ॥ देखो लली छबि लषण ललाकी ॥ १ ॥ १ ॥

हनूमान गढीके राजाहो संतनपैरा ॥ टेक ॥ चढै बतासा मालपुआ औ गिरी बदाम छोहारा । तोहरो प्रताप तीनिउँ लोकमे बिजारत तुहै पूजित जगसंसारा । होसंतनपैरा ॥ १॥ होतभागवत राम राम जहँ संतन वेद उचारा । तुम्हरी महिमा कहँ लगि वरणो तेरो कमल चरण पगुढारा । होसंतनपैरा ॥ २ ॥ दशशिररावण राममरदनको सोनेके लंका जारा । राम सियाकर शूल मिटावत कछु हमरो करो उपकारा । होसंतनपैरा ॥ ३ ॥ जन्मस्थान अयोध्यानगरी तरे बहै सरयू धारा । तुलसिदास प्रभु आश चरणकी राजा रघुपति रावणमारा । होसंतन पैरा ॥ ४ ॥

छंद ।

जयजय सुरनायक जन सुखदायक प्रणत पाल भगवंता ॥

गोद्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रियकंता ॥ पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मर्म न जानै कोई ॥ जो सहज कृपाला दीनदयाला करो अनुग्रह सोई ॥ जय जय अविनाशी सब घट वासी व्यापक परम अनन्दा ॥ अविगति गोतीता चरित पुनीता माया रहित मुकुन्दा ॥ जेहिंलागि विरागी अति अनुरागी विगत मोह मुनिवृन्दा ॥ निशि वासर ध्यावें हरि गुणगावें जयति सच्चिदानन्दा ॥ जेहि सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संगसहाय न दूजा ॥ सो करहु अघारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा ॥ जो भवभय भंजन जनमनरंजन गंजन विपति बरूथा ॥ मन वच क्रम बानी छोडि सयानी शरण सकल सुरयूथा ॥ शारद श्रुति शेपा ऋषय अशेपा जा कहँ कोइ न जाना ॥ जेहि दीनपियारे वेद पुकारे द्रवो सो श्री भगवाना ॥ भववारिधि मन्दर सब विधि सुन्दर गुण मन्दिर सुख पुंजा ॥ मुनि सिद्ध सकल सुर परमभयातुर नाम नाथ पदकंजा ॥ १ ॥

छंद ।

स्वर ताल भेद अपार जगमे जानते गुणि लोगहै । करि ध्यान नासा देखु जाते होत योग अपारहै । करि तार पांचो तत्त्वके जांबुरत ना अनुरागहै । फिरि देखु गतिके भेद तामे उठत जहाँ ओकारहै । मणि पराशि मति जड लोहकी गति भई कंचन सारहै । राजबहादुर त्रैलोकमे हरि नामराग उदारहै ॥ १ ॥

दोहा ।

गुण औगुण कर मन लिखे, जलसानी ज्यो कीच ॥
रामनाम रसखानिहै, सदा भजहु मन नीच ॥ १ ॥

सुनहु भरत दे कान सुयश हनुमान बलीको ॥ गिरि सुमेरु पर्वतके ऊपर शयन करन लागे दोउभाई॥चारो ओर वीर सब बैठे दिय लँगूर फहराई॥चौकी कठिन कपीशकी जहँ पवनौकी गमनाहीं । कौन वीर कौने मारगसे हरत नृपति छिन माहि ॥ सुयश० ॥ १ ॥ सारी रैन गई बीति लागिलोहिया पैठारी ॥ शब्द किलकिला जोर बाजु बीरनकी तारी ॥ चौंकि उठे पवनसुतनन्दन आसन देख्यो सून ॥ लजित भये मुखबात न आवन ललित भये दुखदून ॥ सुयश० ॥ २ ॥ कोपे पवन कुमार आजु नभ नखसे फारौ ॥ शशि मेरा भंडार इक्षसे उक्ष पवारौ ॥ शपथ करौ रघुनाथकी कि जनु अंजनि सुत नाहीं ॥ तीनहु लोक विलोकौ प्रलयकरौ छन माहिं । सु० ॥ ३ ॥ डोलत मेरु सुमेरु श्रवण सुनि शेष संकाने ॥ सहि जात नही महिभार आजु बलवान रिसाने ॥ कंपित भये सब देवता मारग दीन्ह बताय ॥ पटकि लंगूर वीर अति गर्जा पैठि पता लहिं जाय ॥ सु० ॥ ४ ॥ देखत नग्र अनूप भूप घर बजत बधाई ॥ जमकातरि यमराज नृपति द्वारे घहराई ॥ माया देवी टारिके प्रभु बैठे वदन छपाय ॥ मधुमेवा पकवान मिठाई आप प्रकट होय खाय ॥ सु० ॥ ५ ॥ बलि देवनके भये कुंवर दोनो नहवाये॥ चोवाचन्दन अग्र कुमकुमा पीताम्बर पहिराये॥ खैचि खड्ग हाथमे लीन्हों सुमिरो अपनो नाथ ॥ जो यहि अवसर आय उबारै नाहि छीनौंहो माथ॥ सु०॥६॥ पहिले सुमिरे गुरू आपने पिताचरण चितलाये ॥ कौशल्याके धर्म मना

वत राखत हृदय लगाये ॥ फिर सुमिरे हठ नामके जो गाढे आवे काम ॥ तारा तरन सदा संतनके मारुत सुतकर नाम ॥ सु० ॥ ७ ॥ कोपे पवन कुमार मेघ धुनि गर्ज सुनाये ॥ दुर्जन दलिमलि दिये गर्भिनी गर्भ नशाये ॥ लाखो असुर सँहारि क्रोधसे दियो बहाई ॥ रुधिरनसे सरिता बहि निकली मांस माटि होजाई ॥ सु० ॥ ८ ॥ महिरावण बध कियो राम कहँ कटक ले आयो ॥ भयो कटकमे सोर सुरन दुंदुभी बजायो ॥ सेवक सीतारामके तुलसी परम अजीत ॥ जो यह पद हिरदयसे गावे परम हमारो मीत ॥ सु० ॥ ९ ॥

चरण कमल रजदेहु साँवरे मेरी अधम कमाई है ॥ सो रज जासे शिला तरी पुनि केवट धोके पाई है ॥ १ ॥ तुम उदार तारण त्रिभुवनके विरद सदा चलि आई है ॥ वेद पुराण सुसाखि देतहे जगत गुणी गुण गाई है ॥ २ ॥ माँगनसे मोहि ढीठ न समझो ना प्रभु मोरी ढिठाई है ॥ याकुलकी यह रीति लालची लेत दान बरि आई है ॥ ३ ॥ अधम दीन प्रिय सदा तिहारे अधमसे नाथ बडाई है ॥ देसु लालजी महाराज बहादुर तेरहि हाथ भलाई है ॥ ४ ॥ चरण कमल रज देहु साँवरे मेरी अधम कमाई है ॥

इति श्रीभजनामृत (हरिभक्तिप्रकाश) समाप्त ।

पुस्तक मिलनेकाठिकाना—खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयके मालिक—बंबई.